ज़माने का सच

कविवर–सिद्धांतज्ञ–ओजस्वी वक्ता

आचार्य विनम्रसागर

कृति

जमाने का सच

शुभाशीष – जैनाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

कृतिकार - प्रखर वक्ता आचार्य विनम्रसागर

प्रथमावृत्ति – 2200 प्रति केकड़ी 2004	
द्वितीयावृत्ति – 2200 प्रति अजमेर 2007	
तृतीयावृत्ति –	

प्रकाशक

सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ, भिण्ड

देवेन्द्र जैन, बड़ी बजरिया, बीना (☎07580-223344)

मुद्रक

कम्प्यूटर डिजाइन एवं मुद्रक :- मुकेश जैन 94145-55103

आर्यन् एजेंसीज्

इन्दिरा बाजार, अजमेरी गेट, जयपुर

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

पुन:प्रकाशन हेतु ज्ञानदान राशि 30/-रु. मात्र

ज्योति तो
गुरु की है
मेरा तो है सिर्फ
दिया
जो कुछ भी
लिखा है हमने
वो सब गुरु ने ही दिया
गुरुदेव की अमानत
गुरुदेव को अर्पित
अर्पित से पूर्व
हम और हमारा
सब कुछ
समर्पित

आचार्य विनम्रसागर

गुरुदेव को समर्पित

कई शास्त्रों को पढ़ने की अपेक्षा संतों के प्रवचन बहुत महत्वशाली हैं क्योंकि कई शास्त्रों को पढ़कर भी हम उसके सार तक नहीं पहुँच सकते लेकिन प्रवचन उपसंहार का भी सार है शास्त्रों को पढ़कर उतना समझ में नहीं आता जितना प्रवचन सुनकर समझ में आता है शास्त्रों में बातें हैं धर्म की, प्रवचन में बातें ही नहीं अनुभव भी है धर्म का। वक्ता बनने के लिए सिद्धान्त-न्याय और नय को समझकर अपनी बात को सरल ढंग से कहने की कुशलता होना जरूरी है वक्ता वही बन पाता है जो कई अनुभवों की नहरों को पार कर चुका है। संत अपनी बातों में ही बहुत ही गहराइयों की बातें बता देते हैं संतों के प्रवचन समाज के लिए एक अमूल्य निधि हैं। साधुओं का सोच जीवन के बदलाव से पैदा होता है इसलिये उनके विचारों से कई लोगों का जीवन परिवर्तित हो जाता है। एक संत ही है जो एक कहानी में कई मोड़ देकर हर व्यक्ति को अपने जीवन के प्रति सोचने को मजबूर कर देता है।

मैं जब कलम को हाथ में उठाता हूँ तो मुझे खुद ही नहीं पता कि मेरी लेखनी को कौन चलाता है? कौन प्रेरित करता है? मेरा मस्तिष्क कौन सक्रिय कर देता है? मैं बहुत सोचता हूँ तब एक ही बात मेरी समझ में आती है ये गुरु का आशीर्वाद है उन्हीं की कृपा है मुझे तो ये लगता है कि हम तो निर्जीव शरीर की तरह हैं हमारे अन्दर प्राण फूँकने वाले हैं तो वह हमारे गुरुदेव ही हैं गुरु के आशीष से ही हमें कार्य में सफलता प्राप्त हो जाती है। जिसने अपने जीवन में कोई गुरु नहीं बनाया उसका जीवन तो कटी पंतग और बिना पते की बैरिंग पाती की तरह है वो कभी भी एक कदम नहीं चल सकता और जीवन का उत्थान नहीं कर सकता है जीवन में गुरु होना जरूरी है फिर चाहे वह मिट्टी का गुरु द्रोणाचार्य ही क्यों न हो।

हमने जो कुछ लिखा है वह सब गुरुवर का ही है उन्हीं का आशीष है अतः यह लघु चिंतन गुरुवर के चरणों में ही समर्पित है।

हमारा ज्ञान और वृद्धि को प्राप्त हो, हमें बोधि उपलब्ध हो ऐसी भावना को साकार करने के लिए गुरुवर के पावन चरणों में त्रयभक्तियुत् विनम्र नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!

आचार्य विनम्रसागर

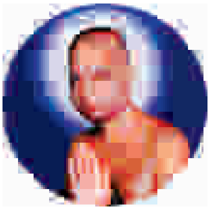

आचार्य
विरागसागर जी महाराज

नाम : अरविन्द कुमार जैन
पिता का नाम : श्री कपूर चन्द्र जैन
माता का नाम : श्रीमति श्यामा देवी जैन
जन्म तिथि : 12/04/1963
जन्म स्थान : पथरिया, दमोह
मुनिदीक्षा : 05/12/1983
आचार्य पद : 08/11/1992
प्रदत्त दीक्षाएँ :

लेखन कई पुस्तकों के लेखक व रचयिता, सर्वचर्चित पुस्तक शुद्धोपयोग व आगम चक्खू साहू एवं सम्यग्दर्शन

भारत देश में बुंदेलखण्ड की पावन वसुंधरा पर जन्मे मात्र 20 वर्ष की उम्र में मुनि दीक्षा प्राप्त करके दिगम्बर परम्परा को चिरजीवित रखने वाले, केवल 52 वर्ष की उम्र में लगभग 215 शिष्यों को दीक्षा से विभूषित करने वाले अपने 30 प्रभावक लघु संघों के अधिनायक, लगभग 100 साधुओं को सल्लेखनापूर्वक समाधि कराने वाले, ऐसे समाधि सम्राट्- संस्कृत व प्राकृत टीकाओं के कृतिकार युग प्रतिक्रमण के नायक, अनुशासन और वात्सल्य के धनी, लगभग 80 शिष्य मुनि दीक्षा लेने के लिये साधनारत तथा जिनने कई शिष्यों को श्री धवला जी, जय धवला जी व महा धवला जी का अध्यापन कराया।

आचार्य
विनम्रसागर

नाम : रतनस्वरूप जैन "नवरत्न"
पिता का नाम : पं.श्री मेरचन्द जी जैन
(समाधिस्थ मुनि 108 श्री विश्वकीर्तिसागर जी)
माता का नाम : श्रीमति चमेली देवी जैन
जन्म तिथि : 01/10/1963 भिण्ड
शिक्षा : एम. कॉम
ऐलक दीक्षा : 09/08/1992, द्रोणगिरि
मुनि दीक्षा : 08/06/2003, ललितपुर
रुचि : काव्य रचना, वैज्ञानिक, सैद्धान्तिक, मनोवैज्ञानिक खोज, चिंतन, लेखन व गहन तर्कशीलता
(हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत भाषाओं का ज्ञान)

एम.कॉम तक उच्च शिक्षा प्राप्तकर आठ वर्ष सर्विस करके अध्यापन कराया । पश्चात् धर्म की गहनता को समझ सन्यास प्राप्त किया। अद्भुत शब्द विज्ञान के धनी, तर्कशक्ति में अव्वल, उर्दू - संस्कृत - हिंदी - अँग्रेजी - प्राकृत भाषाओं का ज्ञान, सरलता-सहजता-सौम्यता है जिनका लक्षण। विवादित पंथों से दूर, केवल निर्ग्रन्थ, कई पुस्तकों के लेखक व रचयिता, पूजन व भक्तामर शिविर प्रणेता

नींव के पत्थर

- जन्म माँ दे सकती है या महात्मा
- क्रोध है अकालमौत को निमंत्राण, तो क्षमा है नवजीवन
- शोलों को शबनम में बदल देने की कुव्वत है – क्षमा
- क्रोध कर्माधीन है, क्षमा विचाराधीन
- मान है अपने अस्तित्व की चिता बनाना
- ज्ञान पाने के लिए विनम्रता जरूरी
- तिरने की कला पैदा करना ही है संयम
- तप देह दण्डन नहीं आत्म शोधन का उपाय है
- जीवन की अलमस्त दशा है आकिंचन्य
- महाशक्तियों की ओर प्रयाण है – ब्रह्मचर्य
- नयेपन से करो नई साल की शुरुआत
- श्रद्धा की नींव पर चारित्रा का महल निर्मित होता है
- भिखारी भीख नहीं माँगता, सीख भी बाँटता है
- परमात्मा परीक्षक भी है, निरीक्षक भी
- तन मरघट की अमानत है चेतन मंज़िल की
- तीसरी आँख खोलने पर ही सत्य नजर आएगा
- हमारा ध्येय पुरुषार्थ पर हो पदार्थ पर नहीं
- ज़माना बदलना है तो अपनी जीवन शैली बदलो
- रोगों की जड़ राग है, निरोग की विराग
- ज़िन्दगी प्रश्न नहीं, उत्तरों का उत्तर है
- चिराग जलाकर जिओ, बुझाकर नहीं

नींव के पत्थर

- ज्ञान के दीप जलाना है दीपावली मनाना
- सरलता धर्म है बचपना नहीं
- भ्रम हटे तो ब्रह्मा मिले
- परमात्मा खुश तो सब खुश
- ऊर्जा स्वयं से प्रेम होने पर उपजेगी
- जीवन उसका बदतर है जो आज आलसी है
- धर्म जीवन का सहारा है, तन का नहीं
- महकने के लिए मज़हब का द्वार जरूरी
- रूप नहीं रूह सँवारो
- अमृत के कुंभ में जहर का झरना नहीं होना चाहिए
- ज़िन्दगी में फूल खिलाओ काँटे नहीं
- सद्भाव से ही जीवन बदलेगा
- राम को विचारें ही नहीं, जीवन में उतारें
- पीड़ा देने के भाव से पेड़ा नहीं मिलते
- हृदय को फूल बनाओ शूल नहीं
- सम्मान देने से सम्मान मिलता है अहंकार से नहीं
- जीवन को तमाशा नहीं तीर्थ बनाओ
- तन की दवा धन है, चेतन की धर्म
- तिरने के लिए फेरे नहीं, परिक्रमा लगाओ
- सत्य कड़वा नहीं होता, कड़वा लगता है
- परमात्मा से पदार्थ नहीं परमार्थ माँगो

नींव के पत्थर

- ✳ हमारी ललक में मंज़िल हो और झलक में महात्मा
- ✳ हम वो करें जो सबको पसन्द हो
- ✳ हंस ही हँस सकते हैं कंस नहीं
- ✳ सत्य का बीज साधनों में नहीं, साधना में फलेगा
- ✳ चारित्रा चिता को जला सकता है, चिता चारित्रा को नहीं
- ✳ संस्कृति की रक्षा से ही प्रकृति चिरजीवित रहेगी
- ✳ मज़हबी महल में अपना खज़ाना मिलेगा
- ✳ जीवन का निर्माण नहीं तो निर्वाण नहीं
- ✳ हिम्मते मर्द तो मदद दे खुदा
- ✳ असंतोष है मौत का संदेश
- ✳ परमात्मा की परीक्षा नहीं प्रतीक्षा करो
- ✳ ज्ञान को लोहा नहीं सोना बनाओ
- ✳ तन्मयता, भक्ति का अंतिम मुकाम है
- ✳ इन्सान की खोपड़ी वस्तु से नही ज्ञान से भरेगी
- ✳ देने वाला ही पाने का हकदार है
- ✳ खदान में हीरे होते हैं, खान में नहीं
- ✳ धर्म कषायों को नष्ट करने को है, पुष्ट करने को नहीं
- ✳ बत्ती मिली तो अगरबत्ती जलाना सार्थक है
- ✳ जीवन को बंजर नहीं उपजाऊ बनाओ
- ✳ ज़िन्दगी जीने के लिए है, मरने के लिए नहीं
- ✳ मज़हबीं दास्तां पाक दिल में नसीब

नींव के पत्थर

- देने में आनन्द है लेने में नहीं
- ज़िन्दगी मज़हब के लिये है, मज़ाक के लिए नहीं
- सार जाने बिना परवरदिगार नहीं मिल सकता
- सुसंस्कार ही भविष्य में सज्जनता लाता है
- बे–तर्ज में जिये तो कर्ज में मरोगे
- जाले में नहीं उजाले में रहो
- धर्म के चार्जर से ही पूर्ण ज्ञान होगा
- विनम्रता से ज्ञान की कोशिकाएँ ऊर्जित होती हैं
- मौत को मौत के घाट उतारो
- कर्म परमात्मा से पूछकर करो
- तर्ज़ समझकर फर्ज़ अदा करो तभी मर्ज़ सुधरेगा
- अपना पता हो, वही पते की बात करता है
- चिराग रोशनी के लिए है अँधेरे के लिए नहीं
- आँख से नहीं दिखा तो दिल में भी नहीं मिलेगा
- दु :ख के नज़ारों में से ही सुख उद्‌घटित होगा
- आजाद होने के लिये दिलशाद होना जरूरी
- प्रभु की भक्ति विरलों को ही नसीब होती है
- अपने जुर्म की आलोचना से सजा कम
- परमाणु के गुलाम नहीं मालिक बनना सीखो

भजन

कर तु प्रभु का ध्यान बाबा, कर तु प्रभु का ध्यान,
निज घट में भगवान बाबा, निज घट में भगवान ।।

1. काँटों में भी जीवन तेरा फूलों सा खिल जायेगा
खोज रहा है जिसको तू वह पल भर में मिल जायेगा
खुद को तू पहिचान बाबा खुद को तू पहिचान

2. कभी किसी का दिल दुःख जाये ऐसे बोल कभी मत बोल
घावों पर मलहम बन जायें ऐसे बोल बड़े अनमोल
कहलाता यह ज्ञान बाबा कहलाता यह ज्ञान - 2

3. धन वैभव यह महल खज़ाना कुछ भी साथ न जायेगा
सुबह खिला जो फूल बाग में साँझ समय मुरझाएगा
कर ले धर्मध्यान बाबा करले धर्मध्यान - 2

4. मात पिता गुरुजन कर आदर धर्ममार्ग पर चलो सदा
गुरुजन की नित सेवा करना श्रावक का कर्तव्य कहा
पाओगे सम्मान बाबा पाओगे सम्मान

5. जिसको अपना कहा आज तक हुआ कभी न वह अपना
जिसकी खातिर जिया आज तक वह निकला सुंदर सपना
क्यों तू करे गुमान बाबा क्यों तू करे गुमान

6. राग - द्वेष भावों के कारण भवसागर में डूब रहा
गँवा रहा भोगों में जीवन फिर भी मन नहिं ऊब रहा
क्यों बनता नादान बाबा क्यों बनता नादान

7. हिंसा-झूँठ-कुशील-परिग्रह- चोरी ये मत पाप करो
पाप विनाशक धर्म प्रकाशक णमोकार का जाप करो
हो सम्यक् श्रद्धान बाबा हो सम्यक् श्रद्धान - 2

भजन

जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाये रे – ऽऽऽ
होनी अनहोनी हो – हो–2 , कब क्या घट जाये रे – ऽऽ

जीवन है पानी ....

जितना भी कर जाओगे, उतना ही तुम पाओगे,
किये बिना कुछ नहीं मिलता–2
अपना–अपना करना है–करनी का फल भरना है,
नीम के तरु पे–हो हो – नहीं आम दिखायें रे–ऽऽ ।।

जीवन है पानी ....

कर्म किया नहिं है अच्छा, धर्म न मिल पाया सच्चा,
कैसे जीवन गुलशन हो–2
वीराने इस जंगल में–रहें न इक पल मंगल में,
गम का यहाँ पर हो–हो हम बोझ उठायें रे–ऽऽ

जीवन है पानी ....

पल की हमको खबर नहीं, पीते रहे जहर यहीं,
कैसे हम जी पायेंगे–2
ललक न जागी जीवन की, खिली न किस्मत चेतन की,
केसे यहाँ पर – हो – हो, हम ज्ञान बढाएँ रे–ऽऽ

जीवन है पानी ....

सोचा तुमने कभी नहीं, धोखा तुमने दिया यहीं,
कैसे ईश्वर पाओगे–2
दगा – सगा नहीं होता है–दगा – दाग नहीं धोता है,
जीवन में आकर हो–हो क्यूँ पाप कमाये रे – ऽऽ

जीवन है पानी ....

चंद दिनों का जीवन है–इसमें देखो सुख कम है,
गम ही गम नजराता है–2
जन्म सभी को है मालूम, मृत्यु किसी को नहीं मालूम,
जाने कब तन से हो – हो, पंछी उड़ जाये रे – ऽऽ ।

जीवन है पानी ....

भजन

कर तू प्रभु का ध्यान बाबा, कर तू प्रभु का ध्यान ।
निज घट में भगवान बाबा, निज घट में भगवान ।।

काँटों में भी जीवन तेरा फूलों सा खिल जायेगा
खोज रहा है जिसको तू वह पल भर में मिल जायेगा
खुद को तू पहिचान बाबा खुद को तू पहिचान

कभी किसी का दिल दुःख जाये ऐसे बोल कभी मत बोल
घावों पर मलहम बन जायें ऐसे बोल बड़े अनमोल
कहलाता यह ज्ञान बाबा कहलाता यह ज्ञान - 2

धन वैभव यह महल खज़ाना कुछ भी साथ न जायेगा
सुबह खिला जो फूल बाग में साँझ समय मुरझाएगा
कर ले धर्मध्यान बाबा करले धर्मध्यान - 2

मात पिता गुरुजन कर आदर धर्ममार्ग पर चलो सदा
गुरुजन की नित सेवा करना श्रावक का कर्तव्य कहा
पाओगे सम्मान बाबा पाओगे सम्मान - 2

जिसको अपना कहा आज तक हुआ कभी न वह अपना
जिसकी खातिर जिया आज तक वह निकला सुंदर सपना
क्यों तू करे गुमान बाबा क्यों तू करे गुमान - 2

राग - द्वेष भावों के कारण भवसागर में डूब रहा
गँवा रहा भोगों में जीवन फिर भी मन नहिं ऊब रहा
क्यों बनता नादान बाबा क्यों बनता नादान - 2

हिंसा-झूँठ-कुशील-परिग्रह- चोरी ये मत पाप करो
पाप विनाशक धर्म प्रकाशक णमोकार का जाप करो
हो सम्यक् श्रद्धान बाबा हो सम्यक् श्रद्धान - 2

जन्म माँ दे सकती है या महात्मा

आलम में आने के साथ जाना, उगने के साथ डूबना, उठने के साथ गिरना, जन्मने के साथ मरना, दिन के साथ रात होना नियति है। संसार में जन्म मिलना सरल है लेकिन जीवन मिलना सरल नहीं है। उम्र गुजारना जीवन नहीं, भोगों में गुजरना जीवन नहीं, योग में रमकर उपयोग में रमण करना जीवन है। जब हम जीवन को पा लेते हैं तो जन्म को पाना भी सार्थक हो जाता है। ये सही है कि मानव का शरीर पाना अन्य शरीरों की अपेक्षा दुर्लभ है लेकिन धर्म का स्वरूप जानकर अपने अस्तित्व का अनुभव करके जीवन को उपलब्ध होना और भी दुर्लभ है। साधु और माँ में अंतर तो है, माँ और महात्मा में अन्तर तो है लेकिन दोनों माँ तुल्य हैं माँ वह है, जो नौ माह गर्भ में रखकर स्वयं पीड़ा को सहनकर हमें जन्म देती है महात्मा वह है जो बाहर के अंधकार का पर्दा हटाकर ज्ञानरूपी नेत्र देकर अंतर्दृष्टि को खोलकर सत्य उपलब्ध करा देता है जिससे जीवन का जन्म होता है। माँ जन्म देती है तो संसार निर्मित होता है महात्मा जन्म देता है तो मोक्ष निर्मित होता है। माँ के जन्म देने में अपने मोह की पूर्ति और आकांक्षाएँ हैं साधु जन्म देगा तो कोई भी अपेक्षा नहीं रखेगा। माँ के जन्म से शरीर की उपलब्धि हो सकती है ज्ञान की नहीं और संत के जन्म से ज्ञान की सम्पूर्ण उपलब्धि हो जाती है और शरीर का झंझट ही मिट जाता है। मतलब ज्ञान शरीरी हम हो जाते हैं, शरीर से रहित अशरीरी हो जाते हैं। अतः संसार में जन्म या माँ दे सकती है या महात्मा।

सच्चे धर्म अथवा सर्वमान्य सत्य को जानकर उस पर दृढ़ श्रद्धान करने पर हमें जीवन की उपलब्धि होती है। जीवन से ही हमें जीवत्व की प्राप्ति होती है प्राथमिक अवस्था में बालक के लिए माँ ही सन्त का काम करती है और बालक युवा हो जाता है तो सन्त ही कुशल माँ का काम कर देता है। यदि हम कुछ भी न करें तब भी हमें जन्म की प्राप्ति हो जाएगी लेकिन बिना पुरुषार्थ के हमें जीवन की उपलब्धि हो जायेगी ये पूर्णतः असंभव है। दोनों के जन्म में अंतर बस इतना है कि माँ के जन्म पर बालक की आँखें बन्द होतीं हैं और सन्त के जन्म पर आँखें खुल जाती हैं। माँ के जन्म पर बालक रोता है तो सन्त के जन्म पर बालक हँसता है माँ का बालक के लिए सम्बोधन संसार का ही है महात्मा का सम्बोधन मोक्ष के मार्ग का ही है।

जिसका जीवन के साथ जन्म होता है अर्थात् धर्म के साथ जन्म होता है वह कोई महापुरुष होता है। उसके जन्म पर माँ ही नहीं, महात्मा ही नहीं, सारा आलम ही आनन्दित होता है। ऐसा जीव जन्म के समय रोता नहीं है ऐसे महापुरुष तीर्थंकर का जन्म मृत्यु को अतिक्रान्त करके निर्वाण के लिए होता है तो हमारा भी जन्म जीवन को सार्थक बनाने के लिए हुआ है। हम सभी महात्माओं का समागम करके अपने जीवन को उपलब्ध होकर अपने शरीर की माँ को भी आनन्दित कर सकते हैं अपनी माँ को भी धन्य कर सकते हैं महात्मा से माँ भी धन्य हो सकती है और जन्म भी। अतः महात्मा को पाकर जन्म और जीवन दोनों ही सार्थक करें तभी ये मानव, जीवन की सफलता को प्राप्त कर जीवन उज्ज्वल बना सकता है।

क्रोध है अकालमौत को निमंत्राण, तो क्षमा है नवजीवन

यदि हम सौ व्यक्तियों का अध्ययन करें और उनकी मनोस्थिति को मापा जाये तो यह बहुत आसानी से स्पष्ट हो जायेगा कि 99 व्यक्ति क्रोध के शिकार हैं परंतु वे इस बात का अध्ययन करने में असमर्थ हैं कि क्रोध आता क्यों है? एक सूक्ति में ही इन सभी का उत्तर छिपा हुआ है''अपेक्षा की उपेक्षा से क्रोध जन्मता है''। अपेक्षा दिल से होती है और उपेक्षा दल से होती है तो भीतर दिल दहल उठता है, खून खौल उठता है, धड़कन तीव्र हो जाती है, जो असमय में ही हमारी शक्ति नष्ट करती है। क्रोध आग की लपटें हैं जो आदमी को जिंदा खड़े - खड़े जलाती हैं। क्षमा शीतल जल है जो हर प्राणी को शीतलता प्रदान करती है। क्रोध वह बम है जो अपना पूरा घर उजाड़ सकता है, क्षमा वह निष्क्रिय इंजेक्शन है जो घर को स्वर्ग बना सकता है, क्रोध कर्म है, जिसके करने से नरक, तिर्यंच गति निर्मित होती है, क्षमा धर्म है जो किया नहीं जाता वह तो स्वाभाविक अवस्था में होती है। क्रोध पूर्व जन्मों में दिल में भरे कीचड़ की बदबू है, क्षमा पूर्व जन्मों का पुण्य व अभी का नया पुरुषार्थ है। क्रोधी व्यक्ति को संसार में कोई भी पसंद नहीं करता, क्षमाशील सबकी आँखों का तारा बन जाता है। क्रोध है पूर्व में किये गये पाप के कृत्यों की गुलामियत स्वीकार करना, जबकि क्षमा है अपनी मालकियत और स्वतंत्रता को प्रकट करना। क्रोध के चारों ओर नजर आयेगा द्वेष ही द्वेष, क्षमा में नजर आयेगा प्रेम ही प्रेम, क्रोध जीवन के लिए सल्फास की गोली है, सल्फास की गोली एक जीवन को ही नष्ट करती है, लेकिन क्रोध का जहर कई जिंदगी को राख कर देता है, क्रोध करने पर दिल की धड़कन तीव्र हो जाती है, रक्त चाप तीव्र हो जाता है, जिसमें मस्तिष्क सोचने समझने में असमर्थ हो जाता है, इस कारण से इंसान अकाल मौत का शिकार हो जाता है, लेकिन क्षमा मस्तिष्क की कोशिकाओं का तेज तीव्र करती है, जिससे समझने की क्षमता बढ़ जाती है, क्षमा से वीरता की उद्घोषणा की जा सकती है।

क्षमा ऊर्जा का भराव है, क्रोध है कमजोरी का व्यक्तीकरण। एक वैज्ञानिक ने कहा है कि क्रोध करने पर 42 माँसपेशियों की ऊर्जा बर्बाद होती है। जबकि क्षमा करने पर 17 माँसपेशियों की ऊर्जा खर्च होती है। 25 माँसपेशियों की ऊर्जा एक बार क्रोध करने पर नष्ट हो जाती है। यदि हम कई बार क्रोध करें तो कमजोर होना स्वाभाविक है, क्रोध नाले का ऐसा कीचड़ है, जिसको लगने पर कोई दूसरे लोग उसके पास या उसके साथ रहना पसंद नहीं करते जबकि क्षमा वह चंदन की सुगंध है जिसकी हवा नाक पर लगने

पर धर्म की याद आ जाती है। क्षमा धर्म अपनाने पर व्यक्ति सहनशील होता है। सहनशीलता शक्ति को बढ़ाने वाली होती है। कहा जाये कि क्षमा शक्तिवर्धक च्यवनप्राश और टॉनिक है, तो क्रोध है शक्तिहीन करने वाली भांग और शराब। क्षमा ऊँचाईयों के शिखर को छूने का आयाम है तो क्रोध गर्त में गिरने का कुप्रयास। क्रोध अधार्मिक बनाकर दुर्गति का पात्र बनाता है, जबकि क्षमा धार्मिकता पैदा करके सुगति व मोक्ष का पात्र बनाती है। क्रोध है अपने आपके ऊपर अपने हाथों से कीचड़ उछालना अथवा अपने चेहरे पर कालिमा को पोतना, जबकि क्षमा है अपनी चादर का मैल साफ करना, अनुकूल स्थिति में किसी भी गलती को माफ करना। क्षमा है तो प्रतिकूल स्थिति में किसी को माफ करना उत्तम क्षमा है। क्षमा वीरों का उत्तम आभूषण है, तो क्रोध है कायरों की कायरता का व्यक्तिकरण। क्षमा है अपने गुणों में एक और गुण की वृद्धि जबकि क्रोध है अपने गुणों के खजाने में अपने ही हाथों से आग लगाना। अतः हम सभी को इंसानियत का पहला कदम जो क्षमा पर निर्भर करता है, उस क्षमा को अपने जीवन में आचरण रूप अपनाना चाहिए तथा अपने स्वभाव को समझकर क्रोध तजना चाहिए, तभी इंसानियत का प्रथम बीज हृदय में आरोपित हो सकेगा तथा धर्म को पाकर यह तुच्छ जीवन सफल बन सकेगा।

विज्ञान ने हमें टीसेट, टी.वी. सेट, डिनर सेट,
सोफासेट दिया
लेकिन व्यक्ति का दिमाग अपसेट कर दिया।

Science has made our lives well set, but has made our minds upset.

अभव्य अपना चोला कभी नहीं बदलता।

Atheist never change his out fit

शोलों को शबनम में बदल देने की कुव्वत है – क्षमा

क्षमा धनात्मक विद्युत को शरीर में पैदा करने की कीमियाँ है, जबकि क्रोध है विस्फोटक ऋणात्मक विद्युत को पैदा करना। क्षमा है स्वतंत्रता की उद्घोषणा, क्रोध है परतंत्रता का इजहार। अपनी अस्मिता से वास्तविक प्रेम है, क्षमा तो क्रोध है संसार के प्रति आसक्ति का प्रकटीकरण। अपने अपराध को स्वयं स्वीकार करना है क्षमा, तो दूसरों पर अपना अपराध थोपना है क्रोध। अंतरंग शक्ति का आंशिक प्रदर्शन है क्षमा तो क्रोध है कमजोरी का प्रदर्शन। कर्ज मुक्त होने का तरीका है क्षमा तो कर्जमुक्त के दिन कर्जदार हो जाना है क्रोध। अपने स्वाभिमान की सुरक्षा है क्षमा तो स्वाभिमान को अभिमान में बदलना है क्रोध। हर व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करने की कला है – क्षमा। क्षमा की पावन सोपान मंज़िल तक पहुँचती है जबकि क्रोध की सीढ़ियाँ निगोद तक पहुँचतीं हैं। क्षमा की शर्त है अन्तरंग दृष्टि खुली होना, क्रोध की शर्त है दृष्टि नहीं खिड़की खुली होना। क्षमा है अपने वजूद का कोष दिन प्रतिदिन बढ़ाना जबकि क्रोध है अपने कोष का फिजूल अपव्यय करना। अपने जीवन का मूल्यांकन कर उसकी सम्यक् हिफाजत है क्षमा तो क्रोध है जीवन का सत्यानाश करना। ऊर्जा संचय स्त्रोत है – क्षमा ऊर्जा का अधः पतन है क्रोध। आग की भट्टी में गिरकर भी न झुलसना है क्षमा। कषायों की ज्वाला पर सिंचन करना है क्षमा। आत्मरक्षा का कवच क्षमा है तो क्रोध है अपने ही हथियार से स्वयं का ही घात कर लेना। क्षमा है स्वयं को तथा दूसरों को जीवनदान देना तो क्रोध है दूसरों की हत्या न करते हुए अपनी आत्म हत्या कर लेना । जहर को अमृत बनाने की परम कला है क्षमा। अनंत की यात्रा पर सहर्ष कदम बढ़ाना है क्षमा। एकांत की अनुभूतियों को सबके सामने व्यक्त करना है क्षमा, झूठी अनुभूतियों का व्यक्तीकरण है क्रोध। क्षमा वह चुम्बक है, जो लोहे के कणों को अपनी ओर आकर्षित करती है जो स्वयं जंगीला है दूसरों को तोड़ने का काम करता है हिंसक है क्रोध। क्षमा है दुनियाँ के मदरिसा से अपनी टी.सी.कटाना, तो क्रोध है हर वर्ष एक ही कक्षा में फेल हो जाना। क्षमा वह दौड़ है जहाँ खिताब का मिलना सुनिश्चित है। क्रोध ऐसी दौड़ है जहाँ ठोकरें लगकर थकान का मिलना जरूरी है। समग्रता की ओर प्रयाण व आकाशवत् होने की रासायनिक प्रक्रिया है क्षमा।

क्रोध कर्माधीन है, क्षमा विचाराधीन

हर आदमी जानता है कि क्रोध जीवन के लिए जहर है, क्रोध वह केंसर है जो शरीर के एक बिंदु से उपजता है, लेकिन धीरे-धीरे पूरे शरीर में फैलकर सम्पूर्ण जीवन को जला कर रख देता है। एक क्रोध की आग में ज़िंदगी के सारे गुण चिता बनकर धूँ-धूँ हो जाते हैं, क्रोध यदि एटम बम है तो क्षमा उस क्रोध के बम को निष्क्रिय करने का इंजेक्शन है। जब भी क्रोध के निमित्त सामने आते हैं, कोई दुश्मन सामने आता है कोई ऐसा व्यक्ति सामने आता है जिसने तुम्हारा पूर्व में अपमान किया हो तो ये सभी गलती दूसरे की नहीं है, अपने ही अपराध का परिणाम है, अपने ही पूर्वकर्म के कदमों का उखड़ता हुआ तूफान है। क्रोध की आँधी और तूफान में ज़िंदगी को संभालना बहुत ही मुश्किल है, लेकिन क्षमा धर्म द्वारा ज़िंदगी को घास बनाया जाता है और घास बनाकर क्रोध के तूफान को, क्रोध की आँधी को ऊपर से निकाल दिया जाता है। क्रोध कर्म की गुलामियत है, चेतन की स्वतंत्रता नहीं है। पूर्व अपराध के उदय में क्रोध फिर कर लिया तो यह गुलामियत ही है। क्रोध में हम 48 मिनट से ज्यादा नहीं रह सकते, लेकिन क्षमाभाव में हम कई वर्षो तक रह सकते हैं। क्रोध का उदय पूर्व अपराध का परिणाम है, लेकिन क्रोध करना अपराध है, जिसकी सजा यहाँ भी मिल सकती है और इस ज़िंदगी के बाद अगली ज़िंदगी में भी मिल सकती है। क्रोध खिलती हुई ज़िंदगी का स्वभाव नहीं, गिरती हुई, डूबती हुई ज़िंदगी का विकार है।

क्रोध अकाल मृत्यु को नजदीक बुलाता है अथवा ज़िंदगी को कम करता है जबकि क्षमा भाव पूर्णायु तक ज़िंदगी को ले जाता है। क्रोध करने से जीवन की धड़कन बढ़ जाती है, और हर व्यक्ति की ज़िंदगी में गिनी हुई धड़कनें मिलती हैं, यदि धड़कनों को क्रोध से तीव्र करके हम जो धड़कनें 50 मिनट की हैं, उन्हें 30 मिनट में ही निकाल देते हैं, तो 20 मिनट आयु कम हो जाती है। क्रोध केंसर का बीज है, केंसर का बीज एक छोटे से बिन्दु से प्रारंभ होता है लेकिन जब वह फैल जाता है तो यह रोग महारोग ज़िंदगी के लिए घातक बन जाता है। क्रोध कई रोगों का बीज है, एक क्रोध को करके हम ज़िंदगी में कई रोग उत्पन्न कर लेते हैं, जबकि क्षमा से सभी रोग नष्ट हो जाते हैं। क्रोध वह आग है जो ज़िंदगी रूपी दूध को जलाती है, जबकि क्षमा वह शीतल जल है जो दूध में उबाल होने पर क्षमा के शीतल जल से उफान रोक देती है। पानी के छींटे उबलते दूध पर मारते रहें तो दूध कभी आपे से बाहर नहीं हो सकता है ठीक वैसे ही क्षमा धर्म के छींटे क्रोध रूपी उबले दूध को आपे से बाहर नहीं होने देते। क्रोध जिसके

पास है उसमें द्वेष ही द्वेष झलकता है जबकि क्षमा वीरों का धर्म है, जिसमें प्रेम ही प्रेम झलकता है, क्रोधी व्यक्ति किसी को अच्छा नहीं लगता। क्षमाशील व्यक्ति सबको कर्णप्रिय, नैत्रप्रिय, व्यवहारप्रिय, लोकप्रिय होता है।

संसार की आग से सभी परिचित हैं। लेकिन दूसरी आग क्रोध की है जिसे देखने के लिए थोड़ी सूक्ष्म दृष्टि की जरूरत पड़ती है। संसार की आग तो शरीर को जलाती है, खून को जलाती है, मांस को जलाती है लेकिन क्रोध की आग शरीर में स्थित हड्डी को जलाकर ज़िंदगी के सभी गुणों को जलाकर रख देती है। क्रोध करने में शरीर की ऊर्जा अधिक नष्ट होती है, किसी ने कहा है कि क्रोध करने से 43 पेशियों की ऊर्जा नष्ट होती है, जबकि क्षमा करने से केवल 17 पेशियों की ऊर्जा नष्ट होती है। क्षमा धर्म आकाश की तरह महान् विशाल है। आकाश में फूल फेंकने पर भी वह खुश नहीं होता और काँटे उछालने पर भी वह दुख व्यक्त नहीं करता। ऐसा ही क्षमाशील व्यक्ति होता है। क्षमाशील व्यक्ति वही हो सकता है जो किसी से भी किसी भी प्रकार की आकांक्षा न रखे। अपेक्षा की उपेक्षा में ही क्रोध जनमता है। हम किसी से सम्मान की अपेक्षा रखें और वह सम्मान हमें न मिल पाये तो क्रोध जरूर आता है क्रोध से हृदय कंपन तीव्र हो जाता है। जिससे रक्त गति तीव्र हो जाती है, आँखें खूनी लाल हो जाती हैं। इन्द्रियाँ उच्छ्रंखल हो जाती हैं। जो फिर किसी का भी भला बुरा नहीं देखती । क्रोध के आवेश में व्यक्ति आपस में कत्ल कर देते हैं, क्रोध के वेग में लोग अन्य लोगों की ज़िंदगी को खिलौना बना देते हैं।

धर्म मन्दिर व शास्त्र में नहीं, पर्वत व पाखण्ड में नहीं, राग द्वेष में नहीं ज्ञान चरित्र में है।

Religion is not in temple and scriptures on the mountaions and in flypocrity not is atachment and every, it is in enlightenment.

जागना सुबह है सोना रात।

Waking is morning and sleeping is night.

मान है अपने अस्तित्व की चिता बनाना

दुनियाँ में जितने भी रोग है उन सभी रोगों की जड़ देखी जाये तो अहंकार ही नजर आयेगा इस अहंकार से संसार का ही क्षेत्र प्रभावित नहीं धार्मिक क्षेत्र भी प्रभावित है। जरूरी नहीं है कि पूजा स्वाध्याय सदाचरण करने वाला अहंकारी न हो। अहंकार वह है जो हमारे अंदर अच्छे गुण नहीं हैं उन गुणों को अपने अंदर प्रदर्शित करना। अहंकार है दूसरों को अपने से नीचा दिखाना, इस अहंकार ने दुनियाँ में, समाज में टुकड़े करा दिये, देश - देश में टुकड़े करा दिये, भगवान - भगवान में टुकड़े करा दिये, मंदिर - मंदिर में टुकड़े करा दिये, घर के सभी सदस्य अच्छे मिल-जुल के रहते थे, एक साथ खाते-पीते थे, कोई दीवार नहीं थी, लेकिन जब से अहंकार ने घर में प्रवेश किया तब से घर - घर में टुकड़े हो गये, दीवारें खडी हो गइ, गालियाँ शुरू हो गइ। अहं के कारण आज पति की बात पत्नी को, पत्नी की बात पति को अच्छी नहीं लगती सभी एक दूसरे पर अपना अधिकार जमाना चाहते हैं, पिता पुत्र पर, माँ बेटी पर, बहू सास पर, सास बहू पर अपना अधिकार जमाना चाहते हैं, अपने अस्तित्व को अपने आपको बड़ा सिद्ध करना चाहते हैं, जब बड़े सिद्ध नहीं हो पाते तो अहंकार क्रोध मान के रूप में बाहर प्रकट हो जाता है। रावण ने सीताजी का हरण कर लिया तब प्रभु राम ने कहा मेरी सीता मुझे दे दो हमारी तुमसे लड़ाई नहीं है, लेकिन रावण बहुत गुमानी था, बोला ऐसे नहीं दूँगा हिम्मत है तो जीतकर ले लो, तो प्रभु राम को मजबूरी में युद्ध करके रावण के मान को दूर करना पड़ा, महात्मा पुरुष क्षुद्र लोगों के मान को चूर करते ही हैं, अन्यथा मान का अस्तित्व बढ़ता चला जायेगा, मान अच्छे गुणों के अस्तित्व को राख करके रख देता है, अपना खिला हुआ अस्तित्व नष्ट भ्रष्ट कर देता है।

अहंकारी आदमी की मान करते ज़िंदगी गुजर गई, लेकिन उस मान के प्रतिफल में कुछ अच्छी वस्तु हासिल न हुई तो अब ज्ञान की तरफ कदम बढ़ाना चाहिए अब मार्दव धर्म की ओर ढलना चाहिए, आत्म ध्यान की ओर बढ़ना चाहिए, अज्ञान को मिटाना चाहिए। मानी कीचड़ में फंसे कुत्ते की तरह है जो भौं - भौं तो करता है लेकिन कीचड़ (अह) में होने के कारण कोई भी उसकी आवाज पर ध्यान नहीं देता है। सबसे बड़ा मान वह है जो सबसे महान लोगों को नीचा दिखाने में किया जाये, सबसे महान भगवान हैं, संत हैं, जिनवाणी हैं इनका अपमान यदि हो गया तो सबसे कठोर दण्ड प्रकृति आपको देगी। भगवान महावीर के जीव ने मारीच की अवस्था में थोड़ा मान कर दिया था जिसके दण्ड स्वरूप भगवान महावीर के जीव को 30 करोड़ बार गधा 30 करोड़ बार कुत्ता और 20 करोड़ बार स्त्री, 60 लाख बार वेश्या बनना पड़ा। जब मुनि बनने के बाद थोड़ा सा मान हो जाये तब इतना दण्ड है, यदि कोई ज्यादा कर देगा तब

कितना अधिक होगा इसका अनुमान हम सभी लगा सकते हैं।

यदि आप लखपति हैं और आपको अभिमान आ जाये तो कोई करोड़पति को देखना, करोड़पति हैं तो अरबपति को देखना, यदि आप अपने यौवन पर इतराते हैं तो कोई वृद्ध बाबा को देखना उनके शरीर पर पड़ी झुर्रियों को देखना और सोचना ये अवस्था हमारी भी होगी ऊँट को तभी तक बड़प्पन दिखता है जब तक वह पहाड़ के नीचे नहीं आता है। यदि मनुष्य को मृदु बनना है तो उसे मृदु बनने के लिए स्त्रियों से सीख लेना चाहिए, स्त्रियों में माधुर्यता है मीठी वाणी हुआ करती है उनमें सौंदर्यता है। उनके अन्दर सहनशीलता है, पति के सभी अत्याचार सहन कर लेती हैं, पति के दुर्गुणी होने पर भी उसे निभा लेती हैं, उनके अंदर कोमलता है, नम्रता है, समर्पणता है, ये सभी मृदुता के परिणाम होते हैं। जब तक मनुष्य स्त्री के इन गुणों को अपने जीवन में न उतारेगा तब तक वह प्रगति नहीं कर सकता ये मृदुता के गुण पाकर वह यदि पौरुषता दिखा दे तो वह इंसान भगवान का रूप ले लेता है। स्त्रियों में ये सब गुण होते हुए भी उनके अंदर मार्दव भाव नहीं है , क्योंकि ये सब गुण वे अपनी साँसारिक इच्छाओं की पूर्ति हेतु धारण करती हैं। अपने अस्तित्व को पाने के लिए वो नहीं करती, जो स्त्रियाँ अस्तित्व पाने के लिए ऐसे गुणधारण करती हैं जैसे सीताजी, अनंतमती, द्रोपदी आदि वे धन्य हैं, आदरणीय हैं।

मान जीवन की खोखली नींव है और मार्दव विनम्रता की खान। विनम्रता में ज्ञान - सुख - शांति - शक्ति सभी गुण उत्तरोत्तर बढ़ते हैं। मान भरा अधिकार एक फलते - फूलते घर को नर्क बना सकता है और मार्दव गुण प्यार के द्वारा नरक को भी स्वर्ग बना सकता है। ''हर इंसान गम भरे पाप लिये बैठा है, हर जन्म मौत का पैगाम लिये बैठा है, यौवन को पाकर इतना न इतराओ, ये यौवन बुढ़ापे का पैगाम लिये बैठा है।'' मानी नगर पालिका के ट्रेक्टर के समान है जो जगह-जगह की गंदगी को अपने दिमाग में भरकर घूमता है, भगवान के समवशरण में अहंकारियों को प्रवेश नहीं दिया जाता, पूर्व में ही एक मानस्तंभ लगा दिया जाता है जो सारा अहं मिटाने वाला होता है। मार्दव धर्म उन मुनियों में होता है जिनका बेवजह अपमान कर देने पर भी जिन्हें मान उत्पन्न नहीं होता अथवा ज्ञान - तप- बल उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है।

ज्ञान पाने के लिए विनम्रता जरूरी

आज हर आदमी की ख्वाहिश ज्ञान को पाने की तो है, लेकिन ज्ञान के प्रति यथायोग्य आदर देने की नहीं है। बहुत ही सोचनीय विषय है कि किसी से ज्ञान पाना कर्ज है, देना दिव्यता। कर्ज जब लिया जाता है तो जान – पहिचान, विश्वास, श्रद्धा आदि को पूर्व में जन्म देना पड़ता है, ये नहीं है तो केवल वस्तु रखकर दिया जाता है और जिससे कर्ज ले रहे हैं उसके सामने अपना सर झुका हुआ रखना पड़ता है। लेने में कोई महानता नहीं है ज्ञान देने में महानता है। लेने वाला दरिद्री, अज्ञानी, अबोध, अनुनय करने वाला भी हो सकता है, लेकिन देने वाला दरिद्री नहीं दानी होगा। ज्ञान लेने से किसी को पुण्य की प्राप्ति नहीं हो जाती लेकिन देने में स्वर्ग क्या सब कुछ प्राप्त हो सकता है। ज्ञान देना कठिन नहीं है ज्ञान लेने की पात्रता अपने अंदर पैदा करना बहुत कठिन है। गुरु बनाना कठिन नहीं शिष्यत्व पैदा करना कठिन है। यदि आपके अंदर शिष्यत्व है तो गुरु मिट्टी का भी हो तो तुम्हें बोध दे सकता है। यदि शिष्यत्व नहीं है तो गुरु क्या भगवान राम तुम्हारे सामने आदर्श सहित जीवन लेकर आ जायें तो भी तुम उन्हें स्वीकारने को तैयार नहीं हो पाओगे। प्रश्न ज्ञान न मिलने का नहीं, आज प्रश्न विनम्रता की कमी का है। ज्ञान दुनियाँ में सबसे परम वस्तु है अन्य वस्तुओं को पाना परम वस्तु पाना नहीं है ज्ञान जैसी चीज हर जगह नहीं मिलती, कोई सत्यता को प्राप्त हुए संतों के पास मिलती है, जिसे पाने के लिए समर्पण के साथ विनम्रता, योग्यता, सेवा आदि लक्षणों को सर्वप्रथम पैदा करना पड़ेगा।

कोई ये समझता हो कि शास्त्रों को पढ़ने से ज्ञान होता है, लेकिन बिना गुरु के शास्त्र पढ़ना ज्ञानवर्धक नहीं है। अहंकार झूठ वर्धक है। ज्ञान के अंतरंग द्वार वही खोल सकता है जिसने अपने द्वार खोल लिये हैं। अनुभव की क्षितिज पर जो चहल कदमी कर रहा है वही व्यक्ति ज्ञान के रास्तों को सुगम कर सकता है, ज्ञान योग्य पूर्ण सामग्री को प्राप्त कर सकता है। जैसे बादलों का पानी प्राप्त करने के लिए हमें पहाड़ बनने की जरूरत नहीं, विनम्र होकर एक खाई बनने की जरूरत है। जिसमें बादल रूपी गुरु का जितना भी ज्ञान बरसेगा वो सब विनम्रता की खाई में समावेश हो जायेगा। विनम्रता, एक ऐसा सुंदर गुण है जिसको हर आदमी अच्छी दृष्टि से देखता है और इस गुण में हर वस्तु प्रवेश करने के लिए सहजता से तैयार है। यदि देखा जाये तो ज्ञान ही नहीं, दुनियाँ की कोई भी वस्तु पाने के लिए विनम्रता जरूरी है। विनम्रता के गुण आते ही हमारे मस्तिष्क की कोशिकाओं की ऊर्जा तीव्र हो जाती है जिससे हमें हर कार्य में सफलता के चिह्न दिखाई देने लगते हैं इसलिए विनम्रता हम सभी के जीवन में होनी चाहिए तभी जीवन की सफलता है।

तिरने की कला पैदा करना ही है संयम

हर आदमी आग के दरिया, इस गम भरी दुनियाँ से मुक्त होना चाहता है। यह सब चाहते हुए भी आश्चर्य तब है कि वह मंजिल की ओर एक कदम भी नहीं बढ़ा पाता है। आदमी कोई भी हो जब भी हम मंजिल की ओर कदम नहीं बढ़ाते तब हम प्रमादी और हिंसक समझे जाते हैं प्रमादी के लिए और हिंसकों के लिए यह संसार है प्रमादी को संसार समुद्र में तिरने की कला नहीं आती। हिंसक डूबने के लिए ही है। जीवो रक्षति रक्षतः जीवों की रक्षा अगर हमसे हो जाती है तो अपनी रक्षा नहीं करनी पड़ती है। रक्षा शस्त्रों से नहीं शास्त्रों की बातों को जीवन में अपनाने से होती है, रक्षा बातों से नहीं वैराग्यमयी व्रतों से होती है, रक्षा सत्ता से नहीं समितियों से होती है, संतों से होती है। जीवन में यदि संयम नहीं है तो मानव जीवन कुत्तों की तरह हो जायेगा जानवरों की तरह हो जायेगा। हम देखें जानवरों के खाने पीने का कोई नियम नहीं होता। इसलिए पक्षियों, पशुओं को ईश्वर बनने का अधिकार नहीं है। यदि कोई इंसान संयम अपने जीवन में धारण नहीं करता तो समझना चाहिए कि यह आदमी अपनी आत्म हत्या करने पर तुला हुआ है, और यदि दूसरों को संयमी होने में बाधा डालता है, उन्हें रोकता है तो वह व्यक्ति हत्यारा कहा जाता है, क्योंकि ऐसा व्यक्ति खुद तो डूब ही रहा है दूसरों को भी तिरने नहीं दे रहा है, डूबा ही रहा है। महर्षियों ने कहा यदि कोई रात्रि में भोजन व पानी सेवन का त्याग कर दें तो उसे वर्ष में छह माह के उपवास का फल अनायास सहजता में बिना परिश्रम के मिल जाया करता है। एक माह में पन्द्रह दिन का उपवास का फल मिलता है यह बहुत छोटा सा संयम है। संयम वह जहाज है जिस पर सवार होकर हम अँधेरे से निकलकर प्रकाश में पहुँच जाते हैं। संयम शास्त्रों के अध्ययन का उपसंहार है। हमारे पास पाँच इन्द्रियों के साथ मन भी है। पाँचों इन्द्रियों के घोड़े उच्छृंखल हैं और मन का कहना ही क्या? इन सभी को आत्मबल से अपने काबू में कर लेना संयम है। संयम के बिना कोई भी इस संसार समुद्र से तिर नहीं सकता। परमात्मा की शक्ति लेकर संयम की नाव में बैठकर तिरने की कला को जीवन में पैदा किया जा सकता है।

जानवरों जैसी ज़िंदगी जीना इंसानियत नहीं है। इंसानियत है अपने आपकी सुरक्षा करते हुए जीना, संयम अपने प्रति एक जागरूक प्रहरी है। यदि दो इन्द्रियों को काबू में कर लें तो नाक, आँख, कान ये तो काबू में हो ही जाती हैं। दो इन्द्रियाँ ही सबसे ज्यादा ऐच्छिक हैं, सबसे ज्यादा बिगड़ती हैं, एक रसना इन्द्रिय और एक

कामेन्द्रिय आठ अंगुल के शरीर के दो अवयव इंसान की ज़िंदगी को तबाह करके रख देते हैं । यदि कोई ज्ञानी पुरुष परमात्मा द्वारा बताया तत्व समझ लेता है तो वह उत्तम पुरुष बन जाता है। संयम के द्वारा ही जीवन का सूर्योदय हुआ करता है सूर्यास्त के सूर्य को कोई प्रणाम नहीं करता है। उगता सूर्य संयम के बल पर हुआ करता है। हमारे ऊपर निर्भर करता है, हम सूर्य बने या सूरदास। असयंम की ज़िंदगी है बिना जहर खाये मरना, असंयम पर वस्तु के प्रति पराधीनता है। संयम फुटकर में नहीं थोक में रोग दूर करता है हमारी ज़िंदगी में रोग ही रोग हैं ये संयम के बल से ही नष्ट किये जा सकते हैं अपनी इन्द्रिय रूपी गाड़ी के घोड़ों को कुशलता से संचालित करते हुए चलना संयम है।

संयम शेरों की दहाड़ है गीदड़ों की आवाज नहीं संयमी व्यक्ति कभी लाठी हाथ में लेकर टेककर नहीं चलेगा। संयमी अस्पताल में दवा खा - खाकर घुट घुटके नहीं मरेगा, संयमी की आँखों में कभी गम के आँसू नहीं मिलेंगे, संयमी किसी की गुलामी स्वीकार नहीं करता है। संयमी फूलों की तरह महकता हुआ रहता है। यदि दुनियाँ के बाग में संयम के पेड़ जगह - जगह लग जायें घर - घर में लग जायें तो सारा संसार महकने लगेगा, ऐसा स्वप्न साकार हो जाये तो भारत को फिर से सोने की चिड़िया कहा जाने लगेगा। प्राचीन समय में सारे देश के लोग संयमी थे जिससे भारत महान था। आज आदमी पैसा कमाने में भूखा रह सकता है, प्यासा रह सकता है लेकिन परमात्मा के प्रेम के लिए उपवास नहीं कर सकता है यहाँ विषय वासना धन की पुष्टि हेतु भोजन पानी छूट रहा है इसलिए उसका यह त्याग संयम नहीं कहला सकता है।

संयम अतीत और अनागत की जीवंत दशा का दर्पण है। यह बात पूर्णतः सत्य है कि संयमी वही होगा जिसका अतीत फूलों की तरह महकता हुआ था जिसका भविष्य गुलशन की तरह महकता हुआ होगा। संयम प्राणी का परमात्मा से रिश्ता कराता है। संयमी परमात्मा के अंश हैं दुनियाँ में दूध पानी को अलग - अलग देखने वाले अलग - अलग करने वाले हंस है। जो व्यक्ति ज़िंदगी में इन्द्रियों पर नियंत्रण नहीं कर पाता वह व्यक्ति पता नहीं कहाँ -कहाँ किस-किस योनि में भटकेगा। संसार एक आग की तरह है और संयम पानी की तरह होता है संयम के जल से ही दुनियाँ की आग को शांत किया जा सकता है। संयम क्रोध-मान माया लोभादि कषायों के त्याग पर बल देता है। अतः हम सभी को अपने जीवन में संयम का बाना अवश्य ही धारण करना चाहिए।

तप देह दण्डन नहीं आत्म शोधन का उपाय है

इच्छाएँ मानवता का खून खच्चर हैं आज इंसान के अंदर मानवता का विनाश होता देखा जा रहा है। इसमें कोई और विशेष बात नहीं, इच्छाओं का पिण्ड और उनकी तीव्रता ही है। इन्द्रियों के घोड़े बहुत ही खतरनाक हैं। इनके ऊपर मन का घोड़ा सवार है मन का घोड़ा शांत करने की बात है यदि यह शांत हो जाये तो तप धर्म जीवन में सहज ही प्राप्त हो जाये मन को काबू करने के लिए हृदय की आवाज की जरूरत है। यदि मन हृदय की आवाज अंतरात्मा की पुकार को स्वीकार कर ले तो वह व्यक्ति कोई संत या सज्जन बन जाता है और धीरे - धीरे संयम पाकर वह तपश्चरण करने लगता है। यदि कोई व्यक्ति हृदय की आवाज को मन की आवाज के सामने ठुकरा दे तो वही व्यक्ति दुनियाँ की आग में तपने लगता है। दुनियाँ में आने वाले सभी प्राणी संसारी हैं और शरीर को लिए हुए हैं। इस शरीर से दो कार्य सम्पन्न किये जा सकते हैं। पहला कि हम दर-दर की ठोकरें खाते फिरें, राग द्वेष करते फिरें इन्द्रियों के विषयों में गधों जैसे जुते रहें इससे जीवन में तप तो नहीं होगा तपन होगी लेकिन दूसरी तरफ इन्द्रियों पर काबू करके हम मन की वासनिक आग पर हृदय का धर्मरूपी जल डालें तो जीवन में सुख शांति महसूस होगी ओर तप भी होगा। तपस्वी व्यक्ति के तप करते समय उल्लास होना चाहिए। चिड़िचिड़ाहट, क्रोध कषाय पैदा नहीं होना चाहिए, समता में निवास होना चाहिए। सांसारिक इच्छाओं की पुकार हमेशा मन के हावी होने पर उठा करती है ये लपटें आत्मिक गुणों को भस्म कर डालती है लेकिन जब आध्यात्मिक धारा हृदय से फूटती है तो सारी लपटें शांत हो जाती है। हम यदि इन्द्रियों और मन के अनुसार चलें तो तपन पैदा होती है और हृदय के अनुसार चलें तो तप होता है। रत्नत्रय की साधना में मन की इच्छाएँ जो बाधक हो उन्हें रोकना तप है तपन् ज़िंदगी को दहन करना है तप देह को दण्ड देना नहीं अपनी आत्मा को शोधने का उपाय है।

''तद्‌वीर ही तेरी नासिक है तकदीर को तू इल्जाम न दे''। हम हमेशा यही कहते रहते हैं कि मेरी किस्मत में तप करना, साधु बनना कहाँ लिखा है यह तो सौभाग्य की बात है लेकिन यह तपश्चरण का हार किस्मत वालों के गले में ही पड़ता है। किन्हीं बदकिश्मत वालों के गले में नहीं ऐसा सोचकर हम संसार के चक्करों में फँस जाते हैं, काँटों से प्रेम करके फूलों को छोड़ देते हैं, लेकिन जब काँटे चुभने लगते हैं तब समझ में आता है कि मेरी तद्‌वीर मेरा आचरण ही गलत दिशा में था। तकदीर का तद्‌वीर पर ज्यादा असर नहीं पड़ता तद्‌वीर जरूर तकदीर को पलट देती है। यह काम करने के लिए हर आदमी पूर्णतः स्वतंत्र है लेकिन यह कार्य किस्मत वालों के लिए भी है।

तप की तद्‌वीर उन्हीं लोगों के अंदर हो सकती है जो लोग संयम से विभूषित हैं संयम जीवन में नहीं तो न तप होगा न संयम होगा न निर्जरा होगी अव्रती स्वाध्याय करता रहे वह स्वाध्याय उसका कर्तव्य तो कहलाएगा लेकिन तप नहीं कहलाएगा ऐसे व्यक्ति का स्वाध्याय एक दिन अवश्य प्रगति का कारण बन

सकता है। तप कुछ और नहीं मन में जो वासनाओं का कचरा भरा है इच्छाओं का गंदा मल भर गया है उसको बाहर निकालना है और जहाँ से कचरा मल आ रहा था उस द्वार को बंद कर देना तप है। तप एक ऐसी अद्‌भुत आग है जो शरीर को तो भस्म करती ही है, भीतर विराजित न दिखने वाले कचरे को भी जला देती है। मन एक जलती हुई अग्नि है और इन्द्रियाँ आग में जलने वाला आग को बढाने वाला ईधन हैं यदि मन इन्द्रियों की बात स्वीकार करके इधर की ओर दौड़ता रहेगा तो ज़िंदगी तपन से भर जायेगी और यदि मन को इन्द्रियों के ईधन से हटाकर यदि उसमें हृदय का अमृत पिलाया जाये तो ज़िंदगी में उत्तम तप धर्म निखरता जायेगा संसार का निर्माण सांसारिक इच्छाओं से है। संसार में रहने से नहीं जब भी संसार को नष्ट किया जायेगा तो संसार में ही किया जायेगा और कहीं नहीं। यदि संयम अखरोट का वृक्ष है तो तप है उस वृक्ष की हिफाजत करते हुए बड़ा करना।

हमारे जीवन में उत्तम धर्म आये उसके लिए हमें सभी तप ऋद्धिधारी मुनियों का आह्वान करके उनका आदर करना चाहिए, आशीष लेने के लिए ऐसे ऋषियों का शुभाशीष लेना चाहिए हमें निरंतर तपश्चरण की भावना को भाते रहना चाहिए और शक्ति के अनुसार तप का अभ्यास भी करना चाहिए। यदि हम थोडा सा तपश्चरण का अभ्यास कर भी लेते हैं तो उसका मद अपने जीवन में कभी नहीं आना चाहिए जो संत तपश्चरण में महान हैं जिनकी साधना के सामने देवों की कांति भी फीकी पड़ जाती है ऐसे संतों के चरणों में बैठकर उनकी सेवा करना चाहिए। उनके आचरण को देख अपने आचरण में भी तप धर्म को लाना चाहिए। ऐसे महान् तपस्वियों की विनय करना चाहिए इन तपधर्म की भावनाओं से हमारी शक्तियों का विकास होता है ज्ञान का आवास होता है इसके विपरीत यदि हम ऐसे साधुओं की आलोचना करते हैं तो हमारी ही शक्तियों का ह्रास होता है। शक्ति को न छिपाते हुए हम सर्वप्रथम अनशन (उपवास) करना सीखें यदि उपवास करने में हम असक्षम हैं तो हमें भूख से कम खाने का अभ्यास करना चाहिए और अटपटी प्रतिज्ञा करके मौन से भोजन ग्रहण करना चाहिए, इशारे आदि नहीं करना चाहिए, रसों का त्याग करना चाहिए। इन तपों को करते हुए हमारे चेहरे पर प्रसन्नता रहनी चाहिए और भगवान की आराधना, स्वाध्याय चिंतन भी निरंतर करना चाहिए। तप ही प्राणी को इंसान से भगवान बना देता है। तप को अपनाने पर ही जीवन की सार्थकता है।

जीवन की अलमस्त दशा है आकिंचन्य

दुनियाँ में पहला कदम जब आदमी रखता है तो खुदा जैसा साफ स्वच्छ दिल लेकर रखता है कोरी कॉपी लेकर उतरता है, कोरे पन्ने लेकर आता है, लेकिन जैसे ही संसार के राग – द्वेष की हवा लगती है बस पागल हो जाता है और विराट सम्राट बनने के स्वप्न संजोने लगता है। जब आया था तब यह बिल्कुल अकेला था जब जायेगा तब भी बिल्कुल अकेला जायेगा एक धेला भी साथ में न ले जायेगा, एक पेड़ा भी हाथ में न ले जा पायेगा। लेकिन फिर भी यह इंसान इस तरह का खेल यहाँ पर खेलता है कि झमेला ही झमेला चारों ओर निर्मित कर लेता है। हर वस्तु पर अपनेपन की मुहर लगाना चाहता है। जब तक लगा नहीं लेता तब तक दुखी रहता है। अपना सब कुछ भूल बैठता है। पराई वस्तु के पीछे यही कारण है कि संसार में लाखों लोगों में दो चार लोग अंतरंग से खुश दिखाई देते हैं जहाँ देखो वहाँ आँखों में आँसू ही आँसू नजर आते हैं इंसान की वासनाएँ इतनी अधिक हैं कि वह प्रमाण ही नहीं बना पाता है जैसे ही प्रमाण बनाने की सोचता है वैसे ही कोई न कोई वासना सामने आ जाती है और प्रमाण बन नहीं पाता है। वस्तु को त्यागे बिना वस्तु के विकल्पों से मुक्त नहीं हुआ जा सकता है। लेकिन आज आदमी विकल्पों से इच्छाओं से दुखी है। इसका मुख्य कारण है कि त्याग नहीं किया है। लेकिन जब इंसान देवत्व को प्राप्त होता है तो उसके भीतर त्याग उमड़ता है जैसे ही पर पदार्थ के पदार्थों को छोड़ता है, हटाता है तो उसे अपना परमात्मा अपने दिल में ही नजर आने लगता है। जिसको किसी से कुछ लेना देना न हो अपने आप में ही मस्त रहना हो उसी दशा को वैसी ही अलमस्त दशा को अकिंचन्य धर्म कहा जाता है।

''अय मुसाफिर इश्क करना गर तुझे मंजूर है
तो इश्क कर उस नूर से जो नूर का भी नूर है।

''हे इंसान ! अगर तुझे प्रेम करना है यदि तुझे दुनियाँ में लगाव करना है तो उससे लगाव रख जिसके लगाव रखने से हमारी रक्षा होती है, हमें सुख आनंद की प्राप्ति होती है। इंसान दुनियाँ में जब भी दुखी देखा जाता है तब वह अधिकार के कारण ही देखा जाता है। वस्तुओं को मेरा कहने के कारण देखा जाता है यह मेरा पना न हो तो दुख होने का प्रश्न ही नहीं उठता है। लेकिन आदमी अपने हृदय में भरा अमृत का घट उसे छोड़कर दुनियाँ के गंदे पानी को ज़िंदगी के जहर को पीना चाहता है। और पीता भी शौक से है। यह जरूरी नहीं कि नाली का कीड़ा कभी धन्य नहीं हो सकता कमल कीचड़ में उगता जरूर है लेकिन कीचड़ से भिन्न रहकर सभी के मन को मोह लेता है यदि वह कीचड़ में

लिप्त होता है तो उसे कोई देखना भी पसंद नहीं करता ठीक वैसे ही यह इंसान है यह भले ही विषय वासनाओं की चार दिवारी में जन्म लेता है लेकिन जो लोग इससे ऊपर उठ जाते हैं वे कई शक्तियों को जीवन में भरकर दुनियाँ के लिए एक महापुरुष संत के जीवन रूप बन जाते हैं। अब इंसान को शरीर की सेवा करने की नहीं शरीर से सेवा लेने की जरूरत है।

आदमी का पेट भोजन से भर सकता है पानी से भर सकता है लेकिन मन की भूख को कभी भर नहीं सकता है। संसार की आश ही हमें दास बनने को मजबूर करती है। आश ही भव पाश निर्मित करती है। आश न होती तो मानव शहंशाह होता, लेकिन यह काम हर आदमी नहीं कर सकता कोई जागा हुआ परमात्मा का प्यारा, पहुँचा हुआ संत ही यह काम करने की जुर्रत कर सकता है। आदमी के पास धन हो, या न हो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता आदमी संत हो, सेठ हो, या भिखारी हो यदि इच्छाएँ सांसारिक है तो परिग्रही ही कहा जायेगा। इच्छा ही सबसे बड़ा परिग्रह है। इसलिए परमात्मा से प्रेम करने वालों को सांसारिक इच्छाओं से बहुत दूर रहना चाहिए।

यदि संसार में इस तरह के सांसारिक इच्छुक लोग नहीं होते तो आज दिखने वाला यह संसार भी नहीं होता। संसार अज्ञानता से ही संचालित है ज्ञान से नहीं। आजकल हमारा सुख भी पराधीन है, दुख तो पराधीन होता ही है। यदि हमें सड़क पर कोई कीमती वस्तु पड़ी हुई मिल जाये तो हमारे चेहरे पर देखते ही रौनक और उठाते ही आनंद की लहर दौड़ पड़ती है। लेकिन यदि कोई वस्तु मेरी गुम हो जाये तो गम और दुख स्पष्टतः नजर आने लगता है। इससे लगता है कि हमारा सुख भी पराधीन है और जो पराधीन है वह स्वाधीन कैसे हो सकता है? पराधीनता तो गुलामियत ही है जबकि सुख मेरा वास्तविक गुण है। भाव धारा को अब बदलने की जरूरत है परायी वस्तु के प्रति राग भाव पैदा करना ही आग पैदा करना है और यह वह आग है जो सारे समुद्र के पानी से भी शांत नहीं हो सकती है। इसको शांत करने के लिए परमात्मा का ज्ञान ही काम आ सकेगा। अपने अंतर का ज्ञान ही काम आ सकेगा। इसलिए मन के मस्तिष्क को संसार की वस्तुओं से नहीं, वासनाओं की धधकती आग से नहीं परमात्मा की पाक आवाज से भरना चाहिए। ऐसा करने पर पराई वस्तु से हम दूर हो जाते हैं और अपने निकट विराजित परमात्मा को हम सभी समझ लेते है फिर साधना की दशा में मस्ती का जीवन जीते हैं। एक संत ही हैं जो दुनियाँ में साधना की अलमस्त दशा को पा सकते हैं अन्य कोई नहीं।

संसार में क्या अपना है क्या पराया है इसको स्व रचित गजल के माध्यम से बताते हैं वैसे साधु लोगों का गज़ल में प्रवेश नहीं होता लेकिन महाराज श्री का गज़ल पर पूर्ण अधिकार है। वह इस प्रकार है :-

कहें किसको यहाँ अपना कोई भी है नहीं अपना
जिसे कह - कहके मर जाते मगर वो भी नहीं अपना।
हमीं खुद भूलकर अपना यहाँ भूले हैं मंजिल को
पराये को है अपना मानते वह है नहीं अपना।
यहाँ दुनियाँ को सब ही देखकर पागल हुए जाते।
मगर कोई भी पागल है नहीं जो जान ले अपना।
मिरी हस्ती मिरी मंज़िल मिरी शौहरत मिरा रस्ता
मिरा सब कुछ मगर कुछ ही नजर आता नहीं अपना।
कसम खाता हूँ मैं रब की सभी के सामने यारो
उसे अपना नहीं कहना जो सच में है नहीं अपना।
मिरी बस रूह है अपनी वही सबकुछ हमारी है
बकाया जो नजर आता है वो सब है नहीं अपना।

अपने आपको इंसान समझ ले तो व्यक्ति में लड़ाई झगड़े सभी समाप्त हो जायें और ये दुनियाँ स्वर्ग की तरह ही हो जाये तथा अपना धर्म जो भगवान महावीर, राम, हनुमान को प्राप्त हुआ वह हमें भी सहजता से सुलभ हो जाये।

विनय मोक्ष का द्वार है।

Modesty is the gate of salvation.

नींद छोटी मृत्यु है मृत्यु बड़ी नींद

Sleep is but a shodow of death.

महाशक्तियों की ओर प्रयाण है – ब्रह्मचर्य

हर आदमी की दुनियाँ में ख्वाहिश है कि मैं महान शक्तिशाली बनूँ, मुझसे बड़ा शक्तिवान इस दुनियाँ में न हो, मैं ही शक्तिवान बनकर सारी दुनियाँ को अपने वश में कर लूँ और अपना अधिकार जमा लूँ। यदि चाहने से ऐसा होता तो सब शक्तिवान ही होते, कोई कमजोर नहीं होता। सभी चाहते हैं कि हम भगवान हो जायें तो मैं कहूँ भगवान होने से पहिले आप शक्तिशाली होईये। परमात्मा की सत्ता पाने के लिए हमें किसी से पूछना नहीं पड़ता कि परमात्मा है या नहीं। जो इंसान इस जगत में शक्तियों को एकत्रित करता जायेगा एक दिन वही सर्व शक्तिमान परमात्मा बन जायेगा। इंसान यदि शक्तियों को एकत्रित करता है तो वह परमात्मा की ओर उठता है। यदि शक्ति पाकर उसे विषय भोगों में अपव्यय करता है तो वही इंसान पशुता के स्तर को छूकर नीचे की ओर धसकता जाता है। संसार में आदमी दूध, घी, आदि बहुत से पौष्टिक तत्त्वों का भोजन करता है। शरीर इनमें से मुख्य तत्त्व एकत्रित कर लेता है जो शरीर के लिए ऊर्जा का काम करता है जिसे वीर्य कहते हैं कई बार भोजन करने के बाद एक अंजुलि शक्ति तैयार होती है जिसके शरीर में यह शक्ति अधिक होती है वह अधिक कार्य करने पर भी थकान महसूस नहीं करता उसके शरीर में स्फूर्ति, तेजस्व, ओजस्व होता है। भावों से भी बहुत बलशाली होता है। स्वामी विवेकानन्द इसके वर्तमान में प्रत्यक्ष और नजदीकी उदाहरण है। भूत में भगवान महावीर, राम, हनुमान इन शक्तियों को प्राप्त हुए। आज भी दिगम्बर संत इसकी प्रत्यक्ष मूर्ति हैं इसके विपरीत जिसके शरीर में शक्ति कोष कम मात्रा में होगा वह आदमी थोड़े काम में ही कमजोरी महसूस करने लगेगा। शक्तिकोष कम होने के कारण शरीर में टूटन होती है। अधिकतर ऐसे व्यक्ति टी.बी. के मरीज हो जाते हैं। शरीर में शक्ति बौल्टीय शैल की तरह है शैल जब (शक्ति) ऊर्जा से भरे होते हैं, रौशनी ज्यादा होती है धीरे – धीरे जलते जाते हैं रौशनी कम होती जाती है ठीक वैसा ही यह शरीर है।शक्ति के रख रखाव, संचित करने से महाशक्ति मिलती है बूँद-बूँद से ही घड़ा भरता है शक्तिकोश को बढ़ाने वाला ही महाशक्तिवान की ओर प्रयाण कर सकता है।

यदि आदमी में वासना की प्रवृत्ति न हो तो वह आदमी महान् बन जाता है संतों को महान् इसी कारण से कहा जाता है। यदि किसी इंसान को अपने शक्ति कोष को बढ़ाना है तो उसे एक परिवेश को बनाना पड़ेगा। जिसमें कुछ नियमों का पालन करना पड़ेगा नियम ये हैं स्त्री सम्बन्धी कषायें न करें, वासनिक दृश्य न देखें, पिक्चर में ऐसे नग्न दृश्य कई दिनों तक स्मृति पर उभरते रहते हैं, जो शक्तिक्षीण करने में कारण हैं। स्त्रियों को नीची निगाह से देखें नीच

नजर से नहीं, अपने शरीर का शृंगार न करें, क्योंकि शृंगार पुरुष, स्त्रियों के लिए करता है और स्त्री, पुरुषों के लिए करती है, यदि स्त्री का शृंगार पुरुष न देखे तो सारा शृंगार ही व्यर्थ हो जाये। पूर्व में भोगे गये विषय भोगों का स्मरण न करें स्मृति कभी उपयोग से जुड़कर वासनिक रूप ले सकती है, जो शक्ति ह्रासक है पुष्ट रसों का सेवन करने से उत्तेजना बढ़ती है, जैसे शराब पीने से, भांग खाने से , तली वस्तुएँ खाने से, चटपटी वस्तुएँ खाने से, प्याज, लहसुन खाने से शरीर में विकार उछलते हैं फिर शक्ति का ह्रास स्वाभाविक है। स्त्रियों से चर्चा करने से उनके शरीर को रागपूर्वक स्पर्श करने से तथा स्त्रियों के स्तन, जांघादि स्थानों को एक टक न देखते रहना आदि इन नियमों को ध्यान में रखा जाता है तब वह शक्ति शरीर में ठहरी रहती है। शक्ति कोष रोज बढ़ता रहता है। जब कोष ज्यादा होता है तो हड्डियों में प्रवेश करने लगता है, जिससे हड्डियाँ मजबूत व शक्तिशाली हो जाती है, यदि कोई पहलवान इन नियमों का पालन न करे तो कभी भी शक्तिशाली नहीं हो सकता है।

यदि हम संसार में सभी स्त्रियों को माँ समझ लें और बहिन समझ लें तो सभी स्त्रियों से हमें अदृश्य शक्ति प्राप्त होती है। यदि एक स्त्री को भी बहिन नहीं समझा तो तुम्हारी शक्ति क्षीण होती चली जायेगी। अब्रह्म का मतलब है कि अपनी शक्ति को दुनियाँ के भार में झौंकना। यदि कोई व्यक्ति दिन भर मेहनत करके कमाये फिर दूध पिये, घी खाये उससे जो शक्ति बने उसे रात में खाक कर दे, फिर सुबह से यह काम करे ऐसा सालों करता रहे तो उसे मूर्ख कहना ज्यादा अच्छा है क्योंकि यदि शक्ति को गँवाना ही था तो इतनी मेहनत से कमाता क्यों है? मन की ऊर्जा कई जन्मों तक काम करती है लेकिन तन की ऊर्जा इसी जन्म में समाप्त हो जाती है, शरीर से जैसे ही ऊर्जा (वीर्य) का ह्रास होता है वैसे ही व्यक्ति की याददाश्त, समझने की शक्ति, देखने की शक्ति, चलने, उठने बैठने, लड़ने की शक्ति, विचार शक्ति कमजोर होने लगती हैं, यदि ऊर्जा शरीर में बढ़ती है तो ये सभी बढ़ते हुए क्रम में होते हैं, जन्म से कोई वासनाओं को लेकर नहीं आता है। हम खुद ही वातावरण में रहने के अनुसार वासनाएँ उत्पन्न कर लेते हैं, उसमें भी अज्ञानता मुख्य कारण है। हर आदमी की तीन अवस्थाएँ होती है इनमें से कुमार अवस्था वासना से रहित है और युवावस्था वासनाओं की ही है, लेकिन बुढ़ापा शक्ति कोष के उत्पादन से रहित है। जो युवावस्था में शक्तिकोष बचाकर एकत्रित करके जमा कर लेते हैं उन्हें बुढ़ापा कष्टदायी महसूस नहीं होता है, लेकिन जो कोष बचाकर नहीं रखते वे फुके हुए शैल की तरह घुने हुए चने की तरह हैं। नियम तो यह होना चाहिए कि 50 वर्ष की उम्र के बाद सभी को अपना

जीवन परमात्मा को सौंप देना चाहिए। जिनकी शादी हो चुकी है और अभी युवावस्था है तो कम से कम स्वदार संतोषव्रत ले लेना चाहिए। लेकिन जिनकी शादी नहीं हुई उन्हें इस झंझट से बहुत दूर रहना चाहिए। शक्ति तो ऊपर जाने में बढ़ती है पानी को बहाने में ताकत नहीं लगती लेकिन ऊपर उठाने में बहुत ताकत लगती है ऐसे ही शक्ति है नीचे बहाने में ताकत नहीं ऊपर आज्ञाचक्र तक ले जाने में ताकत लगती है। यदि जीवन नाभि के नीचे की ओर बहता है तो समझना चाहिए शक्ति का ह्रास हो रहा है यदि जीवन नाभि से ऊपर की ओर उठ रहा है तो समझना चाहिए जीवन उन्नतिशील है, ज्ञान का विकास हो रहा है। उन्होंने कहा :-

ये जीवन एक उलझन है कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हँस हँस के जीता है कोई जीता है रो – रोकर।
करो वह शौक जिससे रास्ता मंज़िल का मिल जाये
अगर रहना मुझे होकर तो रह प्रभु राम का होकर।

बढ़ रही है प्यास तो अमृत भी मिलना चाहिए।
भूले भटकों को यहाँ गन्तव्य मिलना चाहिए।
बढ़ रही है आग दिल में वासनाओं की अगर
तो दिल हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

अतः जीवन इंसान को सर्वशक्तिमान बनने के लिए मिला है अपनी शक्ति को विषय भोगों में झौंकने के लिए नहीं मिला है। हम सभी अपनी शक्ति की हिफाजत करें तथा वह शक्ति अपने अंदर पैदा करें कि सामने विषय भोग के सामान होते हुए भी अंतर हृदय में वासनाओं का संस्कार जागृत न हो तभी हमारा प्रयाण सर्वशक्तिमान् की ओर हो सकता है यही है अपने आप में रमण करना। अपने आप में रमण करने का मतलब है सामने कोई भी हो उससे हमें कोई सरोकार नहीं यही वास्तविक ब्रह्मचर्य है।

रात को सोना, मृत्यु का पुर्वभ्यास है।

Sleeping at night is just a rehersal of death

नयेपन से करो नई साल की शुरुआत

आदमी का मन हमेशा नया-नया चाहता है मन की ऐसी आदत ही नहीं है बल्कि उसका स्वभाव है। इसलिए मन के लिए जो कुछ भी किया जाएगा थोड़े समय बाद ही वह व्यर्थ हो जाएगा। मन के द्वारा मांगी हुई वस्तु की पूर्ति करना मात्र अग्नि में ज्ञान डालना है, अग्नि में जैसे ही इान डाला जाता है थोड़ी देर बाद अग्नि फिर ज्ञान माँगने लगती है अग्नि कब ज्ञान से तृप्त होगी इसका उत्तर यह ही सत्य है कि वो कभी भी नहीं होगी ठीक वैसे ही मन एक आकांक्षा की पूर्ति कर नहीं पाता तब तक वह दूसरी आकांक्षा नई-नई पैदा कर लेता है। मन की इच्छा की पूर्ति कर देना कोई नयापन नहीं है, अग्नि में कोई नया ज्ञान डाल देना कोई नई बात नहीं है। नयापन तो मन की इच्छाएँ मिटाकर स्वयं को परमात्मा से मिलाना है। परमात्मा के अस्तित्व को अनुभूत करके स्वयं ही परमार्थ का निर्माण करना एक अद्वितीय कार्य है। यही हमारे जीवन में नयापन का संदेश है, नया दिन नये वर्ष का संकेत है, नयेपन से यदि नया साल प्रारम्भ हो तो हमारा पूरा जीवन ही सफल हो सकता है।

यदि हमने साल में प्रथम दिन वही किया है जो रोज कर रहे हैं अथवा जो पूर्व में कर चुके हैं। जैसे अच्छा-2 खाना-पीना, नये कपड़े पहिनना अथवा लोगो से कहना कि नववर्ष मुबारक हो आदि यही किया है तो यह दिन कोई नया नहीं वर्षो पुराना है और यदि हमने सत्य को पाकर अनुभूत किया है तो यह जरूर नयेपन का संकेत है। असत्य को जानते-जानते तो कई युग बीत चुके हैं मौत से मरते-मरते तो कई युग बीत चुके हैं लेकिन सत्य पाते - पाते कई युग नहीं बीते हैं। यह बात सत्य है क्योंकि हम सत्य के साथ जमाने में अनंतों युगों तक रह सकते हैं लेकिन असत्य के साथ नामुमकिन है इसका कारण है कि असत्य के साथ दिल में शैतान निवास करता है और सत्य के साथ भगवान दिल में साथ रहता है। सत्य के अनुरागी को परमात्मा संसार के दुखों में नहीं धकेलता है बल्कि उसे भी जल में कमल की तरह रहने की जिन्दगी सिखा देता है।

उम्र का ज्ञान से कोई सम्बन्ध नहीं है यह भी हो सकता है कि जितना ज्ञान एक 30 वर्ष के संत को हो और 60 वर्ष के गृहस्थ को नहीं हो और यह भी हो सकता है कि युवा को सत्य हासिल हो जाये और उसके बूढ़े पिता को न हो। सत्य अनुभव का फल है भोग का फल नहीं भोगों में अथवा भोगों के फलों में कोई नयापन नजर नहीं आता है लेकिन वस्तु का निचोड़ निकालकर अनुभवों में जीना सत्य का प्रकटीकरण है। नए वर्ष में नये दिन का नयापन नई अनुभूतियों से ही हो सकता है। अथवा उसकी प्राप्ति जिसे तुमने आज तक नहीं पाया है वह नया दिन हम सभी के अंदर प्रकट हो तभी हमारा जीवन उज्ज्वल होता हुआ नई प्रभा से श्रृंगारित हो सकता है और यह जीवन परमात्मा के राज को पाकर सफलता के अंतिम शिखर को छू सकता है।

श्र)ा की नींव पर चारित्रा का महल निर्मित होता है

हर व्यक्ति के पास अपनी स्वतंत्र श्रद्धा है इसीलिए हर स्वतंत्र व्यक्ति के पास स्वतंत्र व्यवहार है, स्वतंत्र चारित्र है। सभी व्यक्तियों के व्यवहार में कहीं न कहीं कुछ न कुछ फर्क अवश्य दिखाई देता है। एक ही माता-पिता से पैदा चार पुत्र या चार पुत्रियों के विचार अलग- अलग होते हैं, सभी का चिंतन श्रद्धा के अंकुर से उत्पन्न होता है, चिंतन को सही दिशा श्रद्धा से मिलती है फिर यही चिंतन निर्णायक बनकर चारित्र में परिवर्तित हो जाता है जैसी श्रद्धा होती है चारित्र वैसा ही बाहर में निखर कर आ जाता है इसलिये श्रद्धा को सही तथ्य से परिचित होना जरूरी है। परमात्मा पर वास्तविक श्रद्धा करने पर हमें प्रकृति का सत्यरूप दिखाई पड़ने लगता है और हमें स्वयं अपना स्वरूप नजर आने लगता है।

श्रद्धा हमारे जीवन की जान है। शरीर की कीमत आत्मा से है, मन्दिर की पवित्रता परमात्मा से है, स्त्री की शोभा शृंगार से है, ज्ञान की शोभा आचरण से है, सुहागिन की शोभा सिन्दूर से है, साधु की शोभा शील से है ठीक वैसे ही हर कार्य की शोभा श्रद्धा से है। श्रद्धा ही कार्य को सफलता की ओर ले जाती है, श्रद्धा के बल पर ही कोई छोटे-छोटे साधारण इंसान ही भगवान बन जाते हैं इसलिये श्रद्धा नाम भले ही छोटा सा है लेकिन उसका काम बहुत ऊँचा है।

श्रद्धा वह है जिसके लिये हम सब कुछ करने को तैयार हो जायें जैसे किसी को धन पर श्रद्धा है वह धन के लिये परमात्मा की प्रतिमा को भी नष्ट कर सकता है, यदि साधु को परमात्मा पर सच्ची श्रद्धा है तो वह सारी दुनियाँ उसके लिए छोड़ सकता है, श्रद्धा का वास्तविक मतलब है अंतरंग से उसे पाने की चाह। अंतरंग चाह ही बाहर की क्रियाओं में दौड़ लगवाती है, चाह ही चाहतें पैदा कर देती है यदि सुन्दर दिखने की चाह है तो फैशन की चीजों पर चाहतें पैदा कर देती है अतः हमें यदि सुन्दर चारित्र को जीवन में निर्मित करना है तो सर्वप्रथम श्रद्धा को टटोलकर सुन्दर से सुंदर बनाइये तभी जीवन का महल खड़ा हो जाता है।

दुनियाँ को जीतना सरल है
दूसरों का दिल जीतना कठिन है।

it is easy to win the world but it is difficult to win the heart of others.

भिखारी भीख नहीं माँगता, सीख भी बाँटता है

दुनियाँ में आज हर आदमी ही भिखारी की श्रेणी में है उसकी कन्डीशन में अन्तर हो सकता है लेकिन माँगने की भावना में नहीं, उनकी योग्यता में अंतर हो सकता है लेने के भाव में नहीं, एक छोटा गरीब है अल्पबुद्धि होने से सड़क पर दर-दर पर भीख माँगता फिरता है एक पढ़ा लिखा भिखारी है किन्ही संतों के चरणों में या परमात्मा के द्वार पर भीख माँगता फिरता है छोटी मिन्नतें छोटा भिखारी छोटे लोगों से करता है बड़ा भिखारी करोड़ों की भीख बड़े लोगों से माँगता है एक संत है वो भी भिखारी है क्योंकि भिक्षु शब्द से ही भीख बना है संत की भिक्षा में आदर्शपना समाहित है क्षुद्र भिखारी के अन्दर वह आदर्श नहीं है भिखारी कहता है दे तो भला न दे तो भला भिक्षु कहता है तेरी गर्ज हो तो सिर टेक, फिर दे अन्यथा नहीं लूँगा, भिखारी सड़कों पर मूँह से चिल्लाता - गिड़गिड़ाता हुआ माँगता फिरता है लेकिन भिक्षु किस्मत के सामने सिर उठाकर ग्रहण करता है वह मुँह से माँगता नहीं। देखा जाये तो भीख माँगना हमेशा ही बुरा है लेकिन भीख माँगने में भिखारी भीख ही नहीं माँगता वह भीख देने व न देने वालों को शास्त्रों की सीख बाँटता है। देखा जाये तो भिखारी शास्त्रों का जीवंत उदाहरण है उसका कर्म शास्त्रों का दर्पण है।

जितने ऊँचे व महान व्यक्ति को भीख दी जाती है भीख का प्रतिफल उतना ही ऊँचा मिलता है यदि एक रुपया एक गरीब को दिया गया है तो हो सकता है 100 रुपये प्रतिफल में मिलें लेकिन यही एक रुपया एक संत के लिए औषधि में या आहार में लगाया गया है तो उसका प्रतिफल 1 लाख रुपये हो जायेगा ओर यही रुपया परमात्मा के मन्दिर या मूर्ति बनाने में लगाया गया है तो 1 करोड़ रुपया प्रतिफल हो जायेगा। भिखारी लेने वाला ही नहीं परमात्मा के खजाने से दिलाने वाला भी है दिये बिना कभी खजाने का चैक नहीं मिलेगा। जितना दे सकोगे उतने ही प्रतिफल का चैक तुम्हारे नाम का होगा। भिखारी केवल भिखारी ही नहीं अदृश्य परमात्मा के खजाने के खजांची का एजेन्ट है। हमारे द्वारा दी गई भीख ही हमारी सम्पदा में बदलेगी।

भिखारी भीख माँगकर दाता को यह जीवंत सीख देता है कि यदि तुम भी दान नहीं दोगे तो तुम भी कल भिखारी की तरह दर-दर की ठोकरें खाओगे। हमने भीख नहीं दी थी तो यह दशा हुई है और संत भिक्षा लेते समय यह सीख देता है कि खाओ तो आसक्ति मिटाकर खाओ, इस शरीर को मात्र चलाने के लिए खाओ स्वाद के लिये नहीं। भोजन को घास की तरह खाओ व्यंजन की तरह नहीं, भिखारी हो या भिक्षुक दोनों ही लेते समय देने वाले को सीख जरूर देते हैं। भिक्षु परमात्मा का खजांची है इसलिए संतों के चरणों में सभी झुकते हैं दान देने में ही आनन्द है लेने में नहीं, देने से ही वस्तु दुगुनी हो सकती है और कोई तरीका नहीं है वस्तु को दुगुनी करने का। अतः हम सभी धन ही नहीं प्रेम - खुशी - हँसी - आनन्द भी दूसरों को दे सकते हैं, मीठे शब्द भी दे सकते हैं यह भी अच्छी और बेहतर सीख है।

परमात्मा परीक्षक भी है, निरीक्षक भी

संसार में कोई व्यक्ति पुलिस के हाथों से बच जाए, जज के हाथों से बच जाए, हम सभी की निगाहों से बच जाए लेकिन परमात्मा के हाथों से बच पाना मुश्किल ही नहीं असंभव है। उसके हाथों से कोई भी नहीं बच सकता उसके हाथ दुनियाँ के कोने - कोने में हैं उसकी आँख से कोई परिन्दा भी नहीं बच सकता हम भले ही उसे देखना भूल जायें, हम भले ही अपनी निगाह परमात्मा की ओर से फेर लें लेकिन उसकी निगाह में हम जरूर हैं। हमारे हर अच्छे बुरे कृत्य पर परमात्मा की निगाह है हम ही अब तलक जीवन की पढ़ाई पढ़ने के लिए मुकरते रहे लेकिन परमात्मा के दूत संत न होते तो हम ज़िन्दगी को पढ़ने के लिए तरसते रहते परमात्मा हमें पढ़ाने के लिए आज भी तैयार बैठा हुआ है। यदि परमात्मा न होता परमात्मा के दूत संत न होते तो हम ज़िन्दगी को पढ़ने के लिए कहाँ-कहाँ भटकते फिर भी ज़िन्दगी नहीं मिलती। परमात्मा ये भी देख रहा है कि कौन किसकी नकल करके जी रहा है? कौन शास्त्रों से शब्दों को उठा-उठाकर बोल रहा है? कौन अपने स्वयं के अनुभव से जी रहा है? कौन स्वयं के अनुभव के आधार पर बोल रहा है? किसको कितने नम्बर देना है? अनुभवी को नम्बर ज्यादा देना है या शाब्दिक ज्ञानी को अनुभवी को ज्यादा शाब्दिक ज्ञानी को कम अनुभवी सभी क्षमताओं से पूरिपूर्ण है। परमात्मा परीक्षक भी है, निरीक्षक भी है, और अधीक्षक भी है।

यदि कोई अपनी ज़िन्दगी में फेल होने पर वह अपने आप में खेद करने लगे और ज़िन्दगी जीने की तमन्ना करते हुए परमात्मा से रक्षा हेतु मिन्नत करने लगे, प्रार्थना करने लगे तो परमात्मा उसे अपने आधीन करके उसकी रक्षा करने लगता है परमात्मा जिसकी रक्षा करने लगे उसे दुनियाँ में कौन मार सकता है। परमात्मा के अधीन जो रह सकता है वही स्वाधीन हो सकता है। जहाँ भक्त भगवान से कुछ आशा रखता है तो भगवान का भी उस पर अधिकार बन जाता है फिर वह भक्त भगवान के अधिकृत ही होता है। हम तो विद्यार्थी बनकर रहें और अपने भविष्य को परमात्मा के ऊपर छोड़ दें। जिसने अपने अहंकार रूपी "मैं" को छोड़कर अपना हाथ प्रभु के हाथों में सौंप दिया है अब वह कभी भी संसार में धक्के नहीं खा सकता वह भटक नहीं सकता है।

जिस इंसान ने अपनी ज़िन्दगी में ईश्वर की आराधना नहीं की, उसको पाने का प्रयत्न नहीं किया, उसे अपने जीवन का अभिन्न अंग नहीं माना उसका जीवन बहुत ही दयनीय स्थिति वाला है उसकी नैया कौन पार लगा सकता है? वह सम्मानजनक जीवन कैसे बना सकता है? वह सर उठाकर कैसे जी सकता है ? अत: हम सभी अपने कर्म पर ध्यान दें तभी हम अपने कृत्य का समीचीन फल पा सकेंगे और इस जीवन को सफल कर सकेंगे।

तन मरघट की अमानत है चेतन मंज़िल की

तन में चेतन का मिला रूप संसारी प्राणी का है। तन में चेतन का निवास है। तन में चेतन का थोड़े समय तक के लिए पड़ाव है कई दिनों से कई जन्मों से चेतन का तन से मेल होने पर दोनों के रास्ते अलग-अलग आज भी हैं तन का रास्ता चेतन से मेल नहीं खाता और चेतन का रास्ता तन से मेल नहीं खाता। चेतन हमेशा तन के गुणों को पाने की अपेक्षा रखती है तन चेतन को हमेशा गुलाम बनाकर रखना चाहता है। इन दोनों में यदि चेतन शक्तिशाली है और ज्ञानवान है तब तो एक अजीबों का पिण्ड है चेतन ने अज्ञानता वश अपने कर्तव्य को न समझ पाया इस कारण चेतन तन में दुखों का अनुभव करती है। चेतन हमेशा परमात्मा की ओर गतिमान रहती है तन हमेशा पदार्थो की ओर गतिमान रहता है, तन पर पदार्थों को पाकर संतुष्ट हो जाता है चेतन असंतुष्ट ही बना रहता है। तन भोजन करके वासना तृप्ति करके संतुष्ट हो जाता है लेकिन चेतना को भटकन ही हाथ लगती है। तन का काम होने पर चेतन का चेहरा रो उठता है और चेतन का काम होने पर तन मलिन हो जाता है। तन मलिन है क्योंकि मलिन वस्तुओं से निर्मित है चेतन उजली है क्योंकि उसमें मलिनता है ही नहीं। मलिन तन है इसलिए तन मरघट की अमानत है इसका अंतिम पड़ाव मरघट है। हमारा शरीर मरघट की धरोहर है और चेतन पावन है इसलिये वह मंज़िल की, परमात्मा की अमानत है।

चेतन तन की कितनी भी खुशामद कर ले, कितनी ही तरफदारी कर ले लेकिन न तन ने साथ दिया है न देगा। यदि चेतन तन की निश्चित आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाने पर तन से संयम तप आदि का पालन करें तो ये तन भी पवित्र हो सकता है। तन की पवित्रता चेतन के उच्च परिणामों पर निर्भर करती है, तन की कषाय चेतन के बुरे परिणामों पर निर्भर करती है, हम चेतन की बात मानकर यदि तन से तप करें तो तन को पाना सार्थक हो जाता है। मरघट नहीं चाहता है कि मेरे दर पे मुर्दे आयें मरघट की खुशी इसी में है कि हम हमेशा शांत रहें और चेतन भी चाहती है कि हम शुद्धता को प्राप्त कर अपनी परम शांति को प्राप्त करें। मरघट की ओर तन उन्हीं का जाता है जो यहाँ पर अपने परमात्मा से परिचित नहीं हुए हैं जिन्दगी की वास्तविकता को भूलने वाले ही मरघट पर अपना अंतिम पड़ाव बनाते हैं। मरघट की अमानत से मंज़िल को भी पाया जा सकता है और मौतों को भी बढ़ाया जा सकता है।

मरघट की अमानत कुछ समय के लिए हमें उपहार स्वरूप मिली है कर्ज के रूप में। लेकिन हमारा फर्ज है कि कर्ज को पराया धन समझें

और फर्ज निभाना सीखें। जब मर्ज खराब हो जाता है तो आदमी अपना फर्ज भूल जाता है, जीवन की तर्ज भूल जाता है। जब मर्ज जीवन का फर्ज व तर्ज भूलता है तो उसे परमात्मा से दुश्मनी मोल लेनी पड़ती है। परमात्मा की कृपा दृष्टि उस पर नहीं रहती है जो अपने कर्तव्यों को भूल जाता है। फर्ज भूलने पर परमात्मा उसकी तर्ज बिगाड़ देता है तन से अशुद्ध वस्तु दुनियाँ में कोई नहीं क्योंकि हर वस्तु तन से स्पर्श होते ही अशुद्ध हो जाती है। जीवन की तर्ज यह है कि हम अपना ज्ञान और अंतरंग शक्ति बढ़ाते जायें यदि हम सर्वशक्ति प्रकट करने में समर्थ हो जायेंगे तो ये तन मरघट की अमानत न हो पायेगा इसका एक – एक अणु माथे से लगाने के लायक हो जायेगा। यदि हम इसी तन में अज्ञान समाहित कर लें तो यही शरीर मिट्‌टी में मिलने के काबिल हो जायेगा। जब यह तन मिट्‌टी में मिलने के काबिल हो जायेगा तो तन के साथ हम भी मिट्‌टी में मिल जाते हैं। मेरे कारण ही तन मिट्‌टी में मिला है और जब यह तन शुद्ध वर्गणाओं में स्वयं ही विलीन हो जाता है तब मंज़िल पर पहुँचकर अपनी परम शांति में विलीन हो जाता है। अतः परम शांति को प्राप्त करना ही हमारा परं लक्ष्य है इसी को पाने में हमें निरन्तर प्रयत्नशील रहना चाहिए।

क्रोध को दबाना नहीं जानना-देखना चाहिए।

We should know and see anger, it should not be suppressed.

ईश्वर पाण्डित्य नहीं हृदय की पवित्रता चाहता है।

The God wants piousness of heart, not pedantry.

धर्म का मूल तब है जब कल्याण की इच्छा हो।

There is value of religion when there is a desire for welfare.

महावीर को जिह्वा में नहीं जीवन में बसायें।

Habit in life of mahaveer but not tongue.

तीसरी आँख खोलने पर ही सत्य नजर आएगा

दुनियाँ में दोनों आँखें सब कुछ देख सकतीं हैं लेकिन सत्य देखने के लिये ये दो आँखें पर्याप्त नहीं हैं सत्य इन दो आँखों से नहीं बल्कि सत्य भगवान राम की प्रभु महावीर की तीसरी आँख से दिखाई दे सकता है। पहली बात सत्य कोई देखना नहीं चाहता क्योंकि सत्य को देखने के लिए भौतिकता से दूर हटना पड़ता है। सत्य देखने को पत्थर की दो आँखें नहीं परमात्मा की एक आँख की जरूरत है। सत्य को आत्मसात् करने वाले के पास शंकर जी की तीसरी आँख होना जरूरी है। बाहर की आँखें वस्तु को देख सकती हैं लेकिन वस्तु के तत्त्व को नहीं, तत्त्व की ही हर जगह कीमत है। तीसरी आँख को खोलने के लिए बुद्धू बनकर नहीं बुद्ध बनकर जीना होता है यदि दोनों आँखें अंतरंग ज्ञान के समंदर में तैरने लग जायें तो तीसरी आँख खोलना बहुत आसान हो जाये। तीसरी आँख हृदय की आँख है जो सत्यज्ञान की ज्योति से प्रादुर्भूत होती है। जितने भी महंत पुरुष हुए वे सभी दिव्य ज्योतिर्मय चक्षु के कारण हुए। अंतरंग चक्षु से ही सफर साफ नजर आता है।

संतों का समागम पाकर ही बैकुण्ठ पर अपना नाम लिखाया जा सकता है। संतों का समागम प्राप्त करने के लिए हमें निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए संतों की वजह से ही आज भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता है। संत ही सत्य की आँख दे सकते हैं। दो आँखें हमें अपने माता-पिता से ही मिल जाती हैं लेकिन तीसरी आँख परम पिता परमात्मा से प्राप्त होती है। लेकिन संत परमात्मा से मिलाने के लिए एक एजेन्ट का काम करता है संत के बिना कोई परमात्मा से साक्षात्कार नहीं कर सकता। संत समागम स्वर्गदायी है तो परमात्मा का मिलन मोक्षदायी है। संत परमात्मा का ही प्रतिबिम्ब है संत जीती- जागती रामायण, गीता, कुरान, पुराण है।

यदि हम दृश्यमान में अदृश्यमान को देखने की कुव्वत रखते हैं तो समझिये हम सत्य पाने के हकदार हैं। तीसरी आँख दिव्यदृष्टि ही नहीं द्रव्यदृष्टि भी है दोनों आँखें पर्यायों को साक्षात् कर पाती हैं दिव्यदृष्टि में अनंत सार नजर आता है लेकिन पर्याय दृष्टि में एक दृश्य ही दिखाई देता है। दुनियाँ में एक सत्य वह है जो मिटता हुआ है एक वह है जो अमिट है। मिटता हुआ सत्य दो आँखों के लिए है अमिट सत्य तीसरी आँख से दिखता है वास्तव में अमिट सत्य ही परम है, परमात्मा का रूप अविनाशी है। मिटता हुआ सत्य पत्थर की आँखों के लिए है। अतः हम सभी अमिट सत्य को पाने का प्रयास करें उसी में अपनी शक्ति का सदुपयोग करें तभी हम तीसरी आँख को खोलकर वास्तविक सत्य से परिचित होकर सत्य को उजागर कर सकेंगे तभी हमारा जीवन सत्यमय हो सकेगा।

हमारा ध्येय पुरुषार्थ पर हो पदार्थ पर नहीं

आजकल हर आदमी पर दृष्टि डाली जाये तो यही नज़र आएगा कि हम करना कुछ और चाहते हैं और पाना कुछ और, हमारी करनी में परमात्मा की पूजा है और हमारी दृष्टि में पदार्थ छाया हुआ है। पदार्थ ही हमें पराधीनता की ओर ले जाकर परतंत्रता में जीने को मजबूर कर देता है। हमारा ज्ञान अविकसित होता है तब हमारा ध्येय भी सीमित होता है और सीमित ध्येय दुःखों का ही जन्मदाता है। हमारे अंदर दोनों शक्तियाँ विद्यमान हैं एक सीमितता का ध्येय बनाने की और एक असीमितता का ध्येय बनाने की। यदि हम असीमितता का ध्येय बनाकर कोई धार्मिक पुरुषार्थ करते हैं तो हमारा चारित्र हमें असीमितता को प्राप्त होने वाली मंज़िल को प्राप्त कराता है लेकिन सीमितता में हम मंज़िल के पथ को ही नहीं प्राप्त हो पाते हैं। मंज़िल पर पहुँचना सरल है लेकिन पथ पर सही तरीके से चलना बहुत कठिन है। हमारी दृष्टि हमेशा लक्ष्य पर टिकी रहे तो ध्येय पाना बहुत ही आसान है। पुरुषार्थ हमारा नव जीवन है पदार्थ पथ सहायक बन सकता लेकिन पथ प्रदर्शक नहीं। पुरुषार्थ पुरुष को ही शोभा देता है पामरों को नहीं।

लक्ष्य के आधार पर ही हमारी जीवन शैली का निर्माण होता है। यदि लक्ष्य पवित्र है तो हमारा आचरण भी पवित्र ही होगा। चाहे रेलगाड़ी हो, चाहे हवाई जहाज, चाहे कार हो, चाहे स्कूटर ये सभी ड्राइवर के लक्ष्य के अनुसार ही चलते हैं। यदि हमारा लक्ष्य हीन होगा तो हमारा चारित्र भी हीन होगा लक्ष्य ही चारित्र का निर्माता है। उत्कृष्ट लक्ष्य को केवल वही बना सकता है जिसका ज्ञान स्वयं से ही उद्घटित हुआ है। यदि हमारा ध्येय मंज़िल को पाने का नहीं है बल्कि मुकाम पर जाने का है तो हमारी यात्रा मुकाम के पड़ाव पर ही समाप्त हो जायेगी फिर मंज़िल को हम कभी भी नहीं पा सकेंगे। हमारा ध्येय ऐसा हो कि उसके आगे जाने का कोई भी पुराना मार्ग न हो अथवा अंतिम पड़ाव ही वह हो।

पदार्थ को ध्येय बनाने का मतलब है परमात्मा की तरफ से मुँह फेरना। परमात्मा को नापसंद कर देना अथवा पदार्थ पाना प्रथम, परमात्मा को द्वितीय परमात्मा सब कुछ स्पष्ट देख रहा है लेकिन दण्ड व्यवस्था प्रकृति के हाथ में सदैव विद्यमान रहती है। पदार्थ पर ध्येय बना लेने पर हमारी स्वतंत्रता ही परतंत्रता बन जाती है।

ज़माना बदलना है तो अपनी जीवन शैली बदलो

यदि यह कहा जाये कि हर आदमी मात्र इसीलिए इस जमीं पर जी रहा है कि मुझे वैभव प्राप्त हो, लोग मेरी प्रशंसात्मक स्तुति करें। लोग मुझे परमात्मा की तरह चाहें, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इससे यह भी जाहिर होता है कि हमारे ख्वाब परमात्मा से कम नहीं हमारे ख्वाबों में बहुत ही महानता है, महान लोगों से समानता है, इसे हर कोई जानता है, मानता है लेकिन यह बात भी अनुकरणीय है कि जमाना वही है जो पहिले था और आगे भविष्य में जमाना वही रहेगा जो अभी है जमाने को बदलने के लिए हमें खुद ही अपने आपको बदलना पड़ता है। यदि हमारा जीवन पूर्व की तरह ही गुजर रहा है तो जमाना कभी भी बदला नजर नही आएगा। यदि हम ईमानदार से बेईमान हो जायें तो सारे लोग हमें बेईमान और चालाक नजर आएँगे हमें संत की निस्पृह बातों में चालाकी नजर आएगी लेकिन हम बेईमान से ईमानदार हो जाएँ तो बेईमानों के साथ जीना मुश्किल हो जाएगा क्योंकि हमें सभी ईमानदार नजर आयेंगे। जमाने का वर्तुल मेरी विचारधारा पर निर्भर करता है। हमारी जीवन शैली जमाने को निर्मित करती है।

किसी ने कहा है कि ''हम बदलेंगे युग बदलेगा'' यदि हम युग के ऊपर दृष्टि डालें तो पाँच वर्ष में बदलता है और ये युग में परिवर्तन देश के लोगों में परिवर्तन आने पर होगा। लोगों में परिवर्तन अपनी जीवन शैली में परिवर्तन आने से होगा। कहना यही है कि हमारी जीवन शैली हमारे दृष्टिकोण पर आधारित होती है। दृष्टिकोण का वातावरण पर असर पड़ता है। कहा भी है संतो के पास या कोई शांतचित्त व्यक्ति के पास आकर कोई चंद क्षण भी बैठता है तो वह चाहे थोड़े समय के लिए ही सही पर वह शांति महसूस करता है और किसी क्रोधी कषायी अथवा ढोंगी तांत्रिक के पास बैठते हैं तो हमें कुछ अशांति सी महसूस होती है। यह जीवन शैली का ही प्रभाव है यदि भगवान महावीर, राम, हनुमान, ने यदि जमाने पर कोई प्रभाव छोड़ा तो वह अपनी निजी जीवन शैली द्वारा ही छोड़ा है उनकी जीवन शैली को स्मरण करने पर हम आज भी शांति को प्राप्त कर लेते हैं।

हर व्यक्ति का अपना-अपना नजरिया है नजरिया के स्तम्भ पर जीवन की छत ढली होती है। नजरिया जीवन की आधार शिला है और जीवन शैली के लिए लक्ष्य है। लक्ष्य के द्वारा ही जीवन में आचरण परिलक्षित होता है। लेकिन आजकल मिथ्यात्व की लहर में आदमी बहता हुआ दूसरों को बदलना चाहता है, जमाना बदलना चाहता है स्वयं अपनी जीवन शैली नहीं

चाहता है स्वयं अपनी जीवन शैली नहीं बदलना चाहता। इसी कारण वह जमाने की आलोचना का शिकार होता है। जमाना जीवन को देखकर मानता है जुबान की सुनकर नहीं। जमाने ने जो भी माना है वह सत्य ही माना है। हमारी जीवन शैली ऐसी निर्मित हो कि हमसे जमाने में कम से कम लोगों को पीड़ा हो या किसी को पीड़ा न हो तो हम सभी की आँखों के तारे हो सकते हैं यदि हमने पीड़ा दी तो हम सभी की आँखों के पत्थर हो जायेंगे। हम सभी अपनी जीवन शैली से ही सतयुग - कलियुग - त्रेतायुग ला सकते हैं। जीवन बदलने पर जमाना बदलेगा भगवान महावीर, राम ने खुद को ही बदला था जमाना तो बदल गया। यही उनके जीवन की सफलता का राज है।

सच्ची पूजा के बिना सम्यग्ज्ञान या सम्यक्‌दर्शन
नहीं हो सकता है।

Without cordial devation. we can never have omni knowledge as omni science.

ब्रह्मचर्य के बिना अनंत शक्ति नहीं हो सकती है।

Celebacy is sine Que non for infinite power.

आराधना व साधना का सहारा विरले ही लेते हैं।

Rare people access to the help of devation and practice.

अहं का शिकार अंधा, अंधेरे में हो सकता है।

A blind falls prey to proud in darkness.

अहं का पुजारी परमात्मा का दास नहीं
हो सकता।

Devoee of proud, can't be the devatee of god.

रोगों की जड़ राग है, निरोग की विराग

हर व्यक्ति के जीवन में कई घटनाएँ घटतीं रहतीं हैं कहीं अच्छी तो कहीं बुरी। आदमी को अच्छी घटनाएँ बहुत अच्छी और बुरी घटनाएँ खराब लगतीं हैं। लेकिन घटनाएँ क्यों होतीं हैं? ये घटनाएँ हमारे जीवन में ही क्यों या सभी के जीवन में क्यों नहीं ऐसा विचार मन में आ सकता है। इस विचार का उत्तर ढूँढ़ना सरल है कोई यह कह देगा कि मेरे ही कर्म का परिणाम है लेकिन यह वास्तविक उत्तर नहीं है। तूने कर्म क्यों किया यदि इसका उत्तर मिले तो वास्तविक होगा। कर्म करने का कारण राग है। राग द्वेष के बिना कोई भी कर्म को किया जाना असंभव है और कर्मों के कारण ही शरीर में रोगों की झड़ी लगी रहती है। सबसे बड़ा रोग जन्म मरण जरा का है इस रोग के कारण ही कई शरीर के रोग लगे हुए हैं। यदि बड़ा रोग न हो तो छोटे रोग स्वयं ही नष्ट हो जायें। अतः राग ही रोगों की जननी है।

महर्षियों ने राग को आग कहा है। एक वह आग होती है जो शरीर को जलाती है लेकिन राग वह अदृश्य आग है जो गर्म न होकर भी सम्पूर्ण आत्मा को जलाकर भस्म कर देती है। ऊष्ण आग से सारी दुनियाँ परिचित है लेकिन अदृश्य आग से जो परिचित हो जाता है वह ही भगवान राम, महावीर, कृष्ण, हनुमान, बुद्ध, कबीर को समझ सकता है उसी के अन्दर अपने अन्दर विराजित परमात्मा को स्वीकार करके सच्ची श्रद्धा पैदा हो सकती है। बाहर की दुनियाँ के कोने-कोने से परिचित होना आसान है लेकिन अपने अन्दर के वैभव के एक बिन्दु से भी परिचित होना बहुत कठिन है। अन्दर के एक कोने को ज्योर्तिमय कर लेना सुमेरु पर्वत पर विजय पा लेना है।

रोगों की जड़ें बहुत ही खतरनाक होतीं हैं कभी-कभी ये जड़ें प्रस्फुटित होकर प्राणी को पीड़ा उत्पन्न कर सकतीं हैं। रोगों की नींव राग पर विजय पाने के लिए परमात्मा का परम ज्ञान चाहिए। क्योंकि राग जीतने वाला एक परमात्मा ही है। यदि हमें राग की आग बुझाना है तो परमात्मा के गुणों की भक्ति का अमृत ही बुझा सकता है और कोई नहीं बुझा सकता। अतः हम सभी निरोग होना चाहते हैं तो इन्द्रियों के विषयों से और विषय वासनाओं से दूर हट कर आत्मसाधना में लगें और परमात्मा जो कि परम ज्यातिर्मय है उसकी भक्ति में लीन होकर अपना चिराग भी रौशनी से भर लें तभी जीवन को पाकर इस धरती पर आने की सफलता रहेगी।

ज़िन्दगी प्रश्न नहीं, उत्तरों का उत्तर है

यदि अलग - अलग व्यक्तियों से ''ज़िन्दगी क्या है?'' यह प्रश्न पूछा जाये तो सभी अलग-अलग उत्तर देंगे। कोई कहेगा खाना-पीना मौज से रहना ही ज़िन्दगी है, कोई कहेगा धन कमाकर ऐश्वर्य प्राप्त करना ही ज़िन्दगी है, कोई कहेगा संत बनना ही ज़िन्दगी है, कोई कहेगा अच्छा पहनना अच्छा रहना आजाद पंछी की तरह जीना ही ज़िन्दगी है, कोई कहेगा बड़े होकर कुछ बनना फिर घर बसाना फिर बच्चों आदि का पालन करना ही ज़िन्दगी है। लेकिन ये सभी उत्तर होने के बाद भी प्रश्न खड़े हो जाते हैं और जब तक प्रश्न खड़े होते हैं तब तक ज़िन्दगी क्या है? इसका सही उत्तर नहीं आता। कई अनुभवों का समूह ज़िन्दगी है ज़िन्दगी अनुभवों का ही दूसरा नाम है। अनुभव भी अपने निजी स्तर पर निखरते हैं और ज़िन्दगी भी निजी स्तर पर निखरती है। जो प्रश्न करता हो वो ज़िन्दगी को समझता ही नहीं सभी प्रश्नों के निराकरण पर ज़िन्दगी का उत्तर उभरता है इसीलिये ज़िन्दगी उत्तरों का उत्तर है।

ज़िन्दगी को समझने के लिए हमें सर्वप्रथम परम सत्य को समझना होगा परम सत्य की अनुभूति के लिये हमें इतने अनुभव शील व सूक्ष्म तथ्य दृष्टा बनना पड़ेगा कि संवेदना तत्काल झलक आये। संवदेना के बिना ज़िन्दगी का अनुभव हो ही नहीं सकता है संवेदना अनुभव का प्राण है और ज़िन्दगी प्राणों का प्राण है। ज़िन्दगी के वृक्ष पर कई महकते फूल सुन्दरता को बिखराते हैं लेकिन ज़िन्दगी का अंकुरण अनुभव से ही होता है। हम क्या हैं? परमात्मा क्या है? परमात्मा और मुझमें क्या अंतर है? ये अंतर क्यों है? क्या पूर्व में परमात्मा हमारे जैसा ही साधारण इंसान था? फिर वह परमात्मा किस विधि-व्यवहार व आचरण से बना? क्या हम ऐसा करके प्रभु नहीं बन सकते? आदि - आदि कई प्रश्न अंतस् से उठाए जाते हैं तब कहीं ज़िन्दगी का प्रथम अनुभव अवतरित होता है।

जब बहुत से अनुभव बटोर लिये जाते हैं तो अंत में अंतिम अनुभव विचार शून्य अवस्था है इस विचार शून्य अवस्था में परम सारभूत अवस्था प्राप्त हो जाती है जिसे ज़िन्दगी कहा जाता है। यह वो अवस्था है कि फिर कभी बदलती ही नहीं है। अतः शरीर की उम्र होती है मगर ज़िन्दगी वो है जिसकी कोई उम्र नहीं। उम्र का तो अंत है ज़िन्दगी का अंत नहीं। जब तक ऐसी ज़िन्दगी हासिल न हो जाये तब तक प्रश्नों का ढेर लगा ही रहेगा। सम्पूर्णता पर जाकर ही परम ज़िन्दगी होगी, वही ज़िन्दगी उत्तरों का उत्तर है। हम सभी उसे पाने के लिए प्रयासरत रहें तभी जीवन सफलता की ओर जा सकता है।

चिराग जलाकर जिओ, बुझाकर नहीं

इस दुनियाँ में जिस आदमी ने भी जन्म लिया है उसे उम्र भर तक जीना तो पड़ेगा फिर चाहे वह अँधेरे में डूबकर जिये चाहे वह उजाले की रौशनी में जिये। अब ये अपने ऊपर निर्भर करता है कि हम कैसे जियें? हम अपना चयन करने के लिए पूर्णत: स्वतंत्र हैं यदि हमने ही अपने चिराग को बुझाने की कसम खा ली हो तो परमात्मा ज्योतिर्मय होते हुए भी हमारा चिराग जलाने में असमर्थ होगा। यदि हम अपना चिराग रौशनमय करने के लिए कमर कस लें तो परमात्मा हमारा चिराग बुझाता भी नहीं है। यद्यपि परमात्मा जला हुआ है अत: वह बुझाने में नहीं जलाने में अपनी सहायता कर सकता है। परमात्मा का सभी के लिये यही उपदेश है यही आशीर्वाद है कि सभी लोग इस दुनियाँ में अपना चिराग जलाकर जियें जो भी अपना चिराग जलाकर जीते हैं या जी रहे हैं खुदा का प्यार उसकी अनुकंपा ऐसे लोगों पर रहती है जो उसकी बात को मानकर अंगीकार करते हैं।

इस दुनियाँ में यदि हम अँधेरे में जिये तो अनंत वर्षों तक हम रह सकते हैं लेकिन यदि उजाला करके हम जिये तो अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल से एक मिनिट ज्यादा भी नहीं रह सकते हैं। जो चिराग जला लेगा उसे फिर ज्यादा भटकना नहीं पड़ेगा। हमें अँधेरे के कारण कई ठोकरें भी खानी पड़ती हैं अँधेरे के कारण कई बार कुए गड्ढे में भी गिर जाते हैं अथवा यूँ कहें हम लुटते-पिटते मरते हैं तो ये सब अँधेरे में ही होता है। हमें अपना चिराग जलाने के जिए कोई जले हुए चिराग का सहारा लेना पड़ेगा एक जला चिराग कई बुझे चिरागों को रौशन कर सकता है लेकिन सौ बुझे चिराग एक भी चिराग को रौशन नहीं कर सकते।

संत ही हैं जो परमात्मा का निरंतर ध्यान करते हुए अपना चिराग जलाए रखते हैं। आज परमात्मा तो हमारे बीच में नहीं है लेकिन परमात्मा के अग्रदूत संत हैं। हम ऐसे जलते चिरागों के पास आकर बैठें उनके अनुभवों का रसपान करें और उनके चिराग से कुछ ज्ञानरूपी दीपक बनाएँ तथा तप रूपी तेल भर कर ध्यान के माध्यम से अपनी बाती को रोशनमय कर लें तो निश्चित जो अनुभूतियाँ संतों को होती हैं वही अनुभूतियाँ हमें भी हो सकेंगी। खुश्बू वाले फूल के पास बैठकर ही अपनी नासिका से सुवास को ग्रहणकर खुश हो सकते हैं वैसे ही खुशी से भरे संत के पास बैठकर हम भी खुशी के नजारे में शामिल होकर कुछ आनन्द का लुत्फ उठा लेते हैं। यह हो नहीं सकता कि हम संत के पास बैठें और उसकी महक हमारे जेहन को न छू पाये। अत: हम सभी अपना चिराग निरंतर जलाए रखने में तत्पर रहें और रोशनी में जियें अँधेरे में नहीं तभी हम सभी का जीवन सुखमय होता हुआ रोशन हो सकता है।

ज्ञान के दीप जलाना है दीपावली मनाना

देश के हर कोने - कोने में दीपावली का त्यौहार मनाया जाता है। लगभग 2530 वर्ष पहिले दीपावली पर्व इस देश में नहीं था। भगवान महावीर के कारण दीपावली त्यौहार नहीं मनाया बल्कि महावीर भगवान के प्रथम गणधर गौतम स्वामी के कारण दीवाली का त्यौहार मनाया जाता है। दीपावली के दिन प्रातः भगवान महावीर ने निर्वाण को प्राप्त किया, इस कारण महावीर भगवान की पूजा के तत्पश्चात् लाडू चढ़ाया जाता है और शाम को गोधूलि बेला में गौतम स्वामी ने ध्यान के बल से अपने अंदर वह केवल ज्ञान की ज्योति जलाई जिसमें सारा ब्रह्माण्ड स्पष्टतः दर्पणके समान दिखाई देता है उस केवल ज्ञान की प्राप्ति पर देवों ने गोधुलि में आकर दिव्य द्रव्य से पूजन की और दीप जलाए। तथा मनुष्यों ने इस खुशी में अपने घर पर दीपमाला बनाकर उजाला किया और ईश्वर से यही प्रार्थना की कि ऐसे ज्ञान दीप को मेरे हृदय में भी जलाओ, ज्ञानदीप के जलाए बिना दीपावली मनाना सार्थक नहीं हो सकता।

जिस तरह भगवान महावीर ने अपने सारे कर्मों को फोड़ डाला गौतम स्वामी ने ध्यानाग्नि से सारे अज्ञान का विस्फोट कर डाला वैसे ही हम सभी भावना को भरकर अपने अज्ञान रूपी कर्म को फोड़ डालें। दीपावली पर पटाखा आदि हिंसक कार्य नही ंकरना चाहिए। हमेशा अहिंसक तरीके से दीपावली त्यौहार मनाना चाहिए। दीपावली के दिन सुबह उठकर परमात्मा का स्मरण करके मंदिरों में भक्तिभाव से उसकी आराधना करना चाहिए। परमात्मा ने अपना घर साफ करने को कहा था लेकिन लोगों ने अपने घर द्वार साफ कर डाले। अपने घर से मतलब था अपने हृदय की कलुषता को साफ करना।

महावीर ने कहा अपना पात्र साफ करो। गंदे पात्र में अच्छी वस्तु भी कीमत हीन हो जाती है। गंदे पात्र में शेरनी का दूध भी अपवित्र हो जाता है। ज्ञान का दीप तभी जल पाता है जब विवेक का तेल हो और चरित्र व तप की बाती हो। यदि विवेक का तेल न हो तो परमात्मा के चिराग से हम सभी का एक भी दीप नहीं जल सकता है। अतः परमात्मा अहिंसक है तो हम भी अहिंसक तरीके से दीवाली मनाएँ इसी में परमात्मा खुश होगा। हिंसकों की तरफ परमात्मा कभी भी नहीं देखता है। अहिंसा ही परम धर्म है।

सरलता धर्म है बचपना नहीं

सरलता, ईमानदारी नहीं है क्योंकि ईमानदारी एक पेशेवर व्यक्ति, दुकानदार या नौकरी करने वाले अफसर में हो सकती है, फौजी अफसर, कलेक्टर में हो सकती है, क्योंकि उन्हें न कुछ छिपाना है, न छिपाने के लिए उनके पास कोई ठिकाना है, यह गुण प्राय: कर छोटे छोटे बच्चों में अच्छी तरह दिखाई देता है उसका कारण है कि उन बच्चों में कषाय और वासना जागृत नहीं है, उन बच्चों में अपना पराये का भेद नहीं है। सरलता होते हुए भी उनका वह भोलापन आर्जव धर्म नहीं है। जो व्यक्ति बाहर में भगवान की पूजा, स्वाध्याय, व्रत, उपवास धार्मिक अनुष्ठान करता हुआ यदि सरलता के भाव न रखकर ख्याति पूजा लाभ के भाव रखता है तो भविष्य में वह अच्छा शरीर प्राप्त करके धन सम्पदा सुख से सम्पन्न होकर भी वह बीमार रहता है, उसे कोई न कोई रोग लगे ही रहते हैं यह बिना विवेक के धार्मिक क्रिया का प्रतिफल है। आज इंसान पहिले छल, कपट करके मायाचारी करके पाप से धन संचित करता है, फिर बाद में उस धन को तीर्थ यात्रा में दान देने या मंदिर आदि बनवाने में लगाता है ऐसा धन भी मायावी धन है। मायाचारी लोग वे हैं जो जैसे होते हैं वैसे दिखना नहीं चाहते उससे ज्यादा अपने आप को दिखाना चाहते हैं, जहाँ बनावटी की बात आ जाती है वहाँ आर्जव धर्म न रहकर कुटिलता हो जाती है, छल कपट हो जाता है। हम लोग घर पर तो निरंतर छल कपट में ही जीते हैं, व्यापार करते हैं वह भी छल कपट में ही करते हैं लेकिन आश्चर्य तब है जब हम मंदिर में परमात्मा के सामने भी छल कपट करते हैं पूजन में शरीर को खड़ा करके अपने मन को चारों और भगाते हैं, इधर उधर की बातें करते हैं, ये सरलता के लक्षण नहीं है और भोलेपन के भी लक्षण नहीं है। क्योंकि भोलापन बच्चों में होता है, आप बच्चे भी नहीं है, अत: जीवन में बचपन जैसी सरलता होना ही आर्जव धर्म है।

बच्चों की सरलता ओर साधु की सरलता एक जैसी है जैसा बच्चों के मन में होता है वैसा ही वो करते है, वैसा ही वो कहते है साधु भी भीतर बाहर एक सा होता है, अंतर केवल इतना है कि साधु की सरलता समझदारी से भरी हुई होती है और बच्चे की सरलता में विवेक नहीं होता है, भोलापन होता है। अभिनय की ज़िंदगी की कोई कीमत नहीं होती। परमात्मा की नजर में अभिनय करने वाला एक सांसारिक अभिनेता है, परमात्मा का भक्त नहीं। माया का जाल इतना विशाल है कि उससे कोई भी आदमी अछूता नहीं है। छल कपट स्वार्थ सिद्धि के लिए हुआ करता है। मेहनत से ज्यादा धन कमाने के लिए दूसरे से अपना धन बढ़ाने के लिए, किसी भी जीव को फँसाने के लिए झूठी प्रशंसा आदि की जाती है, वह भी मायाचारी है। जो व्यक्ति धन - प्रशंसा आदि को तिलांजलि दे देता है, वही व्यक्ति माया को जीतने वाला सरल कहलाता है। सरलता का जीवन महकते हुए फूल की तरह सुंदर है। सरलता की महक में

बैठकर अन्य प्राणी भी सुख शांति का अनुभव करते हैं।

सबसे ज्यादा मायाचारी का व्यापार वकील बनना है जो झूठ बोलकर लोगों को फँसाते रहते हैं, लड़ाते रहते हैं, और उनसे रुपये खींचते रहते हैं डॉक्टर का जीवन भी ज्यादातर मायावी है। सही इलाज तत्काल करते ही नहीं धीरे - धीरे पैसा खींचते हुए करते हैं। ईमानदारी से जीना आजकल कोई चाहता ही नहीं।

कोई व्यक्ति चाहे कि हम छल कपट से मायाचारी से अपना धन बढ़ा लेंगे, अपनी प्रशंसा कीर्ति बढ़ा लेंगे तो ऐसा सोचना उसका भ्रमपूर्ण है क्योंकि धन का मिलना पुण्य कर्म का फल है यश मिलना यशकीर्ति नामकर्म का उदय है छल कपट का इससे कोई संबंध नहीं, यह कथन वे ही करते है जो छल कपटी हैं। रावण ने छल कपट से विद्या से सोने का हिरण बनाया सीता जी ने देखा तो ललचा गयीं रामचन्द्र जी उसे पकड़ने गये तो रावण छल से सीता जी को उठा ले गया। स्वर्ण का हिरण नही होता यह बात रामचंद्र जी सीता जी अच्छी तरह से जानते थे लेकिन माया का प्रभाव तो देखो उसने भगवान राम सीता को भी नहीं छोड़ा, बाद में छल कपट के कारण रावण की मृत्यु उसी के अस्त्र (चक्र) से हुई और सारी दुनियाँ में अपयश, अपकीर्ति हुई। आज भी उसका नाम लेना कोई पसंद नहीं करता है, ये मायाचारी ज़िंदगी के सभी अच्छे गुण नष्ट करने वाली है। वे मुनि श्री धन्य हैं, जिनके तीनों योगों में समानता पाई जाती है। ''सारी दुनियाँ पे छायी माया, माया ने सभी को खाया'' सरलता सरल लोगों का आभूषण है। मायावी लोगों का नहीं। अतः हमें सरल होकर आर्जव धर्म को पाना चाहिए।

प्रमादी कभी जीता नहीं अप्रमादी कभी मरता नहीं।

Losels never live while quiakened never dies.

जीवन सत्यं शिवं सुंदर है।

Life is truth, salvation and beautiful.

भ्रम हटे तो ब्रह्मा मिले

हर आदमी के अंदर दबी या उजागर यह तमन्ना बैठी हुई है कि एक बार ब्रह्मा को अवश्य देखूँ यदि आदमी ने ब्रह्मा को इन खुली आँखों से देखा होता तो टेलीविजन - पिक्चर के ब्रह्मा और नाटक के ब्रह्मा को कोई देखता भी नहीं यद्यपि ब्रह्मा ही सभी प्राणियों के आदरणीय है इसलिए उसे देखना उसकी बात मानना उसका आदर ही है। लेकिन आँखों से देखना असंभव लगता है। यदि हम तीसरी आँख खोल लें तो वह अवश्य ही दिखाई देगा। तीसरी आँख परमात्मा की है और उसी के लिये है। तीसरी ज्ञानरूपी आँख के अलावा अन्य कोई उपाय नहीं है जिससे परमात्मा को देखा जा सके जब देख न पायेंगे तो मिलेंगे कैसे? ब्रह्मा को देखने के लिये सभी लालायित हैं लेकिन भ्रम कोई हटाने के लिए राजी नहीं है सब यही चाहते है कि भ्रम बना रहे और ब्रह्मा भी मिल जाये लेकिन यह संभव नहीं है क्यूंकि ब्रह्मा भ्रम से अनंत मीलों दूर है भ्रम से ब्रह्मा विपरीत है। यदि हम भ्रम का अतिक्रमण करके उससे ऊपर उठ जाये तो ब्रह्मा खुद ही मुझे गले लगा लेगा। ब्रह्मा की नजर हमेशा हमारे ऊपर है लेकिन हमारी नजर भ्रम पर हमेशा लगी है, भ्रम की नजर ही संसार भ्रमण को बढावा देती है भ्रम के अभाव में भ्रमण नहीं हो सकता। ब्रह्मा आज भी दुनियां में है कल भी रहेगा और अतीत में भी रहा था। ब्रह्मा पूरे ब्रह्माण्ड में है बस देखने वाली आंख की जरुरत है भ्रम की आँखों को ब्रह्मा नजर नहीं आ सकता इसलिये भ्रम हटे तब ब्रह्मा दिखे।

भ्रम अंधेरे में होता है भ्रम अंधेरा ही है। अंधेरा न हो तो भ्रम को तोडा जा सकता है। भ्रम अंधेरे के ही तलाश में होता है अंधेरे में आदमी पत्नि में सुख ढूँढता है यदि उजाले में सुख ढूँढै तो जिसे सुख माना जा रहा था उसका पर्दाफाश हो जाये। लेकिन अंधेरों में रहने वाला आदमी उस सुख को दुख मानने के लिये राजी ही नहीं हैं ये राजी न होना भी अंधेरे का संकेत है। लेकिन यह अंधेरा उजाला होने पर ही समझ में आयेगा ठीक वैसे ही भ्रम ज्ञान होने पर टूट पायेगा। ज्ञान कहो या ब्रह्मा एक ही बात है, ज्ञान कहो या सत्य दोनों ब्रह्मा के ही रूप है भ्रम के सद्भाव में हम अनंत काल तक संसार में रह सकते हैं लेकिन सत्य के सद्भाव में हम अनंत संसार में नहीं रहते। भ्रम वह है जो कई जिन्दगी में भी धारण करने पर पूर्ण नहीं होता लेकिन सत्य और ज्ञान वह है जो एक या थोड़ी सी जिन्दगी में वह पूर्ण हो जाता है। सत्य ज्ञान ऐसी किरण है जो एक दिन अवश्य पूर्ण होगी। भ्रम ऐसा अंधेरा है जिसकी किरणें नहीं होती। सूर्य की एक किरण भी यदि आंख को छू लेगी तो वही से सूर्य नजर आ जायेगा। सूर्य की एक किरण ही सूर्य को दिखा देगी वैसी ही भ्रम एक गहन अंधेरा है जिसमें कोई किरण नहीं होती। लेकिन ज्ञान की एक किरण फूटने पर परमात्मा दिखाई दे जाता है। ब्रह्मा, ज्ञान की एक किरण से नजर आ जाता है। वह ज्ञान भ्रम तोड़ने पर पैदा होता है।

नजर आ जायेगा। सूर्य की एक किरण ही सूर्य को दिखा देगी वैसी ही भ्रम एक गहन अंधेरा है जिसमें कोई किरण नहीं होती। लेकिन ज्ञान की एक किरण फूटने पर परमात्मा दिखाई दे जाता है। ब्रह्मा, ज्ञान की एक किरण से नजर आ जाता है। वह ज्ञान भ्रम तोड़ने पर पैदा होता है।

यदि भ्रम समझ में आ जाये तो सारी दुनियाँ समझ में आ जाये। भ्रम के टूटने पर ही अपना वास्तविक धन समझ में आता है। जिस धन को पाकर इंसान भगवान हो जाता है, जिस धन की सारी दुनियाँ पूजा करती है, हम भगवान राम को देखें, भगवान हनुमान को देखें, भगवान महावीर को देखे ये सभी कोई और नहीं इन्होने भ्रम को उखाड़ दिया इसीलिये आज भी ऐसे महापुरुष पूज्य हैं। ऐसे महापुरुषों का चारित्र जिनकी कथा से हम लोगों का भ्रम टूटता है और तीसरा ज्ञान रूपी नेत्र प्रकट होता है। यदि राम कथा और महावीर प्रभु की पूजा से ज्ञान न मिलता, भ्रम नहीं टूटता तो आज कोई भी इसे नहीं पढ़ता दुनियाँ में देखा जाये तो भ्रम बढ़ाने की वस्तुएँ ही है और संतों के पास शास्त्रों में भ्रम तोड़ने की कलाएं हैं। जितना - जितना भ्रम टूटता जायेगा ब्रह्मा उतना - उतना निकट आता जायेगा। जितनी जल्दी भ्रम हटेगा उतनी जल्दी ब्रह्मा मिलेगा। हम सभी भ्रम हटाये और ब्रह्मा को पायें तभी ब्रह्मा हमसे खुश होगा यही मानव को सफलता दिलाने में सक्षम है।

हमें कलम पर नहीं कदम पर विश्वास करना चाहिए।

Step in acts and not is weads of your ideas.

मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान् बनता है।

Man to be great by manly but not birth.
OR
Man becomes great by humanly deeds not birth.

समर्पण में सुख है लेकिन अहम् में दुख।

Sorrow in pride happiness lies in surrender.

परमात्मा खुश तो सब खुश

दुनियाँ में कौन नहीं चाहता कि परमात्मा का असीम आशीष, परमात्मा का असीम प्रेम मेरे ऊपर हमेशा बरसता रहे? परमात्मा के वरदान के सभी लोग प्यासे बने रहते हैं। सभी सम्प्रदायों में परमात्मा की आराधना होती है, जप होता है, हवन होता है, इसमें सिर्फ परमात्मा को खुश करने की ही बात है उसके कुपित होने पर दुनियाँ की कोई भी शक्ति ज़िन्दगी को खुश नहीं कर सकती, उसका कुपित होना ही ज़िन्दगी की बर्बादी है। परमात्मा को खुश करने के लिये ज्यादा परिश्रम नहीं करना पड़ता है। बड़ों को खुश करना है तो सबसे सरल उपाय यह है कि बड़ों का आदर करना सीख लो, उनके चरण छुओ, सम्मान दो और उनकी आज्ञा की अवहेलना न करो, सेवा भाव रखो। यदि कोई बहू अपने माता-पिता की सेवा करती है, उनका आदर सम्मान करती है, आज्ञा का पालन करती है तो उनके माता-पिता उससे हमेशा खुश रहते हैं और प्रशंसा भी करते हैं। एक दिन का विरह भी उन्हें कष्टदायी महसूस होता है ठीक वैसे ही परमात्मा की सेवा से उसे खुश कर लें तो उसका असीम आशीष हमारे ऊपर बिखर जायेगा और जिन्दगी आनन्दमय हो जायेगी परमात्मा यदि खुश है तो सारी दुनियाँ खुश होगी यदि वह कुपित है तो सभी लोग हमें गाली देंगे।

आज जितने भी लोग तन से, धन से परेशान दिखाई दे रहे हैं कोई खाने को परेशान हैं, कोई रहने को परेशान हैं, कोई लोगों से परेशान हैं इसका मुख्य कारण परमात्मा का अनादर करने से उसकी आज्ञा की अवहेलना करने से उसकी कुपित दृष्टि का परिणाम है। यदि घर में दोस्तों में या मुहल्ले में कोई कुपित हो जाये तो परमात्मा उसकी बुद्धि को बदलकर आपका मित्र बना सकता है लेकिन जब परमात्मा ही कुपित हो जाये तो कौन उसे प्रसन्न करने जायेगा यह बात बहुत ही विचारणीय और तर्कसंगत है।

दुनियाँ में एक सेठ है, एक गरीब है यह भी परमात्मा की कुपित और कृपादृष्टि का खेल है। परमात्मा की आज्ञा के बिना पेड़ का एक पत्ता भी हिल नहीं सकता है आदमी की तो बात ही क्या है? सारी दुनियाँ का संचालन जिसके हाथ में हो उसको हमें हमेशा प्रसन्न रखना है। यदि नगर के कलेक्टर जज को हम लोग प्रसन्न रखते हैं उनका स्वागत करते हैं उसका कारण एक ही कि आप हमारे ऊपर कभी कुपित न हो जायें। एक दुकानदार ग्राहक को कितना खुश रखता है मात्र इसीलिए कि आप कुपित न हो जायें लेकिन एक बात बतायें यदि परमात्मा आपके ऊपर खुश है तो कलेक्टर, जज, ग्राहक एवं सभी लोग आपसे खुश रहेंगे। यदि परमात्मा आपसे कुपित हो गया तो इनकी खूब तुम सेवा करो चरण धो-धोकर पिओ फिर भी ये सभी आपसे कुपित रहेंगे। इसलिए एक परमात्मा की सेवा आदर से सारी दुनियाँ स्वर्ग बन जाती है तो परमात्मा की सेवा हमें प्रतिदिन करना चाहिए।

ऊर्जा स्वयं से प्रेम होने पर उपजेगी

हमारी सारी दौड़ ऊर्जा पाने की खोज में है हमारी पूरी ज़िन्दगी का प्रयास ऊर्जा भरने के लिए है यदि हम रात में थककर सो जाते हैं तो ऊर्जा भरने के लिए और सुबह जब दौड़ने जाते हैं, दूध आदि लेने जाते हैं तो ऊर्जा भरने के लिए। हम कमाने के लिए देश-विदेश बे-हताशा दौड़ लगा रहे हैं मात्र ऊर्जा पाने के लिए । हम खाते हैं, पीते हैं तो ऊर्जा पाने के लिए। एक आदमी जब से पैदा होता है तब से मरने तक वह दौड़ता ही रहता है लेकिन फिर भी वह अपने आपको खाली-खाली कमजोर सा महसूस करता है। यदि एक ज़िन्दगी भर कमाने वाले व्यक्ति से अंत में पूछो कि तुमने अपनी 80 वर्ष की ज़िन्दगी में क्या पाया तो शायद वह अपना सिर छुपा लेगा और धीमे स्वर में कहेगा कि कुछ नहीं। इससे यह सिद्ध होता है कि ऊर्जा बाहर की वस्तुओं को एकत्रित करने से नहीं मिलती बल्कि स्वयं के गुणों को अर्जित कर लेने पर मिलती है। ऊर्जा का विकास स्वयं का उद्धार है, ऊर्जा का भराव अपने से ही प्रेम करना है। जो स्वयं से प्रेम करे वह सबसे प्रेम करने वाला होगा। स्वयं में सभी समाहित हैं और सभी में स्वयं गर्भित है। एक व्यक्ति जो हमेशा दूसरों पर क्रोध-मान करता है और एक दूसरों से प्रेम-क्षमा आदि करता है तो क्षमाशील ऊर्जा को बढ़ाता है जबकि क्रोधी कमजोर हो जाता है और क्रोध तो कमजोरों को ही आता है वीरों को क्षमा आती है। इसीलिए कहा गया है कि क्रोध ऊर्जा विनाशक है क्योंकि क्रोध करते समय धड़कन तीव्र हो जाती है, रक्त चाप बढ़ जाता है, चेहरे पर खून छा जाता है, आँखे विकराल हो जाती हैं ये सब ऊर्जा क्षय के मंजर हैं। लेकिन जिसे स्वयं से प्रेम है वह दूसरों पर क्रोध नहीं कर सकता है परमात्मा का प्रेमी क्रोधी नहीं होता दयालु होता है। ऊर्जा का केन्द्र हमारा हृदय है जब हम सत्य - सत्य विचारते हैं, अच्छा-अच्छा करते हैं, परमात्मा का चिन्तन करते हैं तब हमारी ऊर्जा शक्ति ऊपर की ओर उठती हुई मस्तिष्क तक आकर मस्तिष्क का विकास करती है। जिससे हम ज्ञानवान, शक्तिवान हो जाते हैं तथा कई शक्तियाँ हमारे मस्तिष्क में निवास करने लगती हैं। लेकिन जब यह ऊर्जा शक्ति नीचे की ओर बुरे विचारों से, क्रोध मानादि के भावों से, वासनिक संस्कारों से बहती है तो वही ऊर्जा नष्ट हो जाती है। तथा मस्तिष्क खाली रह जाता है जिससे व्यक्ति का ज्ञान क्षीण हो जाता है और शक्ति भी क्षीण हो जाती है। इसलिये यदि ऊर्जा शक्ति और ज्ञान को बढ़ाना है तो स्वयं से प्रेम करते हुए अच्छे विचारों को स्वयं में उत्पन्न करना होगा।

एक ऊर्जा शरीर की होती है जो वस्तुओं से, विटामिनों से प्राप्त होती है और एक वह ऊर्जा है जो वस्तुओं, विटामिनों और कैलोरी से नहीं बल्कि उच्च विचारों से मिलती है। जो उच्च विचारों से ऊर्जा मिलती है उसे संकल्प शक्ति कहते हैं। जो केवल परमात्मा के सम्पर्क से ही मिलती है जिसके लिए

एक ऊर्जा शरीर की होती है जो वस्तुओं से, विटामिनों से प्राप्त होती है और एक वह ऊर्जा है जो वस्तुओं, विटामिनों और कैलोरी से नहीं बल्कि उच्च विचारों से मिलती है। जो उच्च विचारों से ऊर्जा मिलती है उसे संकल्प शक्ति कहते हैं। जो केवल परमात्मा के सम्पर्क से ही मिलती है जिसके लिए परमात्मा के चरणों में समर्पित होना जरूरी है। इसी ऊर्जा के बल पर एक इंसान परमात्मा के द्वार पर पहुँचकर स्वयं अपने अन्दर परमात्मा को प्रकट कर देता है इस ऊर्जा का केन्द्र हृदय है। हृदय की ऊर्जा के सामने सभी ऊर्जायें फीकी पड़ जातीं हैं यदि हृदय की ऊर्जा श्रेष्ठ है तो सूखी रोटी खाने वाला भी बलिष्ठ है और यदि शारीरिक सौष्ठव प्राप्त कर लिया है तन्दुरुस्ती प्राप्त कर ली है लेकिन हार्दिक संकल्प शक्ति का अभाव है तो तुम्हें चूहे से भी डर लगेगा। एक देश को जीतने वाला 'तेमूरलंग' बिल्ली के सामने आते ही काँपने लगता था यह उसकी संकल्प शक्ति की कमजोरी ही थी। यदि हमारे अन्दर ऊर्जा के दोनों हिस्से संकल्प व शारीरिक शक्ति नहीं होंगे तो हम ज्ञानार्जन नहीं कर सकते, फिर हम अधिक देर तक देख भी नहीं सकते, क्योंकि शक्ति का अभाव है। हम सभी भोजन करते हैं इसमें शरीर के लिए खून माँस मज्जा सभी बनते हैं लेकिन अंतिम सर्वशक्तिशाली वस्तु वीर्य होती है जो शरीर में वोल्टेज का काम करती है यही ऊर्जा है इसी ऊर्जा के बल पर इंसान अपना विकास करता है इसी ऊर्जा के बल पर ज्ञान बढ़ता जाता है और इसी ऊर्जा की ताकत पर साधु भगवत्ता की अवस्था को प्राप्त कर लेता है। यदि प्रतिदिन के भोजन की ऊर्जा हम संग्रहित कर लें तो भीतर का परमात्मा बाहर निकल आयेगा। जो यह ऊर्जा नष्ट करते रहते हैं वे कभी परमात्मा को समग्रता से प्रेम नहीं कर पाते वे सभी के ही नहीं स्वयं अपने ही घातक बन जाते हैं। अतः हम सभी को भावात्मक ऊर्जा को एकत्रित करना चाहिए तभी हमारा प्रेम सभी से बनेगा और हम ऊर्जावान होते हुए ज्ञानवान हो सकेगें।

परमात्मा का उपासक कभी अप्रसन्न नहीं होता।

Devotee of the god never becomes unhappy.

शांति भोग से नहीं त्याग से मिलती है।

Peace attained by sacrice not by indulgence.

जीवन उसका बदतर है जो आज आलसी है

आज का दिन भी बहुत अच्छा गुजरे और आने वाला कल का दिन वह भी हँसी–खुशी आनन्द के साथ निकले। एक भी दिन जीवन में ऐसा नहीं गुजरे जिसके आने पर दुःख की लहर पैदा हो यह आज हर आदमी की ख्वाहिश है। लेकिन दुःख तब होता है जब अपेक्षा के अनुसार प्रतिफल सामने नजर नहीं आता अथवा विपरीत नजर आता है। विपरीतता क्यों हुई? हमें इस पर विचार करना चाहिए कहीं ऐसा तो नहीं कि हम कहीं गलत हो गये हैं यदि हम विचार करेंगे तो उत्तर यही होगा कि हम ही कहीं गलत हैं। यदि हम सही रास्ते पर होते तो दुःख क्यों और कैसे उपजता? ध्यान रहे कोई ये भी न समझ ले कि यदि हम आठ घन्टे मजदूरी करेंगे तो हमारा भविष्य सुखमय हो जायेगा या हम मेहनत नहीं करेंगे तो भविष्य बदतर हो जायेगा। यहाँ आलसी से मतलब है धार्मिक विचारों से रहित सांसारिक कार्यों में लिप्त हो जाना और अकर्तव्य को कर्तव्य समझ बैठना। आलसी आदमी का जीवन बहुत ही बदतर है यदि देखा जाये तो आलसी और जानवर में कोई अंतर नहीं है। आलसी भी धर्महीन है और जानवर भी धर्म से रहित है। धर्म विहीन आदमी का भविष्य पूर्णतः अंधकार के गर्त में है। आज जितना भी जो कुछ हम अपने पास धन दौलत–मकान संपदा आदि देख रहे हैं ये अधर्म के प्रतिफल नहीं धर्म के आचरण व विचारों का परिणाम हैं। जब पूर्व धर्म का प्रतिफल अभी नज़र आ रहा है तो वर्तमान का धर्म भविष्य का भी निर्माता होगा। यदि वर्तमान में हम सज्जनता, नेकता, मित्रता, प्रेम, धार्मिकता से सहित हैं तो भविष्य मेरा आनन्द की यात्रा से भरा हुआ है और यदि वर्तमान इन बातों से रहित है तो भविष्य मेरा काँटों के झाड़ में होगा वे सारे काँटे मुझे ही चुभेंगे। दुनियाँ का यह अटल नियम है कि हम दुनियाँ से वही प्राप्त करेंगे जो हम पूर्व में दुनियाँ को दिल से आवंटित करेंगे। यदि हम घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, शत्रुता, अधार्मिकता, स्वार्थता बाँटते हैं तो हमें लौटकर यही मिलता है अतः भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए हमें आलसी नहीं आशावादी बनकर पुरुषार्थी बनना चाहिए।

जो व्यक्ति पुरुषार्थ करता है वह अपना भविष्य ही नहीं बनाता वह वर्तमान में आनन्द की हिलोरें भी लेता है, वास्तव में पुरुषार्थ का फल तो आनन्द है ये पुण्यादि फल तो भूसा हैं, गेहूँ तो तत्काल मिल जाता है। यदि पुरुषार्थ का फल तत्काल न मिले तो पुरुषार्थ कोई भी न करे यदि कोई साधु पुरुषार्थ करता है तभी वह आनन्दित रह सकता है पुरुषार्थहीन साधुओं के चेहरे पर आनन्द की चमक नहीं झलकती। इसीलिए पुरुषार्थ का तात्कालिक फल आनन्द है यदि तुम धन कमाने में मेहनत करते हो, सर्विस करते हो, दुकान खोलते हो तो तुम्हारे चेहरे पर एक पारलौकिक आनन्द की चमक नहीं होती? इसीलिए यह कहा जा सकता है कि यह स्वयं को आनन्दित करने वाला पुरुषार्थ नहीं

इसीलिए पुरुषार्थ का तात्कालिक फल आनन्द है यदि तुम धन कमाने में मेहनत करते हो, सर्विस करते हो, दुकान खोलते हो तो तुम्हारे चेहरे पर एक पारलौकिक आनन्द की चमक नहीं होती? इसीलिए यह कहा जा सकता है कि यह स्वयं को आनन्दित करने वाला पुरुषार्थ नहीं यह मजदूरी है, श्रम है, जिसमें आनन्द नहीं थकान उत्पन्न होती है। पुरुषार्थ वह लहर है जो अपनी वास्तविक संपदा को दिखा देता है, अपने परमात्मा से मिला देता है, पुरुषार्थ के बिना कोई चाहे कि हम एक गिलास पानी भी पी लें तो नहीं पी सकता। अतः हम सभी को अपना कल भी उज्ज्वल बनाना है और वर्तमान भी आनन्द की हिलोरों से भरना है। हमें आज आलस को त्यागकर ज्ञान पाने के लिए, कर्तव्य करने के लिए उत्साह से भरे होना चाहिए तभी हमारा जीवन आनन्दित होता हुआ सफल हो सकता है।

ञअहंकार हमें छोटा करता है
लेकिन हम बड़े होते हैं तो अहंकार छोटा होता है।

Proud makes us petty but if we are greater] proud becomes smaller

गुणी, गुण देखते हैं अवगुणी अवगुण।

Virtuous Perceiver Virture, Sinner, Vices.

महानपुरुष का दर्शन क्रांति का उद्घोषक है।

Envisage of a great person is the announcement of a great revolution.

ऊँची-ऊँची बातों से कोई महान् नहीं होता।

No body becomes great only by empty talks.

धर्म जीवन का सहारा है, तन का नहीं

आज भौतिकवाद की दुनियाँ में हर आदमी अपने जीवन का सहारा ढूँढ़ रहा है। कोई किसी को – कोई किसी को, कोई वस्तु को ही अपने जीवन का सहारा मान रहे हैं, ये सभी लोग भ्रम में हैं। कई लोग तन के सहारे को जीवन का सहारा समझ लेते हैं फिर जब वह जीवन का सहारा नहीं बनता तो रोते हैं। कई जन्मों तक जब हम अपने जीवन में इंसानियत, परोपकार, दया, अहिंसा, व्रत आदि के भावों को बनाकर अपना जीवन अच्छा बनाते हैं तब कहीं एक जन्म में जीवन फूल जैसा महकता है। भगवान श्रीराम के जीवन को देखें कई जन्मों में सदाचार को धारण किया तब पुरुषोत्तम राम की पर्याय मिली। भगवान महावीर को देखें शेर जैसी अवस्था में माँस का त्याग कर दिया यह संस्कार बहुत ही शक्तिशाली और महत्वपूर्ण है। शेर के लिए माँस का त्याग ऐसा ही है जैसे मनुष्य भोजन का त्याग कर दे। क्योंकि शेर का भोजन ही माँस है इसलिए ये संस्कार ही उनके जीवन को सहारा बन गये। ये संस्कार ही अहिंसात्मक थे और वह अहिंसा धर्म है। धर्म के संस्कार ही जीवन के लिए सहारा बन सकते हैं। यदि हमारे संस्कार धन को कमाने के हैं, उसमें समय बिताने के हैं, कपड़े आदि पहिनने के हैं, मकान-दुकानादि बनाने के हैं अथवा खाने पीने के हैं अथवा अहं आदि कषायों के हैं तो ये जीवन के सहारे नहीं ये तन के सहारे हैं। तन के सहारे के लिए हमें अपनी जिन्दगी गँवाना उचित नहीं है। हमारी जिन्दगी जीवन है न कि तन का भार ढोने वाली एक मजदूर। यदि हम शादी करते हैं तो तन के सहारे जुटाते हैं। यदि हम बच्चों को जनमते हैं तो हम अपने तन के सहारे बनाते हैं, यदि पाप करते हैं तो मात्र तन के सहारों के लिए करते हैं। यदि कहा जाय कि दुनियाँ के जितने भी पाप होते हैं वे सब तन के लिए तथा मन के द्वारा होते हैं और जितना भी पाप का फल मिलता है वह तन को ही मिलता है, मन के द्वारा मिलता है। अतः धर्म जीवन (आत्मा) का सहारा है और पाप तन का सहारा है।

संसार में आदमी स्त्रियों का सहारा पाने के लिए परेशान नज़र आता है, स्त्री पुरुष का सहारा ढूँढ़ रही है। इन दोनों के बीच को परखा जाये तो ये सहारा जीवन का नहीं है केवल तन का है। जब हम दूसरी वस्तु का सहारा लेते हैं तब वह तन का सहारा बनता है। जब हम विषयों का सहारा लेते हैं तब तन का सहारा पैदा होता है। लेकिन जब हम अपने गुणों का अपने सादगी के व्यवहार का सहारा अपने जीवन में पैदा करते हैं तो वह धर्म ही जीवन का सहारा बन जाता है। आदमी कभी-कभी बेइमानी में कहता है हम धर्म की रक्षा

करेंगे। इन्हें सोचना चाहिए धर्म वह है जो सबकी रक्षा करता है। हम अहं की भाषा को अपने अन्दर जन्म न देवें। यदि हम यहाँ आकर 60 वर्ष जिये तो यह कोई महत्वपूर्ण बात नहीं है, महत्वपूर्ण बात यह है कि हमने कितने समय अपने जीवन में, अपने वास्तविक धर्म, इंसानियत, निष्कपटता, विनम्रता, प्रेम आदि का उपयोग किया। यदि 20 वर्ष धर्म में व्यतीत किये हैं तो 20 वर्ष केवल तुम्हारे लिए जीवन का सहारा बनेगा 40 वर्ष आपने तन की सेवा में गुजार दिये जबकि तन कभी भी साथ नहीं देता न जाने कब तन बीमार हो जावे, न जाने कब अटैक करवा दे ये तो धोखेबाज ही है। लेकिन हमें धोखा नहीं खाना चाहिए ज्यादा से ज्यादा हमें धर्म को अपनाकर उसे अपने जीवन का सहारा बनाना चाहिए। तन की सेवा गुलामियत है धर्म की सेवा, जीवन की सेवा, स्वतन्त्रता की ओर कदम है। हम स्वतन्त्र हों तभी जीवन की सफलता है।

विज्ञान मन्दिर तो दे सकता है मगर ह्दय नहीं।

Science can give temple, not heart.

माधुर्यता जीवन में प्रेम की झलक है।

Sweetness is a glimpse of Love in Life

बच्चों में बेचैनी उनके सौभाग्य का लक्षण है।

Eagerness in childern is the symptom of their good luck.

स्वयं का संकलन स्वयं का अविष्कार है।

The Collection of self is the innovation of the self .

निष्पक्ष में सच्चाई छिपी होती है।

Truth is hidden in naive.

महकने के लिए मज़हब का द्वार जरूरी

दुनियाँ में हर आदमी की सोच व सोचनीय स्थिति अलग-अलग है। महकने की इच्छा सभी रखते हैं और सभी अपने-अपने ढंग से महकते हैं। यह फैसला करना भूल जाते हैं कि हम महक रहे हैं या हम दूसरी वस्तु का अवलंबन लेकर लोगों के सामने महकने का अभिनय कर रहे हैं। वो महकना कहाँ है जहाँ दूसरी वस्तु का सहारा लिया जाये। यदि हम सेन्ट लगाकर या चन्दन लगाकर महकते हैं तो यह महकना नहीं है, अभिनय है। भगवान महावीर, राम, हनुमान में ऐसी महक होती तो अब तक कई बार मिट गई होती लेकिन इनके अन्दर वास्तविक महक है जो अरबों बर्ष बाद भी जरा सी कम नहीं हुई। यह महक सेन्ट, चन्दन आदि की नहीं अपने मज़हब की है। वर्तमान में कोई लोग धन से महकना चाहते हैं, कोई प्रतिष्ठा से महकना चाहते हैं, कोई राजनीति से महकना चाहते हैं, कोई फकफके कपड़े पहनकर महकना चाहते हैं, कोई पद-प्रतिष्ठा से महकना चाहते हैं, कोई कुख्यात बनकर कोई विख्यात बनकर महकना चाहते हैं। लेकिन यह महकना वास्तविक नहीं है यह क्षणिक महक है वह भी अधार्मिक लोगों की लेकिन धर्म करने पर अथवा धार्मिक आचरण अपनाने पर जो अपने अन्दर सौम्यता, भद्रता, व्यवहारिकता, प्रेम, मित्रता, दया व अहिंसा के विचार उत्पन्न होते हैं वे अपने जीवन पर व दूसरों के जीवन पर एक अमिट छाप छोड़ते हैं। ऐसे व्यवहार से व्यक्ति को मरने के बाद कई वर्षों तक याद किया जाता है। यह वास्तविक महक है हमारी उपस्थिति में यदि हमें याद किया जाये अथवा प्रशंसा की जाये तो यह वास्तविक महक नहीं है यह तो दिखावटी महक है वास्तविक महक वह है कि प्रशंसा व याद हमारी अनुपस्थिति में की जाये।

हर आदमी को ईश्वर प्रदत्त फूल मिला है हर आदमी को फूल जैसा जीवन बिताना है कोई जरूरी नहीं है कि पेड़ों में जितने भी फूल लगते है वो सभी महकते हों, कोई जरूरी नहीं है कि पेड़ों में जितने फूल लगते हैं उन सभी का इत्र निकाला जाता हो, कोई जरूरी नहीं है कि सभी फूलों को परमात्मा के चरणों में चढ़ाया जाता हो, कोई जरूरी नहीं है कि सभी फूलों को गजरों में पिरोया जाता हो ठीक ऐसे ही संसार में आदमी की हालत है कोई जरूरी नहीं है कि दुनियाँ में हर आदमी महकने के लिये पैदा होता हो, कोई जरूरी नहीं है कि हर आदमी होशियार होता हो लेकिन यह बात सही है कि कौन सा फूल नहीं चाहता कि मैं गुलाब का होता तो कितना अच्छा होता, कौनसा आदमी नहीं चाहता कि मुझे सभी लोग अच्छी नज़र से नहीं देखें, कौन नहीं चाहता कि मेरी महक से सारी दुनियाँ महके? लेकिन चाहने वाली महक केवल अपने अंतरंग गुणों से उद्भूत होती है, धार्मिक विचारों से उद्भूत होती है महकने को धर्म की देहरी होना नितान्त आवश्यक है।

मुझे सभी लोग अच्छी नज़र से नहीं देखें, कौन नहीं चाहता कि मेरी महक से सारी दुनियाँ महके? लेकिन चाहने वाली महक केवल अपने अंतरंग गुणों से उद्भूत होती है, धार्मिक विचारों से उद्भूत होती है महकने को धर्म की देहरी होना नितान्त आवश्यक है।

धर्म, जीवन के लिए वह सेन्ट है जिसकी महक हटाने से भी नहीं हटती। भगवान राम, महावीर, हनुमान की गंध को कोई मिटाना चाहे तो वह मिटाने वाला मिट सकता है लेकिन ऐसे महापुरुषों की महक रंच मात्र भी कम नहीं हो सकती। और जो महक किसी के हटाने से मिट जाये या किसी दूसरी वस्तु से मिट जाये वह गंध झूठी है। धर्म, जीवन के लिए वह वस्तु है जिसके बिना जीवन जिया ही नहीं जा सकता जिसके बिना जीवन का कोई मूल्य ही नहीं है ज़िन्दगी की कीमत मज़हबी महक से ही है। यूँ कहा जाये यदि किसी को अपनी जिन्दगी की कीमत महसूस होगी तो धर्म की देहरी पर कदम रख कर ही होगी। यदि आप पचास वर्ष सांसारिक भोगों में व्यतीत कर दें तब भी आप जीवन की कीमत न समझ पायेगें लेकिन यदि आप दस वर्ष धार्मिक जीवन व्यतीत कर लें तो आपको बहुत ही बहुमूल्य जीवन प्राप्त हो जायेगा जिससे महक और कीमत दोनों का पता आप आसानी से कर सकेंगे। जब किसी 60 वर्ष के गृहस्थ के सामने कोई 30 वर्ष का साधु आ जाये तो उसे अपने जीवन की व्यर्थता दिखाई देने लगती है। जो जीवन में महक पैदा करने के लिये महत्त्वशाली निमित्त बनती है। अतः हम सभी को अपना फूल महकाने के लिये या ज़िन्दगी को कीमती बनाने के लिये मज़हब के द्वार पर गुरु शरण में आना जरूरी है तभी हमारा भविष्य उज्ज्वल हो सकता है।

संत न होते जगत में तो जल जाता संसार।

If it is not for saints world would have set afire.

दान को छपाकर नहीं छुपाकर देना चाहिए।

Alms should be secret but not pablished

महावीर ने कदम उठाये थे कलम नहीं।

Lord mahavir stepped but not penned.

गुण ही जीवन में सुगंधि बनते हैं गुण बिना मानव जीवन एक उजड़ा हुआ जीवन के समान है, गुण से व्यक्ति की कद्र हर जगह होती है गुणवान व्यक्ति ही दुनियाँ में पूजा जाता है। यदि कोई बहुत सुन्दर है लेकिन गुण नहीं हैं तो वह विकारी लोगों को तो अच्छा लग सकता है लेकिन सभी लोगों को अच्छा नहीं लग सकता है लेकिन रूपवान न होने पर कोई गुणवान है तो वह सभी को अच्छा लगता है हर व्यक्ति उसे चाहता है। व्यक्ति जब अच्छी वस्तु देख लेता है तो बुरी वस्तु को देखना कोई पसंद नहीं करता है। जब तक रसगुल्ले नहीं खाये हैं तभी तक बूँदी के लड्डू बहुत अच्छे लगते हैं लेकिन जब रसगुल्ले और बूँदी के लड्डू सामने रखे हों तो पहले निगाह रसगुल्लों पर जाती है ठीक उसी प्रकार जब किसी को वीतरागता के दर्शन हो जाते हैं तो फिर सरागता के दर्शन में आनन्द नहीं होता है। जब सत्यता का ज्ञान हमें प्राप्त हो जाता है तो फिर झूठ को सुनना हम रंचमात्र भी पसंद नहीं करते हैं। रूह के गुण हमें मिल जायें तो रूप के गुण कोई पसंद नहीं करता।

सम्यक्त्व ऐसा सुन्दर और पवित्र गुण है जिसके प्राप्त होने पर व्यक्ति में लोगों को आकर्षित करने की शक्ति प्राप्त हो जाती है। सम्यक्त्व एक ऐसी गुण रूपी चुम्बक है जो लोहे रूप लोगों को स्वतः ही अपनी और खींचती है। सम्यक्त्व के अभाव में यदि क्रीम, पाउडर, कपड़े आदि का सहारा लेकर किसी को अपनी ओर आकर्षित किया जाये तो यह केवल वासना का प्रदर्शन है प्रार्थना से इसका कोई संबंध नहीं है लेकिन सम्यग्दर्शन जैसा गुण, जो कुरूप को सुन्दर बना दे, दुश्मनी को प्रेम बना दे, ये सभी को प्राप्त नहीं होता। कोई व्यक्ति जिस पर परमात्मा बहुत प्रसन्न हो गया है जिस पर परमात्मा की दृष्टि बहुत गहराई से जम चुकी है जो कर्तव्य को करने में हमेशा तत्पर रहा करता है उसी को प्राप्त होता है वह इंसान जो सत्य को भगवान राम की तरह हासिल करके संसार में रहता है वही सम्यक्त्व से विभूषित रहता है।

जिस पुरुष को गुणों को पाना है जीवन अपना बहुमूल्य बनाना है, इंसान जैसा बनाना है स्वयं को परमात्मा बनाना है तो उसे जीवन में गुणों का श्रृंगार करना चाहिए अवगुणों का नहीं, अवगुणों के श्रृंगार में मृत्यु गर्भित है गुणों के श्रृंगार में जीवन निर्मित है। परमात्मा के गुणों का मूल्य अमूल्य है। परमात्मा के गुणों के सामने कोई भी प्राणी पापियों के अवगुण पसंद नहीं करता। परमात्मा की पसंद सबकी पसंद है परमात्मा की नापसंद सबकी नापसंद है।

अमृत के कुंभ में जहर का झरना नहीं होना चाहिए

हमारा शरीर एक बहुत बड़ी विश्व फैक्ट्री है। यदि हमें शराब लेना हो तो कहीं और जाना पड़ेगा, यदि खून चाहिए तो कहीं और जाना पड़ेगा, यदि सुगर चाहिए तो कहीं और जाना पड़ेगा, और यदि खाना पचाने की हाज़मोला चाहिए तो कहीं और जाना पड़ेगा। यदि हम अपने शरीर पर नज़र डालें तो हमारे शरीर में खून, शराब, सुगर, पाचक वस्तु सभी बनतीं हैं। यदि ये वस्तुएँ हमारे शरीर में नहीं बनतीं तो हमें न जाने कहाँ-कहाँ भटकना पड़ता हम यदि भोजन करते हैं तो भोजन करते समय जैसे अच्छे-बुरे विचार करते हैं उन विचारों से भोजन का सम्बन्ध हो जाता है, बुरे विचारों से भोजन की रस धातु विकृत हो जाती है जिससे उससे बनने वाली अन्य हड्डी माँस खून भी विकृतपने को प्राप्त हो जातीं हैं जिससे पूरा दिन विकृतियों में गुजरता है। यदि रोज ऐसा होता है तो हमारी सारी ज़िन्दगी ज़हर से भर जाती है। अच्छे विचारों के अभाव में हम अमृत कुंभ में ज़हर भर लेते हैं।

यदि हम एक दिन के बाद का रखा हुआ अचार खाते हैं, यदि अधिक दिन का सड़ा अचार खाते हैं तो हमारे शरीर में एल्कोहल बनने लगती है, यदि हम दही और मही (मट्ठा)के साथ द्विदलीय अन्न खाते हैं तो हमारे शरीर में शराब बनने लगती है जो मस्तिष्क को मादकता देती हुई जीवन शैली को नशैली अज्ञानयुक्त बना देती है। यदि हम भोजन के साथ कुछ खट्टा पदार्थ नहीं खाते तो शरीर में पाचक तंतु जागृत नहीं हो पाते परिणाम स्वरूप हमारे अन्दर कई रोग पैदा होने लगते हैं। फिर हम कुछ खट्टापन खाने के लिए हाजमोला या लवणभास्कर चूर्ण खाने लगते हैं विचारों का भोजन पर बहुत ही असर पड़ता है अच्छे विचारों से आचरण भी अच्छा बनता है और शरीर भी स्वस्थ रहता है।

हमारे शरीर में यंत्र तो बहुत हैं लेकिन सुचारु रूप से उन्हें चलाने के लिए हमें बहुत ही कुशल होने की जरूरत है बहुत ही विवेक रखने की जरूरत है। जब हम विवेक रखेंगे तो बाजार की गंदी चीजें जो ठेलों पर चाट-पकोड़े बिकते हैं आप छूना भी पसंद न करेंगे। वस्तु खाते समय विचारिये कि बनाने वाला व्यक्ति अच्छे विचारों का है या नहीं? यदि अच्छे विचारों वाला नहीं है और आप उसकी बनी वस्तु खा लेंगे तो निश्चित है आप अपने अमृत कुंभ में जहर भर लेंगे। क्योंकि भोजन ही नहीं बनाने वाले के विचार भी खाने के अन्दर जाते हैं इसलिए हम सभी को होटलों के भोजन से व मादक पदाथो शराब, सिगरेट आदि से बहुत ही दूर हो जाना चाहिए। तभी हमारे अमृत कुंभ में अमृत भरा जा सकता है और जहर से बचा जा सकता है। अमृत ही जीवन में सात्विकता, सुख, शांति, प्रेम, दया के भाव पैदा कर देता है। जहर इससे विपरीत विचारधारा वाला है। अतः अमृत कुंभ में अमृत ही भरें जहर नहीं।

ज़िन्दगी में फूल खिलाओ काँटे नहीं

इंसान को ईश्वर द्वारा दी गई ज़िन्दगी गुलशन की तरह खिलने के लिए, फूलों की तरह महकने के लिए है, न कि काँटों की तरह जीने के लिए। हर आदमी चाहता है कि मेरा जीवन फूलों सा खिलकर बहारों सा महके लेकिन चाहने से कोई सफलता नहीं। सफलता तो पुरुषार्थ के बल पर मिलती है ज़िन्दगी फूलों सी तभी खिलती है जब जीवन में परमात्मा का आगमन होता है, परमात्मा से मिलन होता है, सही अर्थ में परमात्मा ही इंसान के जीवन को गुलशन बना सकता है वह ही इसमें सक्षम है। लेकिन बनाता उन्हीं का जीवन है जो इंसान परमात्मा को वास्तविकता में हृदय से प्रेम करते हैं परमात्मा को खुश करने का एक ही तरीका है जैसा परमात्मा चाहता है वैसा ही आप अपने आचरण को बनाइये, वैसा ही अपना व्यवहार बनाइये, अपने विचारों को इतना पवित्र बनाइये कि कोई व्यक्ति यदि आपके पास आकर बैठ जाए तो उसको भी पवित्रता की गंध असर कर जाये। हर एक व्यक्ति को मित्र बनाइये क्यूँकि परमात्मा दुश्मन और दुश्मनी दोनों को पसन्द नहीं करता। बहुत द्रव्य चढ़ाने से, उसके गीतों को गाने, धन भेंट करने से परमात्मा खुश नहीं होता परमात्मा तो अंतरंग भावों की पावनता से खुश होता है। इसलिए परमात्मा की आराधना में निर्मलता प्रमुख है। यदि निर्मलता नहीं तो परमात्मा के पास रहकर भी ज़िन्दगी में फूल नहीं खिल सकते काँटे ही खिलेंगे।

दुनियाँ में आदमी जो कुछ भी प्राप्त करता है वह सभी परमात्मा की कृपा से ही करता है जो व्यक्ति परमात्मा की आराधना न करता हुआ परमात्मा के व्यवहार आचरण को ठुकराता है वह दुनियाँ में ठोकरें खाता फिरता हुआ गम में जीता रहता है। जितने भी दुखी आदमी नजर आते हैं ये सभी परमात्मा के द्वारा बताये मार्ग पर नहीं चले थे आज उसकी कुपित नजर से दुखी हैं। हमें आज जो कुछ भी मिला है ये परमात्मा की खुशी का प्रतिफल है हम यदि अपने कर्तव्यों का प्रतिदिन ध्यान रखें तो प्रभु हमारी कुटिया में एक दिन जरूर दर्शन देने आयेंगे। परमात्मा सभी को अच्छी तरह से देख रहा है कि कौनसा आदमी द्रोही है और कौनसा आदमी परमात्मा से वास्तविक प्रेम करता है।

स्व-रसता के बिना सरसता नहीं हो सकती है।

Lucidity can't be without self interest.

सद्भाव से ही जीवन बदलेगा

महर्षियों ने कहा है कि प्राणियों को दुख और सुख संसार की भौतिक वस्तुएँ नहीं देती हैं। ये वस्तुएँ मात्र समागम तक सीमित हैं वस्तुओं में से सुख-दुख की भावना नहीं निकलती हैं वस्तुएँ तो मूक हैं मेरी दुर्भावना से दुख उत्पन्न होता है और मेरी ही सद्भावना से सुख होता है। जब हम सद्भावना से ओतप्रोत हो जाते हैं तो अंदर से एक ही आवाज आती है कि दूसरों का भी कल्याण हो और हमारा भी कल्याण हो केवल हम ही सुखी न रहें सारा संसार सुखी रहे। कोई सामने दुखी नजर आ जाये तो अपना हृदय द्रवित हो जाना चाहिए और यह विचार करना चाहिए कि हम उसकी मदद जरूर करेंगे। शक्ति के अनुसार दूसरों का दुख दूर करना भी सद्भावना है। सद्भावना जीवन में तभी हो सकती है जब हमारा भाव मित्रता का हो - प्रेम का हो - वात्सल्य का हो - धर्म का हो। सद्भावना तभी हो सकती है जब हमारा हृदय दया, करुणा अपनत्व से भीगा हुआ हो। यदि करुणा, दया से हृदय भीगा हुआ नहीं है तो हम कितने भी बड़े दानी बन जायें, कितने भी बड़े पुजारी और भक्त बन जायें, कितने भी बड़े धर्मात्मा बन जायें, सब कुछ दिखावा ही रहेगा, ढकोसला और ढोंग ही रहेगा। दुनियाँ की नजरों में भले ही अच्छे हो जाओ परन्तु परमात्मा की नजरों में तुम गिरे हुये ही रहोगे। इसलिए अच्छे ठाठ बाट से जीवन नहीं बदलता अच्छे सद्भाव से ही जीवन बदलता है।

परमात्मा न तुम्हारे चढ़ाये हुए प्रसाद से खुश होता है, न ही तुम्हारे द्वारा अर्पित किए हुए द्रव्य से, न तुम्हारी दिखावटी क्रियाओं से, न तुम्हारे द्वारा बनवाये गये मन्दिरों से, न तुम्हारे द्वारा स्थापित प्रतिमा से, न तुम्हारे द्वारा दिये गये दान से, न तुम्हारे ठाठ बाट के मकान से, परमात्मा को खुश करने का खुश रखने का तरीका एक ही है वह है सभी प्राणियों के प्रति सद्भाव होना। यदि सद्भाव होगा तो तुम्हारा घर ही स्वर्ग बन जायेगा यदि दुर्भाव रहा तो घर को नरक बनाने वाले हम ही हैं। हम से ही स्वर्ग का निर्माण होता है हम से ही नरक का। यदि हम इस धरती पर जीते जी अपने घर को अपने नगर को अपने देश को स्वर्ग बना सकते हैं स्वर्ग बनाकर रह सकते हैं तो समझना चाहिए तुम स्वर्ग जाने के अधिकारी हो सकते हो और यदि हम स्वर्ग नहीं बना पा रहे हैं तो भूल से भी झूठे स्वर्गवासी होने की कल्पना मत कर लेना वरना रोना पड़ेगा।

धार्मिक क्रियाओं में जो अंतरंग भावात्मक नहीं है उनसे तुम्हें प्रशंसा, ख्याति और स्वर्ग तो मिल सकता है लेकिन परमात्मा आप से खुश नहीं हो सकता है। परमात्मा यदि खुश नहीं तो पूरी दुनियाँ भी खुश हो तो ये

दुनियाँ वीरानी है और परमात्मा यदि खुश है तो जंगल में भी खुशियाँ नजर आतीं हैं। इसलिए महत्वपूर्ण बात यह है कि तुम चाहे कुछ करो, तुम चाहे परेशानियों से गुजर रहे हो, कार में घूम रहे हो, इससे परमात्मा को क्या लेना-देना तुम तो हमेशा सद्भाव रखो। देखा जाये तो यही जीवन का निचोड़ है सद्भाव की जमीं पर सद्भावना के वृक्ष लगते हैं, सद्भावना की डाली पर ही प्रेम-करुणा-दया-धर्म-ज्ञान-सत्य के फूल खिलते हैं। इन फूलों की खुश्बू जब फैलती है तो खुशियाँ ही खुशियाँ उमड़तीं हैं इस खुश्बू के परिवेश में जो भी व्यक्ति आ जाता है वह भी महक उठता है। अतः खुशी की खुश्बू की जननी सद्भावना ही है। सद्भाव से भरा व्यक्ति परमात्मा का ही अंश है परमात्मा और परमात्मा का अंश सभी से आदर पाने योग्य है। इसलिए हम सभी को सद्भाव से जीना चाहिए और दुखी जीवन को खुशमय बनाना चाहिए तभी हमारा जीवन सफल हो सकेगा।

विनय दीनता नहीं प्रवीणता है।

Modesty is not poverty, but it is an art.

अप्रभावना से बचना सबसे बड़ी प्रभावना है।

Biggest dispersal is to keep away from non dispersal.

शास्त्रज्ञान वाक् (वचन) पटुता के लिए नहीं,
स्वाभिमान के लिए होना चाहिए।

Knowledge of scriptwies should not be for the oration
but it should be for ego.

उपदेश जवान से नहीं जीवन से देना चाहिए।

Practice what you preach.

राम को विचारें ही नहीं, जीवन में उतारें

हर आदमी ईश्वर के दर से दो चरण लेकर आता है चरणों को किस दिशा में ले जाना है चरणों से किस तरह का जीवन बनाना है इसके लिए हर मानव को स्वतन्त्र छोड़ दिया है। चरणों से हर इंसान कर्म करता है कोई ऊपर उठकर स्वर्ग जाने को कोई गिरकर नर्क जाने को, यदि कोई व्यक्ति चरणों को आचरण रूप बनाता है तो ये चरण बैकुण्ठ की ओर बढ़ने लगते हैं। यदि दुराचरण अपनाता है तो ये ही चरण विकार की ओर बढ़ने लगते हैं इन चरणों से तीर्थयात्रा करना चाहिए, इन चरणों से गुरुओं की, मात-पिता की सेवा करनी चाहिए इन चरणों को मदिरालय में नहीं मन्दिर में ले जाना चाहिए वरना ये चरण किसी काम के नहीं हैं।

चाहे सम्मेद शिखर जाओ, चाहे सोनागिरि जाओ, चाहे गिरनार पर्वत पर जाओ, सभी जगह आचरण सहित चरणों की पूजा हो रही है। यही कारण है कि राम प्रभु जैसा, हनुमान प्रभु जैसा आचरण पाने के लिए हम लोग मन्दिरों में तीर्थों पर पूज्य चरणों की आराधना पूजा करते हैं। भक्त वे ही हैं जो आचरण सहित हैं भक्तों से भगवान कभी अलग नहीं हो सकते भक्त भगवान का गहन संबंध होता है जैसा कि राम और हनुमान का था।

जब राम ने लंका पर विजय प्राप्त की तो अयोध्या लौटे तब नल, नील, सुग्रीव आदि सभी को अलग-अलग जगहों के राज्य दिये जब हनुमान का क्रम आया और उनसे पूछा कि तुम भी माँग लो क्या माँगना है तो हनुमान ने प्रभु राम से कहा हमें तो आपके द्वय चरण चाहिए तब राम ने कहा हनुमान ही सच्चा भक्त है हमारा पृथ्वी पर यह ही परमात्मा बनने योग्य है। तो आचरण पाने वाला व्यक्ति परमात्मा के चरणों में हमेशा - हमेशा समर्पित रहता है। आचरण विहीन ज़िन्दगी जानवरों के तुल्य है जानवरों में कोई आचरण नहीं होता है न उनका खाने का समय, न सोने का, न उठने का, न पीने का मानव यदि आचरण हीन है तो पशुओं के समान ही है।

राम को अब विचारने की जरूरत नहीं जीवन में उतारने की जरूरत है। विचारने से जीवन नहीं बदलता उतारने से आमूल-चूल जीवन आनन्दमय हो जाता है। यदि हम राम को मानते हैं तो राम के आचरण को छुएँ चरण छूने से विशेष लाभ नहीं होता है। अतः राम जैसा आचरण हमारे जीवन में आये तभी हमारा जीवन मंजिल पा सकता है।

पीड़ा देने के भाव से पेड़ा नहीं मिलते

संसार एक बहुत बड़ा घना जंगल है। और हमारा दिल एक आइने की तरह है जंगल में यदि हम जोर से आवाज लगाते हैं तो ईको की तरह आवाज गूँजकर हमें ही सुनाई पड़ती है। ऐसा ही यह संसार है यहाँ हम जो लोगों को देते हैं लोगों से हम प्रतिफल में वहीं पाते हैं। दुनियाँ ईंट का जवाब ईंट से ही देती है। यहाँ का अकाट्य नियम है जैसे को तैसा। हमने प्रेम बाँटा है, सहानुभूति ही बाँटी है तो सहानुभूति और प्रेम ही हमें लोंगो से प्राप्त होगा। हमने किसी को पीड़ा देने के विचार भी किये हैं तो यह भी सत्य है कि हमें भी वह पीड़ा दे रहा होगा। ये बात अलग है कि हम उसे समझ ना पायें यदि हमने आम का बीज बोया है तो अखरोट नहीं मिलेंगे, यदि हमनें बेशरम की पौध लगाई है तो बादाम के फल नहीं मिलेंगे। हमदर्द बनोगे तो लोग तुम्हारे दर्द में हमदर्द बनेंगे। स्वार्थी के लिए सभी स्वार्थी हो जाते हैं। पीड़ा देने के विचारों से कभी पेड़ा नहीं मिलते।

हर व्यक्ति की ख्वाईश है कि हमें सभी प्रेम करें, हमारी सभी आज्ञा मानें, हमारी सभी प्रशंसा करें, हमारी सभी सेवा करें लेकिन यह विचारने से पहले हमें यह सोचना चाहिये कि हम सभी से प्रेम करें, सभी की प्रशंसा करें, हम सबकी सेवा करें व हम सभी की आज्ञा मानें। हम जो कर सकते हैं उस पर विचार करेंगे तो सफलता मिलेगी दूसरों पर हमारे विचारों को लादा जाएगा तो सफलता मिलना संभव नहीं।

हमारे अंदर सभी जीवों से मैत्री भाव के विचार हों, किसी को हमसे कोई कष्ट न हो, हमारी प्रवृत्ति में अहिंसा धर्म की मुख्यता हो यदि हमारे हजारों दोस्त हैं तो कम हैं यदि एक दुश्मन है तो बहुत है पीड़ा देने से पीड़ा ही मिली है, मिली थी और मिलेगी लेकिन पेड़ा देने पर हमारा हृदय खिलता है आनंद की अनुभूति होती और पेड़ा जैसी सुख शांति महसूस होती है यही धर्म का मूलभूत सार है इसको पाने में ही जीवन की सफलता है।

अपने अवगुण व दूसरों के गुण को
देखना बुद्धिमानी है।

To look for own vices, others virtues, is wisdom.

हृदय को फूल बनाओ शूल नहीं

परमात्मा ने हर आदमी को एक इतना पवित्र स्थान देकर इस दुनियाँ में भेजा है कि जहाँ परमात्मा भी बहुत आराम से बैठकर आनंदित होता है कमल के आकार का सबसे कोमल स्थान वह हृदय है। यदि इस हृदय में हम प्रेम-एकता-ज्ञान-शक्ति के बीज न डाल पाये तो परमात्मा के गुणों का वृक्ष कैसे लगेगा जब वृक्ष ही नहीं होगा तो फलों की कामना करना व्यर्थ है। ऐसा करना तो हास्य के पात्र बनना है। हृदय का मुख्य बीज तो प्रेम हैं, प्रेम के बीज में सारे फूल समाहित हैं और अहंकार के शूल में सारा नर्क गर्भित है दुनियाँ में छोटे से छोटा प्राणी भी प्रेम चाहता है। प्रेम वात्सल्य के कारण फलदायी होता है यदि हम अपने दिल को ही फूल जैसा कोमल न बना पाये तो इस दुनियाँ को किसी कीमत पर हम पसंद नही आ सकेंगे। दुनियाँ में सभी फूलों की कद्र करते है काँटों की नहीं। उसी आदमी को सच्चा इंसान, धार्मिक कहा जाता है जिसका हृदय फूल जैसा कोमल निर्मल है। वह हैवान है जो हृदय को शूल बना रहा है।

हृदय को फूल बनाने के लिये आदमी को परमात्मा की ओर उड़ना पड़ता है, ऊँचाइयों पर नजर डालनी पड़ती है, पुरुषार्थ के पंखों में उड़ान भरनी पड़ती है - शक्ति साहस व धैर्य पैदा करना पड़ता है जबकि शूल बनाने के लिए कुछ नहीं करना पड़ता है।

खेत में चना गेहूँ आदि की फसल लगाने के लिए हमें खेतों को जोतना पड़ता है, सींचना पड़ता है, रखवाली करनी पड़ती है लेकिन घास उगाने के लिये, बेशरम उगाने के लिए, काँटें उगाने के लिए कुछ भी नहीं करना पड़ता है। फूलों की बाजार में बहुत ऊँची कीमत होती है लेकिन शूलों को कोई भी मुफ्त में लेना भी पसंद नहीं करता। जिन इंसानों के दिल फूलों जैसे हैं उन्हें सारी दुनियाँ याद करती है लेकिन काँटों के दिल वालों को घर वाले भी पसंद नहीं करते हैं। अतः हम सभी को धार्मिक स्थान पाकर, धर्म गुरुओं का सानिध्य पाकर, धर्म ग्रंथों को पढ़कर परमात्मा की आराधना करके अपना हृदय फूल जैसा बनाना चाहिए न कि शूल जैसा। तभी हम इंसानियत के योग्य बनकर सुख शांति पाने में सफल हो सकेंगे।

अकड़ना नहीं झुकना सीखो। सुई बनो कैंची नहीं।

Learn to bow not to rigid, be a needle not scissors.

सम्मान देने से सम्मान मिलता है अहंकार से नहीं

मान की बहुलता होने से ही आदमी का नाम मानव पड़ा। मानवता मानव का परम धर्म है हर आदमी सम्मान पाने के लिये पूर्णरूप से तैयार बैठा है यदि कई रूपये खर्च होते हैं और सम्मान मिलता है तो कई लोग पैसों से सम्मान खरीदते है लेकिन यह सम्मान लेने से नहीं हुआ है देने से ही मिला है कई लोग सम्मान लेने के लिए तत्पर रहते हैं लेकिन देने के लिए नहीं ऐसे लोग अहंकारी होते हैं। वस्तु लेने से नहीं देने से वृद्धि को प्राप्त होती है। कहते भी हैं तू एक पैसा देगा वो दस लाख देगा गरीबों की सुनो वो तुम्हारी सुनेगा। यहाँ एक पैसा देने से ही रूपया प्राप्त होगा। ठीक ऐसे ही यदि हम चाहते हैं कि मेरा सम्मान सभी लोग करें या अधिक लोग करें तो पहले हमें देना सीखना चाहिए। सम्मान पहले देकर पाने की आशा करना तो ठीक लगता है लेकिन अहं से सम्मान पाना दूसरों के दिलों को जीतना नहीं हैं।

यदि हम अपना सम्मान दूसरे को दे देते हैं अपना श्रेय दूसरे को दे देते हैं तो हमारा सम्मान दूना हो जाता है। यदि चार लोगों को दे दें तो हमारा ही सम्मान चार गुना हो जाता है। यदि सारी समाज को अपना श्रेय दे दें तो हमारा सम्मान सौ गुना हो जाता है। सम्मान पाने में हम दूसरे से अपेक्षित हैं देने में हम स्वतंत्र हैं। हम उन्हीं का दिल जीत पाते हैं जिनको हम अपना दिल अर्पित कर देते हैं एक लड़की ससुराल में मालकिन तभी बन पाती है जब वह सर्वस्व अर्पित कर देती है।

हम जितना - जितना प्रेम बाँटते हैं हमें उतने - उतने लोग ही प्रेम करने लगते है अतः दुनियाँ में जो सत्य नजर आता है वह परम सत्य यह है कि जैसा दोगे वैसा ही पाओगे। अतः हम सभी आपस में मेल मिलाप से, प्रेम पूर्वक एक दूसरे का यथा योग्य आदर करते हुए रहें तभी हमारा जीवन आनंदित होता हुआ सही पथ पर सम्मान प्राप्त कर सकता है।

विज्ञान प्रदर्शन तो दे सकता है मगर दर्शन नहीं।

Science can give show off but not philosophy.

विज्ञान विद्या तो दे सकता है बुद्धि नहीं।

Science can give education but not logic.

जीवन को तमाशा नहीं तीर्थ बनाओ

दुनियाँ में रहते-रहते जब आदमी हताश हो जाता है तो जो व्यक्ति कुछ धर्म समझता है वह तीर्थ करने की सोचने लगता है और यदि अधार्मिक हो तो पिकनिक पर जाने की सोचने लगता है। तीर्थ पर जाकर भी कई लोग पिकनिक मना लेते हैं और कई लोग तीर्थ पर शांति को खोजने के लिए जाते हैं। घर - दुकान के विकल्पों से रहित होकर तीर्थ वंदना करते हैं तो शांति स्वाभाविक ही अपने अंदर से प्रकट होती है और वह समझता है कि तीर्थ पर शांति मिलती है। तीर्थ करने का मतलब सिर्फ इतना ही है कि हमारे जीवन में साधुता उद्घटित हो यदि तीर्थ करके भी हमारा जीवन तीर्थ न बना तो तीर्थ जाने से क्या लाभ है? जीवन तीर्थ तभी बनता है जब हम तीथकर का समागम करके उनकी हृदय से आराधना करें, उनके गुणगान करें, यदि तीर्थंकर का समागम न मिले तो उनके लघुनंदन दिगम्बर संत एक चलते फिरते तीर्थ हैं उनके समागम से हम अपने जीवन को उज्ज्वल बना सकते हैं। हमारे अंदर दया, अहिंसा, अपरिग्रह, संयम, आराधना के भावात्मक आचरण होंगे तो हमारा जीवन ही तीर्थ बन जाएगा।

जिस स्थान से महापुरुष तीर्थंकर मोक्ष को प्राप्त हुए वह स्थान तीर्थ कहलाता है लेकिन मुनि श्री एक नई परिभाषा ईजाद करते हुए कहते हैं कि जिसके सामने हमारे परिणामों में निर्मलता पैदा हो वह तीर्थ है फिर वह चाहे माता-पिता हो, मित्र हो, भाई हो या कोई संत हो। जीवन तीर्थ बनेगा तो हमारी ज़िन्दगी की बूँद दरिया में मिल जाएगी और दरिया एक दिन संमदर में मिल जाएगा। समंदर में मिलते ही हमारी ज़िन्दगी महासागर बन जाएगी जहाँ शांति, सुख, निर्भय, शक्ति सभी गुण प्राप्त हो जाएँगें। यदि हम दरिया में न मिल सके तो हमारा जीवन गंदे नाले में बह जायेगा, संसार के विषय भोगों मे बह जाएगा और तमाशा बन जाएगा। अतः हम अपने जीवन को तमाशा नहीं तीर्थ बनाएँ।

दूसरों को जीतना सरल है स्वयं को जीतना कठिन।

It is easy to win others but difficult to win own self.

आँखे टार्च है कान दिये की तरह है।

Our eyes are torch, our ears are just like a lamp

तन की दवा धन है, चेतन की धर्म

हर आदमी का हर संभव प्रयास यही रहता है कि मैं हमेशा ही स्वस्थ रहूँ कभी भी मुझे कोई रोग न हो यदि थोड़ी सी भी कोई पीड़ा पैदा हो जाती है तो आदमी उसका उपचार तुरन्त करना चाहता है। तन की अस्वस्थता को हम डॉक्टरों के पास जाकर ठीक कर लेते हैं, दवाएँ खाकर ठीक कर लेते हैं लेकिन जब दिल ही अस्वस्थ हो, मन ही टेंशन में हो, तब डॉक्टर का उपचार भी नाकाम हो जाता है और यह बात बिल्कुल सत्य है कि मानसिक और हृदय की अस्वस्थता से शरीर में कई रोग स्वतः ही पैदा हो जाते हैं। हृदय की स्वस्थता शरीर के कई रोग ठीक कर देती है। कहते भी हैं कि ''हँसना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है'' यहाँ हँसने से मतलब प्रसन्नचित्त रहना है। तन का उपचार तो हम धन के द्वारा समुचित करा सकते हैं लेकिन चेतन का उपचार केवल संतों के समागम से और संतों के द्वारा हो सकता है क्योंकि धर्म की किरणें संतों के हृदय से ही प्रस्फुटित होती हैं। हृदय और चेतन की दवा वास्तविक धर्म है।

हम तन की दवा को चेतन से पी रहे हैं। विषय भोगों में, धन कमाने में, व्यापारों में हम तन्मयता से लगे हुए हैं उसे कर्तव्य समझते हैं और सांसारिक कार्यों में पूरा मनोयोग एकाग्रचित होकर लगाते हैं। लेकिन जब मन्दिर व संतों के पास जाते हैं तो मात्र औपचारिकताएँ करके उसे धर्म समझ लेते हैं और बाद में कहने लगते हैं कि धर्म करके भी हमें सुख नहीं मिल पाया। चेतन की दवा धर्म थी उसे तन की दवा की तरह उपयोग करते हैं यही हमारी भूल और सबसे बड़ी अज्ञानता है।

मानव जीवन का सार है तो वह है सत्यज्ञान को उपलब्ध होना यह ज्ञान ही अदृश्य सत्य की अभिव्यक्ति करा देता है और आचरण को मोक्ष जाने के योग्य बना देता है। सत्य ज्ञान न होगा तो हम तन और चेतन की दवा का सही सदुपयोग नहीं कर पाएँगे और ज्ञान भी अगर हो गया तो जब तक उस दवा का जीवन में सेवन न करेंगे तो दवा भी ठीक नहीं कर पाएगी। इसलिए कर्मों का क्षय करने के लिए ज्ञान ही नहीं, ज्ञान के साथ सही चारित्र की भी जरूरत है। अतः हम सभी सत्य ज्ञान को पाकर धन और धर्म दोनों का सदुपयोग तन और चेतन के लिए करें तो हम अपने जीवन को उज्ज्वल बनाकर महाज्ञान को उपलब्ध हो सकते हैं यही तो जीवन का लक्ष्य है।

गरीब समाज कभी भी धार्मिक नहीं हो सकता।

Poor society can never be religious.

तिरने के लिए फेरे नहीं, परिक्रमा लगाओ

दुनियाँ में हर आदमी संसार के फेरों से निरंतर दुखी है, किसी के सात फेरे लग जाते हैं तो फेरों से दुखी है, और जिसके सात फेरे नहीं लगे हैं, वह फेरों को लगाने के लिए आतुर होने के कारण दुखी है। सात फेरे लग जाने के कारण लोग एक दूसरे के पीछे ज़िंदगी भर फिरते रहते हैं। संसार में जन्म संतति को बढ़ावा मिला है तो इन फेरों के द्वारा ही मिला है, सात फेरे संसार में फिरने के लिए ही लगाये जाते हैं, फेरे संसार में डुबाने के लिए हैं तिराने के लिए नहीं। फेरों के चक्कर में व्यक्ति की बुद्धि का ह्रास और शारीरिक शक्तियाँ कमजोर होने लगती है, निर्णय करने की क्षमता ओर मानसिक योग्यताएँ दुर्बल होने लगतीं हैं, ज़िंदगी भर पिरने वाले फेरो का नतीजा पाते हैं। जब शादी के फेरे होते हैं तो छः फेरों में स्त्री आगे पुरुष पीछे होता है और सातवें फेरे में वह पीछे होकर पुरुष को आगे कर देती है, नरक और दुर्गति जाने का माध्यम फेरे ही हैं। यदि फेरे की जगह परमात्मा के दर की परिक्रमा लगाने लगे तो भव-भव के फेरे ही मिट जायें। परिक्रमा वह व्यक्ति लगाता है जिसे दुनियाँ में फिरना नहीं है, दुनियाँ के फेरे से ऊपर उठकर तिरने की कला सीखना है परिक्रमा लगाना। प्रभु दर की परिक्रमा से संसार परिभ्रमण समाप्त हो जाता है और व्यक्ति परमात्मा की तरफ उठने लगता है।

परमात्मा के दर की परिक्रमा कम से कम तीन तो लगाना ही चाहिए जो जन्म, जरा, मृत्यु समाप्त करने के संकेत प्रदर्शित करती हैं, अधिक से अधिक कितनी ही लगा सकते हैं, सात फेरे दोनों के अंदर सात भय पैदा करने वाले होते हैं। जबकि परिक्रमा हृदय को परिवर्तन करने वाली होती है। परिक्रमा इस भव में भी आनंद देती है। और परभव में भी आनंद देती है, सात फेरे लगाते समय इंसान में अकड़ होती है, लेकिन परिक्रमा लगाते समय इंसान में अकल होती है। उस समय वह विनम्रता से भरा हुआ होता है। फेरों के फेर में फिरना ही फिरना है, परिक्रमा के घेरे में तिरना ही तिरना है। सात फेरों के बाद फिकर ही फिकर है, फिकरों का जिकर है। परिक्रमा के बाद इंसान निष्फिक्र है, निश्चिंत है। सात फेरों से असत्य पनपता है परिक्रमा से सत्य अभिभूत होता है।

हम शिखर जी जाते हैं, सोनागिरी जी जाते हैं, अथवा अन्य तीर्थो पर जाते हैं। तो वहाँ भगवान के साथ मंदिरों की भी परिक्रमा लगाते हैं ओर कभी कभी मंदिरों के साथ पूरे तीर्थ क्षेत्र की ही परिक्रमा लगाते हैं। कभी - कभी पंचकल्याण होते हैं, वहाँ भी उस स्थान की अंत में सात परिक्रमा लगाते हैं, तीर्थंकर भगवान का जन्म होता है तब भी इन्द्र भगवान के गृह की तीन प्रदक्षिणा

करता है। हम कभी मुनि श्री का आहार के समय पड़गाहन करते हैं तो गृह में ले जाने के पूर्व तीन प्रदक्षिणा लगाते हैं, ये प्रदक्षिणा निर्मल परिणाम और भक्ति का प्रतीक हैं। भव बंधन से छूटने का प्रतीक हैं। अतः हम सभी को संसार के फेरों से बचने के लिए प्रभू की प्रदक्षिणा प्रतिदिन लगाना चाहिए। जिससे हमारा परिभ्रमण मिट सके और जीवन सफल हो सके।

सम्प्रदाय का अर्थ है मार्ग, धर्म का अर्थ है मंजिल।

Meaning of a commumity is path and meaning of religion is destiny.

असत्य बुरा ही होता है सत्य को बुरा किया जा सकता है।

Untruth is really bad, but truth may be twines too.

रूढ़िवादिता का बहिष्कार करके ही सत्य के महल पर पहुँचते हैं।

We can reach to the palace of truth by discarding conservatism.

अहं के शिखर पर आँखों की रोशनी चली जाती है।

Eye sight lost is on extremes of proud.

आलस अमावस की रात है तो पुरुषार्थ है पूनम की चाँदनी।

If idleness is a no moon night then exertion is the moonlit night.

सत्य कड़वा नहीं होता, कड़वा लगता है

हर आदमी की हसरत है कि सत्य हमें नसीब हो जाये सत्य पाने के लिए हम प्रयत्नरत रहते हैं। सत्य हमारे जितना नजदीक है उतना असत्य नहीं, सत्य को पाकर हम दुनियाँ में ज्यादा नहीं रह सकते लेकिन असत्य को पाकर हमारा दुनियाँ से कभी अंत नहीं हो सकता। दुनियाँ में रहने का दुनियाँ में भटकने का निर्माण असत्य ही करता है। इंसान को भगवान बनाने में यदि मुख्य हाथ है तो वह सत्य का ही है, असत्य का हाथ शैतान बनाने में है। हम सत्य को हासिल कर लें तो हमारी ज़िंदगी गुलशन बन जाये। यदि हम असत्य से अपनी ज़िंदगी भर लें तो हमारी ज़िंदगी वीरान खण्डहर बन जाये। सत्य ज़िंदगी के प्रति हमारा जिम्मेदारी भरा दायित्व है असत्य है, मोह की निद्रा में डूबना, सत्य स्वतंत्रता की प्रयोगशाला है जो संत के जीवन में दिखाई देता है, असत्य संसार की नाट्यशाला है जिसे संसारी लोग अभिनय के द्वारा बताते हैं। यदि हमारा जीवन अपनी अस्मिता, अपनी जागरुक अवस्था में है तो सत्य ओसानी से हासिल हो सकेगा अन्यथा असत्य हाथ लगेगा, संत हमेशा सत्य के पीछे दौड़ता है और जो संत के पीछे दौड़ते हैं वो सत्य के उपासक होते हैं। सत्ता वह है जो सता-सता कर मिले तथा मिलने पर सताया जाये और सत्य जिसके हृदय में नसीब हो जाता है उसके जीवन में सद् व्यवहार, सदाचार, सच्चरित्र, प्रेम, भाईचारा, करुणा, धार्मिकता, स्वयमेव ही प्रकट हो जाते हैं, लोग कहते हैं कि सत्य कड़वा होता है, यह बात सर्वथा सत्य नहीं हो सकती, यदि सत्य कड़वा होता है तो सभी को कड़वा लगना चाहिए, भगवान राम, भगवान हनुमान, भगवान महावीर पूर्णतः से सत्यता को प्राप्त हो चुके हैं, क्या लोगों को वे कड़वे लगते हैं? नहीं लगते सभी को अच्छे लगते हैं उनके बनाये सिद्धांत सभी पसंद करते हैं, सभी चाहते हैं कि मेरा पुत्र राम - हनुमान- महावीर जैसा बने तो फिर सत्य को कड़वा कहना गलत है। सत्य कड़वा उन्हें लगता है जिनके हृदय में अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, मान, क्रोध, वासनाएँ, लोभ, माया भरी हुई हैं ऐसे लोगों को 108 डिग्री फीवर होता है, जिससे सत्य जैसा मौसमी का रस कड़वा लगता है, वास्तव में सत्य (मौसमी का रस) कड़वा होता नहीं है।

सत्य हमसे ज्यादा दूर नहीं हम ही सत्य से दूर भाग रहे हैं, सत्य हमसे दूर इसलिए है कि हम अच्छाई-बुराई और मेरे-तुम्हारे से जुड़े हुए हैं। अच्छाई कुछ और नहीं हमारी मर्जी के मुताबिक होने वाला कार्य है, मर्जी के मुताबिक न हो तो वह बुराई में तब्दील हो जाता है और मेरापना जीवन में अच्छाई और बुराई को पैदा करने वाला है। यदि हम अच्छाई बुराई और मेरे पने से दूर हट

जायें तो सत्य हम ही नजर आयेंगे, लगेगा हमसे बड़ा सत्य दुनियाँ में है ही नहीं, सत्य पाने के लिए भागने की जरूरत नहीं अपने आप में उतरने की जरूरत है। पराई वस्तुओं का कचरा जब हट जायेगा तो साफ सुरक्षित सत्य ही बचेगा जैसा होना वैसा कहना ही एक अपेक्षा से सत्य है। आँखों से दिखने वाला सभी सत्य हो यह कोई जरूरी नहीं है, कानों से सुना हो वह भी असत्य हो सकता है, मुँह से बोला हुआ आज के लिए सत्य कल के लिए असत्य हो सकता है। सत्य विराट है जो विशाल हृदय में ठहरता है, दीवारें खड़ी करने वाले हृदय में नहीं ठहरता है, सत्य कमरे में बंद होकर खिड़की में से झाँकने पर नहीं मिलता, चूंकि खिड़की में से थोड़ा सा आकाश दिखाई देता छत पर खड़े होकर आकाश पूरा दिखाई देता है। सत्य सम्पूर्ण हो देखना है न कि एक अंश को देखना।

सत्य तीसरी आँख में पलता है, इन मिट्टी की दो आँखों से नजर नहीं आता। ये मिट्टी की आँखों में वह क्षमता नहीं कि सत्य को देख लें, सत्य देखने से नहीं परखने से मिलता है, सत्य पकड़ने से नहीं भीतर में झाँकने से मिलता है। दुनियाँ में हम लोग तब तक मरते रहेंगे जब तक असत्य को पकड़े रहेंगे। सत्य हमारा साम्राज्य है। असत्य हमारा वीरान इलाका। सत्य में हमेशा हितोपदेश है स्वार्थ सिद्धि नहीं। शोधार्थी - बोधार्थी की तरह तन्हाई में सत्य की झलक नजर आती है शोधार्थी चलेगा तो सत्य झलकेगा, बैठेगा तो सत्य झलकेगा, बोलेगा तो सत्य झलकेगा वह सोचेगा तो सत्य झलकेगा यहाँ तक कि वह खायेगा तो भी सत्य सामने नजर आयेगा। सत्य प्रकृति रूप है। यदि हम प्रकृति रूप हो सकते हैं तो सत्य हम ही हो जायेंगे। राम का नाम ही सत्य है राम हम ही हो सकते हैं यदि राम प्रभु जैसे आचरण करें उन्होंने जो पाया हम उसे प्राप्त कर लें। जब कोई व्यक्ति जैसा राम ने किया था अंत समय तपस्या की थी। घर छोड़कर जंगल में निवास किया था वैसा नहीं करता घर में ही रावण की तरह मर जाता है तो अर्थी पर ले जाते समय उसे सभी लोग मिलकर के सुनाते हैं कि रामनाम सत्य है। तूने यह नहीं माना तू ठीक आदमी नहीं है जो रामप्रभु की तरह दुनियाँ से जाता है उसे अंतिम समय में राम नाम सत्य है यह नहीं सुनाते हैं। अतः सत्य हम बहुत शीघ्र पा सकते हैं यदि हम जीवन को फूलों जैसा खिलाते हुए हृदय को विराट बना लें।

गैरों के दोष देखना पाप है।

It is a a sin to look the demerits of others

परमात्मा से पदार्थ नहीं परमार्थ माँगो

जब - जब जहाँ में आकर हम कोई व्यवहार को अपनाते हैं, कोई आचरण को अपनाते हैं तब - तब उसके प्रतिफल में कुछ न कुछ हम चाहते जरूर हैं चाहे फिर वह व्यक्त रूप में हो या अव्यक्त रूप में हो। फिर चाहे वह परमात्मा की आराधना हो या किसी तरह का व्यापारिक कार्य, कोई भी जीव हो, चाहे देव हो, जानवर हो या कोई इंसान सभी कुछ अभिलाषा से युक्त हैं। अभिलषित हृदय होना बुरा नहीं है लेकिन अभिलाषा में दुखोत्पादक वस्तुओं का होना बहुत बुरा है, हम कोई भी व्यापार करते हैं, आराधना करते हैं तो दुख पाने के लिए नहीं सुख पाने के लिए करते हैं। फिर सुखोत्पादक वस्तुओं को ही अभिलषित किया जावे। प्रभु सब कुछ देने में समर्थ हैं। अतः परमात्मा से पदार्थ नहीं परमार्थ को माँगना चाहिये।

परमात्मा परमार्थ देगा तो हमें सुख की उपलब्धि होगी और परमात्मा से पदार्थ मिलेगा तो उसे सँभालने की चिंता होगी। परमार्थ अपने अंदर से प्रकट होता है और वह अदृश्य है कभी खो भी नहीं सकता और चोरी भी नहीं हो सकता। पदार्थ खोयेगा भी, नष्ट भी होगा और चोरी होने का भय भी है। इसलिए पदार्थ से दुख ही मिलेगा। दुख का पदार्थ के साथ अविनाभावी संबध है जैसे राग का कर्मों के साथ संबंध है।

परमात्मा देने वाला है। देने वाले को मात्र देना है खरीदने वाले को या लेने वाले को बहुत सोच समझकर लेना है कि हमें क्या लेकर सुख शांति मिलेगी। और क्या लेकर दुखों का जखीरा मिलेगा। सूरज धूप देता है और अब धूप लेने वालों को ध्यान रखना है कि हमें धूप लेना भी है या नहीं, बादल पानी बरसाते हैं अब लोगों को ध्यान देना है कि पानी हमें घर में भरना है या बाहर निकाल देना है। अतः हम सभी आराधना करें साधना करें लेकिन परमार्थ पाने की भावना करें पदार्थ पाने की कामना नहीं। तभी जीवन सुख शांतिमय हो सकता है।

भलाई में मिलेगी भलाई तो बुराई में मिलेगी पिटाई।

Kindness breeds kindness and wickedness breeds battery.

पहले स्वयं को सुधारो फिर दूसरों को।

Mend your self before amending others.

हमारी ललक में मंज़िल हो और झलक में महात्मा

हम अपने जीवन पर एक नजर डालें तो हमारा व्यवहार दूसरे लोगों के व्यवहार से भिन्न निकलेगा यहाँ तक कि विचार भी भिन्न निकलेगा एक माँ के चार पुत्रों का व्यवहार भिन्न - भिन्न है। चार संतों का या चार स्त्रियों के विचारों में सामंजस्य नहीं है। भोजन भले ही एक तरह का है लेकिन दस लोगों के खाने के तरीके अलग - अलग हैं। यदि हम इसके भीतर झाँककर देखलें तो पायेंगे कि सभी की ललक में बदलाव है, क्रिया एक सी होने पर भी व्यवहार एक सा होने पर भी ललक में अंतर हो सकता है। जानने योग्य बात यह है कि ललक के आधार पर ही हमारा मस्तिष्क सक्रिय-निष्क्रिय होता है। हमारे हाथ पैर ललक के आधार पर ही हिलते डुलते हैं, पूजन या स्वाध्याय के क्षेत्र में हमारी ललक न होने से हम उस ओर आकर्षित नहीं हो पाते हैं और चुनाव परिणाम, व्यापार, बुराईयों के क्षेत्र में हमारी पूर्व ललक है। इस कारण ही आचरण की झलक का निर्माण होता है, मनोविज्ञान में इसी ललक को व्यक्तित्व कहा है और झलक को व्यवहार।

ललक के प्रकार अनगिनत हैं। इस कारण सभी के चेहरे और स्वभाव कभी भी एक से नहीं मिल सकते। यदि हमारी ललक में वासना है तो आँखें व कदम स्त्रियों की ओर स्वयमेव ही दौडेंगे, यदि हमारे अंदर अच्छे वस्त्रों की ललक है, तो झलक कपड़ों की दुकान की ओर दौड़गी, पढ़ने की ललक है तो पुस्तकों की ओर झलक होगी यदि प्यास की ललक है तो पाँव पानी की ओर दौड़ने लगेंगे। हमारा सारा भविष्य ललक की नींव पर ही निर्मित होगा। यदि हमारी ललक में शांति सुख-ज्ञान-दर्शन की झलक नहीं होती है तो इसे ही हम झूठ,फरेब या मायाचारी कहते हैं। मायावी लोग दुनियाँ में बहुत हैं लेकिन वास्तविक लोग विरले ही देखने को मिलते हैं, ललक में भ्रम व सम दोनों ही हो सकते हैं भ्रमित ललक दुनियाँ के कार्यो में सुख शांति महसूस करने लगती है, उसी में सारा जीवन खपाने लगती है और सम्यक् ललक परमात्मा के स्वभाव को देख लेती जहाँ शांति-सुख झलकने लगता है।

वास्तविक ललक में हमारी तीसरी आँख सक्रिय हो जाती है सत्य की ललक में हमें हर जगह परमात्मा दिखने लगता है, सत्य की ललक से जो झलक प्रवाहित होती है वहाँ जीवंत मंदिर निर्मित हो जाता है। मतलब है कि वह संत होकर स्वयं ही मंदिर बन जाता है सत्य की ललक ज्ञान के द्वारा पैदा होती है। सत्य का उद्घाटन झूठी ललक का पर्दाफाश करने पर होता है। सत्य की झलक जीवंत शास्त्र का उदाहरण है। भगवान महावीर - राम - हनुमान ये सभी सत्य की झलक की परकाष्ठा पर पहुँचे तभी आज तक हम लोग इन्हें श्रद्धा से पूजते हैं मेरे अंदर भी सत्य के सूर्य का उदय हो नया प्रभात हो और ज़िंदगी में परम् शांतरस प्राप्त हो ऐसी भावना प्रतिफल करनी चाहिए। अतः हम सभी अपनी ललक इतनी सुंदर व पवित्र बनायें कि उससे जो झलक में फूल निकले उनकी खुश्बू से सारा गुलशन महक उठे तभी जीवन सफल हो सकता है।

हम वो करें जो सबको पसन्द हो

जरा सी ज़िंदगी में भी हम सभी आकांक्षाओं से भरे हुए हैं कि हमें जगत के सारे लोग पसंद करें यह बात पूर्णतः सत्य है कि लोग व्यक्ति को पसंद नहीं करते उसके व्यक्तित्व को पसंद करते हैं। व्यक्तित्व से ही सारा प्रेम सम्बन्ध है, व्यक्ति व्यक्तित्व को अपने आप में समाहित किये हुए है। व्यक्तित्व बल्ब की रोशनी की तरह है अथवा दिये की ज्योति की तरह है, बल्ब और दिये की कीमत रोशनी के कारण है, यदि बल्ब में रोशनी व दिये में ज्योति न हो तो ये कचरे घर में फैंक दिये जाते हैं। हमारा व्यक्तित्व ही भविष्य के लिए यादगार बनता है, हमारा अंतरंग विचार ही ज़िंदगी के आचरण में उद्घटित होता है। हमारे करने पर ही हमारा भविष्य बनता है। भविष्य के लिए वर्तमान जीवन ही निर्माणक है। अपने जीवन में यदि हम सबको अपनी ओर आकर्षित करना चाहते हैं तो हम वही आचरण को अपनायें अथवा हम वही करें जो सबको पसंद आये, सभी जिसकी प्रशंसा करें।

जीवंत आचरण चिरंजीवंत के उद्घोषक हैं। जीवंत आचरण वह नहीं जो किसी को देखकर अपनाया गया हो। जीवंत आचरण वह भी नहीं जिसे पढ़कर अपनाया गया हो। जीवंत आचरण वह है जिसे अनुभव करके, जीवन में उतारा गया हो। हम किसी दूसरे को देखकर या पढ़कर जीवंत हुए हैं तो हमारा जीवंतपना उधार है, पराया है। यदि हम स्वयं को देखकर या देखने वाले को पढ़कर जीवंत हुए हैं तो यह निजी जीवंतता है। महावीर- राम- हनुमान इसी जीवंतता को महत्व देते हैं। यही जीवन को अमृत बना देती है। हमारी ललक में मंज़िल और झलक में सम्यक् आचरण हो तो वर्तमान में हम एक बहुत ही आकर्षण विज्ञापन की तरह हो जाते हैं। ''हमारी आँख खोजी और चरण मौजी'' हो जायें तो हमारा प्रयाण परमात्मा की ओर स्वयं ही गतिमान होने लगता है।

स्वयं के अस्तित्व को भूलकर हम यदि परमात्मा को मन्दिर में, मस्जिद में, गुरुद्वारे में अथवा तीर्थों पर खोजने के लिए जायें तो यह हमारी धमांधता होगी। यदि हमारे अन्दर धर्माचरण नहीं तथा स्वयं के परमेश्वर को भूलकर हम परमात्मा के गीत गायें तो यह मात्र मनोरंजक भजन ही होगा, भव भंजक भजन नहीं। यदि हम वह कार्य करेंगे जो केवल हम ही पसंद करते हैं तो आप ही अपने आपको पसंद करने वाले होंगे अन्य कोई आपको पसंद नहीं कर सकते हैं। हमारा अच्छा कार्य सभी लोग पसंद करते हैं क्योंकि सभी लोग दिल से अच्छा होने का ख्वाब रखते हैं। इसलिए अच्छा सब पसंद करते हैं यदि हम वही करें जो सबकी पसंद हो तो हमें सभी प्रेम करेंगे। सभी की भावनाएँ हमसे जुड़ेंगीं ओर हमारा सभी से सभी का हमसे मैत्री भाव संबंध स्थापित होगा। जो परम धर्म माना जाता है। इस भावना के बल से ही हमें सत्यता हासिल हो जाती है। भगवान के साक्षात् दर्शन हो जाते हैं हमें अपना अस्तित्व नजर आने लगता है। यहीं से जीवन की सफलता का पथ स्पष्ट दिखाई दे जाता है और हम अपने भविष्य को सफल बना लेते हैं।

हंस ही हँस सकते हैं कंस नहीं

गम भरे संसार में आकर, दुनियाँ के कार्यों को अपनाकर अच्छे बुरे कायों में रमकर कोई व्यक्ति हँसने की हिम्मत रखे तो उसकी परम् भूल ही समझना चाहिए। हँसना उतना आसान नहीं है जितना गम के साथ जीवन आसान है। गम से युक्त दुनियाँ में हँसकर जीने के लिए परमात्मा जैसा ज्ञान और भगवान राम जैसा विशाल हृदय चाहिए जो ज्ञान के बल से वस्तु के वास्तविक तत्त्व को समझें और सार – सार ग्रहण कर लें। ऐसे लोग ही हंस जैसे हो सकते हैं हंस दूध पीते समय सार – सार मुँह में भर लेता है और दूध के पानी को बाहर छोड़ देता है, सत्य का पारखी पत्थर में हीरे की तलाश कर लेता है, हंसों को दूध के मामले में कोई ठग नहीं सकता है। ठीक वैसे ही हंस की तरह ज्ञानी संत लोग हैं जो अपनी ज़िंदगी को खिलखिलाती बना सकते हैं, लेकिन कंस जैसे मूर्ख अहंकारी लोग अपने अहं की पुष्टि में लगे रहते हैं और ज्ञान नहीं होता है। अतः हंस ही दुनियाँ में खुलकर हँस सकते हैं, कंस नहीं।

हँसना भी जिंदगी में एक बहुत बड़ी और अद्भुत कला है। जिसने हंस की तरह हँसना सीख लिया है वह एक दिन परमात्मा से अवश्य साक्षात्कार करता हुआ स्वयं ही परमात्मा बनेगा। तिर वही सकता है जिसमें तिरने की कला हो, खुश वही रह सकता है जिसमें हँसने की कला हो, जो असत्य के परिवेश में सत्य की झलक अपनी दिव्य दृष्टि से प्राप्त कर सकता हो। लेकिन यह ध्यान देने योग्य बात है कि यह अर्न्तदृष्टि अंतरात्मा से परमात्मा के आशीष द्वारा ही प्राप्त होती हैं। हँसता हुआ जीवन कीचड़ में कमल की तरह है। कमल हर किसी को प्यारा होता है परन्तु कीचड़ से कोई रंच भी प्रेम का इज़हार नहीं करता। हँसना कमल जैसा जीवन है।

प्रसन्नचित्त मुद्रा धर्म का प्रतीक है। संत और श्रावक में इतना ही अंतर है कि संत हँसता हुआ खुशहाल होगा श्रावक फँसता हुआ चिंतित होगा। हंस ही परमात्मा को पाकर परमहंस बन सकते हैं लेकिन कंस जैसे लोग परमात्मा को पाकर विध्वंस कर सकते हैं। हँसता हुआ जीवन खिले हृदय का व स्वस्थता का सूचक है। कहा है – ''हँसो तो दुनियाँ साथ हँसेगी, बैठ अकेले रोना होगा।'' हमारी प्रसन्नता में सारी दुनियाँ भी हँसकर हमारा साथ निभाएगी लेकिन यदि हम रो उठे तो कोई सांत्वना देने वाला भी न मिलेगा यदि कोई मिल भी गया तो उसके पीछे कोई स्वार्थ छिपा होगा। अतः हम सभी हंस की तरह ज्ञानी बनें, कंस की तरह हठाग्रही अज्ञानी नहीं तभी हम कुछ पाने में सफलता पाकर अपने जीवन को प्रसन्नचित्त करके सफल कर सकते हैं।

●●●

सत्य का बीज साधनों में नहीं, साधना में फलेगा

दुनियाँ में ऐसा है कौन? जिसके पास बहुत बड़ा उपजाऊ खेत हो और यह नहीं चाहता हो कि हमारे खेतों में अनाज की फसल न लहलहाये? शायद कोई नहीं होगा। यदि हम खेतों में अनाज लगाना चाहते हों तो यह पूर्णतः सत्य है कि बहुत ही श्रम करना पड़ेगा बहुत ही सुरक्षा करनी पड़ेगी और यदि घास और बेशरम के पेड़ लगाने हों तो परिश्रम करने की जरूरत नहीं है। ठीक इसी प्रकार यदि हमें निश्चित अपनी पौध लगानी है सत्य के बीच को फलीभूत करना है तो हमें निश्चित अपना ये जीवन कर्तव्यशील साधना युक्त निरन्तर सजग और जागृत बनाकर जीना होगा। सत्य का बीज पाने के लिए सत्य बीज भण्डार से अनुबंध करना पड़ेगा। उसकी दुकान पर जाना पड़ेगा और यदि हम सही जानकार होंगे तभी हमें वह बीज मिल सकेगा यदि हम गलत दुकान पर भी पहुँच गये तो भी हमें बीज नहीं मिल सकेगा। सत्य का बीज सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में मिलेगा अन्य कहीं नहीं मिल सकता है। यदि हम भव्य जैसे योग्य होंगे तो बीज को पा सकने में कामयाब हो जायेंगे वरना कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। सत्य का बीज हम असत्य वस्तुओं में श्रम करके नहीं पा सकते सत्य का मूल सांसारिक साधनों में नहीं जीवन के वास्तविक अनुभवों से गुजरकर आत्मसाधना में है। साधना जीवन की वह चरम अवस्था है जहाँ सत्यता के खुश्बूदार फूल खिलते हैं और गुण के फल फलीभूत होते हैं। सत्य को अभिव्यक्त करने के लिए जीवंत साधना की जरूरत है साधनों की नहीं।

जब-जब आदमी साधनों की तरफ दौड़ता है तब-तब आदमी को अपनी वास्तविक आत्मसाधना से विमुख होना पड़ता है यही कारण है कि प्राचीन महर्षियों ने लिखा है कि एक गधे के सींग निकल आयें तो इसे मान सकता हूँ कोई कहे बाँझ स्त्री को पुत्र हुआ तो इसे मान सकते हैं लेकिन कोई गृहस्थों को जो साधनों में फँसे हैं उन्हें ध्यान हुआ यह नहीं मान सकते हैं। क्योंकि जिस प्रकार भोगी योग में नहीं रम सकते हैं वैसे ही साधनों में साधना नहीं हो सकती है। केवल वैसा अभिनय हो सकता है आदमी अभिनय करने में पूर्व से ही कुशल है सत्य को गलत मानने के बहुत पुराने संस्कार है। पुराने संस्कार हटाने के लिए साधनों से दूर भी रहना पड़ेगा वरना साधना का फल जीवन पर्यन्त तक नजर नहीं आ सकता है। हम अभी तक सत्य को उपलब्ध न हो सके इसका कारण हमारी गलत मान्यता मुख्य है क्योंकि साधनों की चाह गलत मान्यता की नींव पर ही आधारित होती है और साधना का महल सत्य के बीज की नींव पर ही बनता है।

साधना के लिए बाहरी वस्तुएँ जोड़ने की जरूरत नहीं बल्कि छोड़ने की जरूरत है साधना अपने गुणों को पाने के लिए की जाती है न कि बाह्य वस्तुओं को एकत्रित करने के लिए। साधना के लिए मन को एकाग्र करना जरूरी है क्योंकि चेतन का द्वार तभी खुलता है जब मन के द्वार सभी तरफ से बंद हो जाते है तन के साधन छूट जाते हैं इसीलिए सबसे पहले मन को शांत करने का प्रयत्न होता है और जब मन शांत हो जाता है तब चेतन स्वयं चेतना में विलीन होकर अपूर्व और अकथनीय अद्‌भुत आनन्द का अनुभव करता है। मन की शांति को बाहर के साधन भंग कर देते हैं मन की भटकन साधनों के कारण तीव्र हो जाती है। यही कारण है कि साधु मन को साधने के लिए सन्यास धारण करता है विषय भोगों से दूर रहता है और इन्द्रियों के विषयों में मन को नहीं जाने देता मन को चेतन पाने के आयामों में लगाये रहता है और ध्यान अवस्था में जब बैठता है तो तत्वों का चिंतन-मंथन करता है इससे उसे अलौकिक ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है फिर उसकी अलौकिक दुनियाँ धीरे-धीरे बढ़ती जाती है और वह संत इस धरती पर अलौकिक प्रतिभा का धनी विलक्षण ज्ञान वाला कहा जाता है यही साधना एक दिन पूर्ण सत्य को उपलब्ध करा देती है। अतः साधनों से दूर होकर साधना करने में जीवन की सफलता है यही आदमी का अंतिम लक्ष्य है।

काला वह है जिसके स्वभाव में कलुषता है।

He is black who have blackness in his nature.

कर्म हमारे हाथ का लिखा हमारा ही हिसाब किताब है।

Karma is the our account, written by our hand.

चेतता वही है जिसमें चेतना है।

Only he becomes conscious who have consciousness.

धर्म धर्मात्मा के बिना नहीं होता।

Religion does not become without vower (Religious)

चारित्रा चिता को जला सकता है, चिता चारित्रा को नहीं

आग वह वस्तु है जो सब कुछ जलाकर भस्म कर देती है चिता वह है जो शरीर को ही भस्म कर देती है इसीलिए चिता जीवन का अंतिम रूप है। आज जितने भी इंसान मरते हैं। सभी को चिता की शरण लेनी पड़ती है यदि चिता की शरण न ले तो जमीन में गढ़ना पड़ता हैं अन्यथा इस जमीं पर जीना मुश्किल हो जाये। जब तक शरीर को प्राप्त करके सत्य को पूर्णतः हासिल न कर लिया जायेगा तब तक शरीर को चिता जलाती ही रहेगी यदि यह पहिचान करना है कि सत्य हमें मिला है या नहीं तो शरीर जलते समय आग में से धुँआ नहीं निकलना चाहिए जब तक अग्नि में से धुँआ निकलेगा तब तक चारित्र पूर्ण नहीं हुआ है। चारित्र की पूर्णता पर अग्नि में धुँआ समाप्त हो जाता है। धुँआ अग्नि का मल है जब तक सत्य में असत्य का मल मिला रहेगा तब तक चिता में से धुँआ निकलता रहेगा लेकिन जैसे ही हम पूर्ण ज्ञान केवलज्ञान और पूर्ण सत्यता व चारित्र को प्राप्त करेंगे उस दिन हम चिता पर नहीं होंगे बल्कि हम चिता को ध्वस्त कर देंगे।

अग्नि कई तरह की होती है एक पानी की आग भी होती है जो समुद्र में हुआ करती है, एक जंगल की आग भी होती है जो सारे जंगल को भस्म कर देती है, एक वासना की आग होती है जो सारे गुणों को व चारित्र को भस्म कर देती है, एक ध्यानाग्नि भी होती है जो सारे दुर्गुणों को व दुश्चरित्र एवं कर्मों को नष्ट कर देती है, चारित्र ध्यानाग्नि पैदा करने के लिए जीवन में आचरित किया जाता है। ध्यानाग्नि के द्वारा ही चिंता की अर्थी को चिता बनाकर राख कर दिया जाता है। जितने भी आज तक इस धरती पर जीवंत महापुरुष हुए चाहे वो राम हों हनुमान हों महावीर हों बुद्ध हों सभी ने ध्यानाग्नि का सहारा लिया और चिता को चिता पर चढ़ा दिया चिता सब कुछ जला सकती है लेकिन आदमी का व्यक्तित्व व चारित्र नहीं जला सकती इसीलिए आदमी के गलत या सही व्यक्तित्व व चारित्र के संस्कार अगले भव में प्रकट होते हैं।

व्यक्तित्व व चारित्र कभी मरता नहीं है शरीर मरता है प्राण निकलते हैं यही कारण है कि भगवान राम-हनुमान-महावीर के चारित्र को आज भी कथा के रूप में हजारों हजारों लोगों को सुनाया जाता है। भगवान महावीर का, राम का शरीर नहीं है लेकिन उनके व्यक्तित्व अभी भी जीवित हैं। आज भी उनका नाम बहुत ही श्रद्धा के साथ विनय के साथ लिया जाता है। जिन लोगों के अन्दर सद्चारित्र नहीं है उनका व्यक्तित्व एक साधारण गिरे हुए भोगी इंसान की तरह है उन्हें कभी भी स्मरण नहीं किया जाता है इंसान वो नहीं जो जानवरों सा काम करें। इंसान वो कर सकता है जो फरिश्ते न कर सके। अतः चारित्र ही मानव की परम धरोहर है, चारित्र ही जीवन को उठाता हुआ एक दिन शिखर की

चोटी पर पहुँचाता है। हर व्यक्ति को यहाँ चारित्र बनाना पड़ता है। कोई ऐसा बनाते हैं कि खुद ही भस्म हो जाते हैं कोई ऐसा बनाते है कि चिता को ही भस्म कर देते हैं हमारा भी यही लक्ष्य होना चाहिए कि हम चारित्र और ध्यान की अग्नि के बल पर चिता को भस्म करेंगे तभी जीवन सफल हो सकता है।

तोड़ने वाला क्षुद्र है, जोड़ने वाला महान है।

One who dectroys is mean, but are that geates is great.

गिराने वाला नीचा है, उठाने वाला उच्च है।

Greatness lies is uplifting the down trodden but pushing them down is meanness.

गैरों को जीतने वाले नहीं अपने को जीतने वाले बनो।

Be a winner of own self, but not of others.

ईश्वर के द्वार पर याचना नहीं प्रार्थना करना चाहिए।

Don't urge but pray at the door of the god.

विज्ञान दूरदर्शन तो दे सकता है मगर आत्म दर्शन नहीं।

Science can give television but not self vision.

संस्कृति की रक्षा से ही प्रकृति चिरजीवित रहेगी

प्रकृति ने कभी भी नहीं चाहा कि हम मानव के ऊपर इस तरह टूटें कि मानव त्राहि-त्राहि कर उठे, प्रकृति ने कभी नहीं चाहा हम मानव के ऊपर अकाल संकट, भूकंप संकट, जल संकट डाल दें वह तो हमेशा भला चाहती रही है लेकिन मानव ने कई उपद्रव खड़े कर दिये हैं। मानव अपनी संस्कृति भूल चुका है उसके अन्दर से दया, धर्म, अपरिग्रहता, सत्यता इस तरह लुप्त हो चुकी है जैसे नेताओं से ईमानदारी। आज देखने में आता है कि जानवरों ने अपनी संस्कृति को बदला नहीं है। कई जानवर ऐसे होते हैं जो माँस नहीं खाते, हिंसक नहीं होते वो आज भी उसी तरह के हैं यह भी बात सही है कि इस पृथ्वी पर मानव से समझदार कोई प्राणी नहीं है। लेकिन यह भी सही है कि मानव से दुष्ट भी कोई प्राणी नहीं है। एक वह इंसान है जो परमात्मा की प्रतिमा स्थापित कर उसकी पूजा आराधना करता है लेकिन एक वह है जो उसी परमात्मा को बेचकर प्रतिमा को नष्ट कर देता है। प्रकृति तभी तक शांत है जब तक संस्कृति की रक्षा हो रही है इसलिए साधु-संत संस्कृति को जीवित रखने पर बहुत जोर देते हैं, जो संस्कृति को प्रकट करता है प्रकृति उसी पर फिदा होकर जीवित हो जाती है।

सूर्य निकलने के बाद और सूर्यास्त के पूर्व ही हमें भोजन-पान कर लेना हमारी संस्कृति है - दूसरों के दुख को देखकर मोम की तरह पिघल जाना हमारी संस्कृति है। दूसरों को भूखा देखकर अपनी रोटी में से कुछ हिस्सा दे देना हमारी संस्कृति है, सभी से मित्रता का व्यवहार करना हमारी संस्कृति है, गरीबों की सहायता करना, अहंकार नहीं प्रेम का व्यवहार करना जानवरों की तरह दिन-रात नहीं बल्कि निश्चित समय पर भोजन-पान करना हमारे जीवन की संस्कृति है। इसके विपरीत चलना संस्कृति नहीं विकृति है। हमारे मन की विकृतियाँ हमें प्रकृति से दूर करवा देती हैं विकृतियों के कारण हम अपने ही गुणों से वंचित रह जाते हैं। परमात्मा हमसे कोसों दूर चला जाता है और संस्कृति हमें प्रकृति की मंज़िल पर समाप्त होती नजर आती है विकृति का कटीला पथ किसी प्रलयशील खाई में जाकर समाप्त होता है।

चाहे भगवान राम हों, चाहें हनुमान, चाहे हों भगवान महावीर सभी ने संस्कृति पर निरंतर ध्यान रखा इसी संस्कृति के कारण भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम की संज्ञा प्राप्त हुई। प्रकृति की गोद में कई जगह महान् रत्नों का खजाना पड़ा हुआ है जिसे हाथों से उठाने के लिए सुसंस्कृति, संयम, ज्ञान के हाथों की जरूरत है और उस स्थान पर जाने के लिए श्रेष्ठ आचरण वाले पाँवो की जरूरत है। लेकिन यदि हम विकृति में आ गए तो प्रकृति हमारे हाथों में पत्थरों के ढेर रख देगी, हीरे के खजाने नहीं देगी। हमें देखकर हमारी पीढ़ी भी संस्कारों से युक्त होगी। संस्कारों की नींव पर सारी ज़िंदगी का महल खड़ा होता है और इसी

के आधार पर अंतिम समय निर्धारित होता है और संस्कार ही भविष्य का निराकार रूप बनाने की दम रखता है। अतः हम सभी को अपने सुसंस्कारों के प्रति पल-पल सजग रहते हुए सुधारते रहना चाहिए तभी यह जीवन शुद्ध सफल होता हुआ एक वृहत् सागर में मिलकर एक महासागर बन सकेगा।

हिंसा अज्ञान, अनास्था की परिणति है -
अहिंसा ज्ञान व आस्था की।

Violence is the Consequence of ignorance and atheism,
while non-vialence results from learning and faith.

धर्म के लिए भावना अधर्म के लिए इच्छाएँ
करना जरूरी है।

Spirit for religion and fancy for immorality is the inevitable requirement.

जीवन को उन्नत बनाने के लिये धन की नहीं धर्म
की आवश्यकता है।

Spiriual and not material wealth is needed to sublimate life.

समर्पण में संवाद होता है संघर्ष में विवाद।

There is discourse in surrender while istrife in debate.

मज़हबी महल में अपना खज़ाना मिलेगा

किसी आदमी को यदि इस बात का पता चले कि मेरे घर की जमीं के नीचे खजाना गड़ा हुआ है तो उस आदमी का चेहरा खिल उठेगा मन मयूर की तरह नाचने लगेगा यदि यह बता दिया जाये कि हमारे अंदर वह शांति सुख का खजाना भरा हुआ है जिसके सामने सारे खजाने तुच्छ हैं तो दिल कमल की तरह खिल उठेगा किसी बात को सुनकर या किसी बात को कहकर या किसी कार्य को करके यदि मन खिल उठे दिल न खिले तो समझना यह रास्ता हमारे स्वयं के खजाने की ओर नहीं जायेगा लेकिन यदि दिल खिल उठे मन भी खिले तो समझना यह रास्ता अपने खजाने की ओर जायेगा। अपने खजाने को पाने वाले भगवान महावीर हुए, प्रभु राम हुए, हनुमान हुए इन्होंने पहले वीरान खण्डहर जमीं को गुलशन बनाया और उस जमीं पर मज़हबी महल बनाया तब उन्हें अपना शांति सुख का खजाना प्राप्त हो सका जो वीरान ज़िन्दगी पर गुलशन नहीं बना सकता वह मज़हबी महल में अपना खजाना भी नहीं देख सकता।

समुद्र में से रत्नों का खजाना निकालना हो तो पहले तैरना सीखना पड़ता है फिर पानी में घंटों भीतर रहने की साधना करनी पड़ती है तत्पश्चात् प्राणायाम के द्वारा योग निरोध सीखकर काफी समय तक साँस को अपने शरीर के अन्दर रखना पड़ता है तब भी खजाना मिले तो ये कोई जरूरी नहीं है। यही हाल जीवन का है जीवन के खजाने को पाने के लिए हमें सबसे पहिले विषय भोगों के समुद्र में त्याग के द्वारा तैरना सीखना है जैसे तैरने का मतलब केवल पानी में तैरना नहीं है बल्कि पानी में डूबे रहने पर भी या पानी में पड़े रहने पर भी हमारे अंदर पानी प्रवेश न कर पाये और हमारी यात्रा निर्बाध गति से चलती रहे उसी प्रकार भोगों के समुद्र में इस तरह रहें कि विषय भोग हमारे चारों ओर रहने पर भी हमारे अंदर वे प्रवेश न कर पायें। ऐसा त्याग भी हवा से ही हो सकता है फिर हम प्राणायाम के द्वारा ध्यान लगाना सीखें फिर मन एकाग्र करना सीखें इतना सब कुछ करने पर हमारा जीवन स्वयं ही मजहबी महल बन जायेगा ऐसे महल में ही अपना वास्तविक खजाना मिल सकेगा।

खजाने को पाने के पूर्व हमें खजाने की चाबी ढूँढ़ना जरूरी है वैसे ध्यान वह मास्टर की (चाबी) है जिससे सभी उजाले के खजानों के ताले खुल जाते हैं और चाबी मिल भी जाये तो ताले खोलने की तरकीब जानना जरूरी है। ये सब संतों के पास जाने पर स्वत: ही मिल जाता है संत जीवंत भगवंत हैं। जीता हुआ चलता फिरता मंदिर शास्त्रों का प्रमाण संत ही मज़हबी महल बनाने में कामयाब हो सकता है संत के चरणों में ही खजाने का रास्ता मिल सकता है यदि इस धरती पर संत नहीं होते तो किसी में भी दम नहीं था कि वह अपना खजाना पा लेता आज आदमी के पास जो कुछ थोड़ा सा खजाना दिखाई

दे रहा है वह संत की कृपा का ही परिणाम है संत के आशीष से आज का आदमी अपने जीवन को खण्डहर से गुलशन बना लेता है। अत: हम सभी संतों की संगति में बैठें और अपना राज पाकर अपने वास्तविक खजाने की तलाश करें तभी हम सभी का जीवन मंगलमय और सफल हो सकता है।

पुण्य पाप से दूर होना धर्म है।

It is religion to avaid vices and virtues. Renuciation of vices and virtues is religion.

संसार में तिरना सीखो डूबना नहीं।

Learn to swim across the material world, don't to drown in it.

धर्म है ह्रदय में, मन की सरलता में, मन की सहजता में, मन की पवित्रता में स्वयं के भीतर।

Religion is found in the piousness, Simplicity and easy of our minds is the core of our hearts.

मनुष्य हमेशा अधूरा पैदा होता है लेकिन पूर्ण हो सकता है।

Man is born imperfect, but can be perfect by his deeds.

जीवन का निर्माण नहीं तो निर्वाण नहीं

निर्वाण जैसा कि शब्द से ही स्पष्ट होता है कि निर् (रहित) वाण (कषाय) कषाय से रहित होना। लेकिन आज हम सब निर्वाण की जगह निर्माण में लगे हुए हैं। जगह - जगह निर्माण कार्य तो चल रहे हैं लेकिन निर्वाण कार्य नहीं चल रहे। जब तक निर्वाण नही होगा तब हमारे लिए क्षायिक सुख का निर्माण नहीं होगा। और निर्वाण पाने के लिए हमें अपने चित्त का निर्माण करना पड़ेगा अपने चित्त को सरल और निर्मल बनाना पड़ेगा। प्रत्येक मनुष्य को एक चित्त मिला उसे उसका निर्माण करने के लिए स्वतंत्रता दी गई है अब यह उसके ऊपर निर्भर करता है कि वह संसार निर्माण के लिए चित्त का उपयोग करता है या संसार नाश के लिए। कहा है :-

जितना भी कर जाओगे उतना ही तुम पाओगे।

किये बिना नहीं मिलता है, किये बिना नहीं मिलता।

अपना - अपना करना है, करनी का फल भरना है

नीम के तरु में, नहीं आम दिखाये रे ऽ ऽ......................

जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाये रे ....

जितनी इच्छा करते जाओगे निर्माण होता जायेगा और जितना इच्छाओं का दमन करते जाओगे उतना ही निर्वाण के निकट पहुँचते जाओगे।

शरीर का निर्माण करना कोई पुरुषार्थ नहीं नाली के गंदे कीड़े - मकोड़े भी शरीर का निर्माण कर लेते हैं, नरक में नारकी भी शरीर का निर्माण कर लेते हैं। यदि हम भी शरीर का निर्माण ही करते है तो हम नारकी से ज्यादा नहीं। मानव को पुरुषोत्तम बनने के लिए जीवन का निर्माण करना चाहिए। जीवन के निर्माण के बिना संसार से निर्वाण प्राप्त करना पूर्णतः असंभव है। अतः हम सभी को निर्वाण प्राप्त करने के लिए सतत् प्रयास करना चाहिए तभी हम सभी मानव जीवन को सफल बना करके मंज़िल को पाने में कामयाबी हासिल कर सकते हैं। यही सबसे बड़ा पुरुषार्थ है।

अहंकार से प्रेम, स्वतंत्रता के प्रति बगावत है।

Love with proud is revalution against freedom
OR proud can not love freedom.

हिम्मते मर्द तो मदद दे खुदा

इंसान के अन्दर यदि पुरुषार्थ रहता है तो उसे कुछ भी हासिल करना असंभव नहीं है। ईश्वर तो उसकी मदद करने के लिए हमेशा तैयार बैठा रहता है। इंसान ने चाहा कि हम चन्द्रमा पे जाकर रहें आज सुनने में आता है कि चन्द्रमा की सारी जमीन पर मनुष्यों का कब्जा हो चुका है और सारी जमीन के प्लॉट बिक चुके हैं खरीदने वालों का यह कहना है कि जब कभी विश्वयुद्ध होगा तो हम जमीन से चन्द्रमा पर जाकर सुरक्षित हो सकेंगे। कई देशों ने जमीन के अंदर गहरी सुरंगें बना ली हैं। युद्ध से बचने के लिए ये सभी मनुष्य की हिम्मत का ही नमूना है कोई सोच भी नहीं सकता था कि हम चन्द्रमा पर बस्ती बनाएँगे। आज विदेशों में ऐसी कार बन चुकी है जिसके लिए सड़क की जरूरत नहीं है आकाश में चलेगी वक्त आ जाये तो सड़क पर भी चल सकती है। ये हिम्मत का ही नमूना है एक ऐसी गाड़ी बन चुकी है जो सड़क पर 400 किमी. की रफ्तार से चल सकेगी ये सोचना भी असंभव था लेकिन मानव ने हिम्मत की दम पर ये सब करके दिखा दिया। हिम्मत से मनुष्य जिस कार्य को करे उसमें मदद तो खुदा की ही होती है। खुदा मदद आलसियों को नहीं देता है। यदि आलसी के पास थाली में भोजन सामग्री लगकर भी आ जाये तो खुदा उसके उठाये बिना मुँह में भी नहीं भेजता उसकी शर्त है कि पहली पहल आदमी की तरफ से ही हो। आज का इंसान पाप में तो तीव्रता से अग्रसर है लेकिन धर्म को छोड़ बैठा है, पाप में हिम्मत करने को तैयार है लेकिन समझने की बात यह है कि पाप के कार्यों में खुदा किसी की मदद नही करता। वह हमेशा धार्मिक, अच्छे,सात्विक, सज्जनता के कार्यों में मदद करता है, इसलिए यदि खुदा से मदद चाहते हो तो धर्म कार्यों में गुण प्राप्ति के साधनों में हिम्मत दिखाने की जरूरत है।

इंसान को यह ईश्वर के द्वारा यह बौना सा शरीर मिला है यह कुछ महान् वस्तु नहीं दो बूँद (रज वीर्य) से बना है और जब मिटता है तो चार मुट्ठी राख में बदल कर नष्ट हो जाता है। इस जिस्म से यदि हमने गुनाह कर डाले तो पूरी ज़िंदगी कलंकित हो जायेगी और भविष्य भी गहन अँधेरे में समा जायेगा। इस शरीर को समझना सरल है। तुम समझते हो शरीर से पहलवानी करना मर्दों की बात है। नहीं यह तो स्त्रियाँ भी कर लेती हैं, तुम समझते हो शरीर से बच्चे पैदा करना लालू यादव की तरह मर्दपना है नहीं यह काम तो जानवर भी कर लेते हैं, तुम समझते हो कि धन कमाना मर्दपना है तो यह भी ठीक नहीं क्योंकि धन तो पापी वेश्या भी कमा सकती है, तुम समझते हो चाँद पर पहुँचना मर्दपना है या आकाश में उड़ना वहाँ से कूदना। नहीं ये काम तो छोटा सा पक्षी बहुत ही

सहजता से कर लेता है। अब यह प्रश्न खोजनीय है कि खुदा किस काम में मदद करेगा? क्योंकि ये सब काम तो चाहे कोई कर सकता है। लेकिन संत बनकर परमात्मा केवल हिम्मते मर्द ही बन सकता है, परमात्मा को ऐसे लोगों की सहायता करने में मजा आता है, ऐसे लोगों की ही परमात्मा मदद करता है।

यदि परमात्मा दुष्ट पापियों की मदद करने लग जायेगा तो परमात्मा खुद ही गुनाहगार हो जायेगा खुद ही जुल्मी हो जायेगा फिर दुष्टों को दण्ड देने का अधिकार किसे रह जायेगा। प्रभु राम, हनुमान, महावीर ने केवल उन्हें ही मदद दी है जिन्होंने उनको दिल से पुकारा है। परमात्मा अन्याय, अनीति का पक्ष नहीं लेता वह साफ सुथरा खुद है इसलिए साफ दिलवालों की सहायता करता है। जिस इंसान के ऊपर परमात्मा की मदद रहती है उस इंसान को सारी दुनियाँ प्रेम करती है, क्योंकि वह इंसान भी हिम्मते मर्द हो जाता है, वह ईश्वर एक विराट जलता हुआ चिराग है इस चिराग से रोशनी पाने का अधिकारी वही है जो जलने की हिम्मत रखता हो जो दुनियाँ की दौलत को लात मारने की दम रखता हो। जो धन - मकान - पत्नी आदि सभी को ठुकरा सकता हो। अन्यायी को परमात्मा की मदद नहीं मिल सकती। कविता के माध्यम से कहा है :-

चल देंगे एक दिन सब लिपटे हुए कफन से
जाना पड़ेगा बुलबुल दुनियाँ के इस चमन से
दुनियाँ रहेगी यूँ ही पर बस न हम रहेंगे
जायेगा - जायेगा आने वाला आयेगा

हम सभी को इस तन की माटी से अमृत निचोड़ना चाहिए जहर नहीं इसके लिए हम सभी को अपने विचारों में शुद्धता लानी पड़ेगी, सदाचार लाना पड़ेगा तभी हिम्मते मर्द हम बन सकेंगे और खुदा की मदद हमें मिल सकेगी।

शाब्दिक ज्ञान में जीवन का निर्माण नहीं।

The creation of life is not in the Knowledge of Words.

असंतोष है मौत का संदेश

किसी भी क्षेत्र को देख लिया जाये असंतोष ही हर जगह दिखाई देता है। मानव के मस्तिष्क और विश्व की तुलना की जाये तो विश्व मानव के मस्तिष्क के एक करोड़वें अंश में समा जायेगा। मानव का मस्तिष्क एक पुस्तकालय है, जिसमें अनेक अलमारी हैं। एक-एक अलमारी में अनेक - अनेक किताबें हैं, एक-एक किताब में कई-कई पन्ने हैं, एक पन्ने पर कई शब्द हैं, सभी शब्द किसी को याद नहीं रहते, सभी पुस्तकें किसी को याद नहीं इसलिए पूरा मस्तिष्क किसी का भी सक्रिय रूप नहीं लेता। यदि मस्तिष्क पूर्ण हो जाये तो फिर आदमी-आदमी न रहे भगवान हो जाये। मस्तिष्क की अपूर्णता, इच्छाओं तीव्र लालसा, आकांक्षाओं की आपूर्ति से कभी-कभी जीवन के संतोष का संतुलन बिगड़ जाता है। संतुलन खोते ही असंतोष के बादल छा जाते हैं। असंतोष वह है जहाँ इच्छा पूर्ति के अभाव में हृदय घुटन से भरा हुआ है। असंतोष का मतलब है मर - मर के जीना या घुट - घुट के मरना। असंतोषी हमेशा परमात्मा को कोसता ही रहता है, हमेशा वह दूसरों को गलत ठहराने में लगा रहा है। जबकि वह खुद ही गलत है। असंतोष बड़े से बड़े सम्राट को भिखारी बना सकता है और संतोष बड़े से बड़े भिखारी को, दरिद्री को सम्राट बना सकता है। जो दुनियाँ में आकर अपने मन का बादशाह न बन सका वह आदमी खुदा के लिए प्यारा नहीं हो सकता है, खारा हो सकता है। पृथ्वी भी उन आदमियों से खुश रहती है जो आदमी इंसानियत से भरे हुए हैं। असंतोषी लोगों से ही पृथ्वी नाखुश है। असंतोषी मानव पृथ्वी पर जानवर की तरह भार जैसे हैं असंतोष की एक वर्ष की ज़िंदगी से एक क्षण में मर जाना भला है। घुटन की ज़िंदगी से लाभ ही क्या है?

आज आदमी के पास मस्तिष्क तो बोना है लेकिन चाह इतनी विशाल है कि वह खुद ही असंतोषी बन जाता है। अपनी-अपनी करनी का फल ही सभी जन अलग - अलग भेष में पाते हैं। जो कुछ जितना भी दुनियाँ में मिला है यह सब हमारे ही कृत्य का फलित परिणाम है यदि हम पूर्व में कुछ भी अच्छे कार्य नहीं करते तो बाजार में कटोरा लिये हम फिरते रहते, फिर भी भीख न मिलती। एक भिखारी आज संतोष में जी सकता है और एक करोड़पति असंतोष में जी सकता है। एक साधु जिसके पास कोई सुख सुविधा नहीं पैसा नहीं वह संतोष में जी सकता है और एक धनपति सभी सुविधाओं से युक्त होते हुए भी घुटन की ज़िंदगी बना सकता है। जब जीव असंतोष से भरता है तो टेंशन उभरती है। टेंशन ज्यादातर ब्रेन हेमरेज पैदा करता है, बी.पी. हाई कर देता है, कभी - कभी टेंशन

ही हार्ट अटैक का रूप लेकर मौत की नींद सुला देता है। यदि इन बीमारियों की मूल जड़ देखी जाये तो असंतोष ही निकल कर आयेगी। असंतोष मौत के लिए धीमा जहर है। या यों कहें कि असंतोष धीमी सल्फॉस की गोली है।

आज आदमी मशीनरी का युग बना हुआ है। मशीन की तरह चल रहा है। जानवरों की तरह दिन रात गुजार रहा है, गधे की तरह बोझिल है, निरंतर पाप कार्य करने से भी हिचकता नहीं है, चंद पैसों के लिए आदमी - आदमी को एक सैकेण्ड में मार सकता है, चाकू, पिस्तौल तो उसके लिए खिलौने हैं, बे-हताश दौड़ रहा है लेकिन फिर भी सही लक्ष्य से दूर है। ये सभी असंतोष की ही घटनाएँ हैं। अनुकरणीय बात यह है कि असंतोष ही परेशानी की मूल जड़ है और असंतोष ही सुख शांति का मूल आधार है। असंतोष से माँस पेशियों में कसाव उत्पन्न होता है। क्रोध - मान उत्पन्न होता है इससे शरीर की उर्जा बिना किसी उद्देश्य के फिजूल में नष्ट होती है। उर्जा के नष्ट होने पर शक्ति का क्षरण होता है, ज्ञान कमजोर होता हुआ हीन होता चला जाता है, एक चिंतन के अनुसार ही असंतोष से शारीरिक क्षमता घटती है और नेत्र की ज्योति भी कमजोर हो जाती है तथा मानसिक कलह पैदा होने लगती है। ये सभी घटनाएँ जीवन को अकाल मृत्यु की ओर स्वभावत: ले जातीं हैं।

यदि किसी के घर में एक व्यक्ति असंतोषी हो तो वह पूरे घर को नर्क बना देता है और यदि घर में 10 सदस्यों में सभी असंतोषी हों तो फिर मरने के बाद नरक देखने की कोई जरूरत नहीं जिंदा में ही नर्क दिखाई दे जाता है। आजकल भाई - भाई में लड़ाई होती है, बड़ी बहू छोटी बहू में तू - तू, मैं - मैं होती है, सास बहू में, पिता - पुत्र में, पति - पत्नी में, देवर भाभी में खट-पट के उदाहरण मिलना सहज हैं। ये सब असंतोष के नजारे हैं। संतोष की अवस्था में व्यक्ति की मुद्रा सौम्य - प्रसन्न रहती है। उसकी माँस पेशियों में कसाव नहीं रहता, अहंकार नहीं रहता, घर में प्रेम का वातावरण रहता है। इससे हमारे जीवन की ऊर्जा का व्यर्थ में क्षय नहीं होता, जिससे वही ऊर्जा ज्ञान बनकर बुद्धि का विकास करती है, शरीर को सभी तरह से स्वस्थ रखती है। नेत्रों की ज्योति कमजोर नहीं होने देती तथा भविष्य को उज्ज्वल बनाती है। इसलिए हम सभी को चाहिए कि हम लोग हमेशा संतोष में जियें जितना मिला उसी में सुख खोजें ऊपर वालों को नहीं नीचे वालों को देखें तभी हम धर्म को पाकर जीवन सफल कर सकते हैं।

परमात्मा की परीक्षा नहीं प्रतीक्षा करो

दुनियाँ में परमात्मा सबसे बड़ा परीक्षक है उसने हर आदमी को इस संसार के परीक्षा भवन में भेजा है हमें अपने निश्चित समय में, अपनी उम्र में उचित परीक्षा देनी है ''जीने का सही तरीका'' इसका पेपर देना है ये पेपर प्रैक्टीकल रूप में है थौर्टिकल में नहीं और पेपर में चैकिंग करने वाले यानी फ्लाइंग स्कॉट दिगम्बर संत है जो आहार विधि के द्वारा घर-घर चैकिंग करते हैं। हम सभी में कितने पास होते हैं कितने फैल होंगे मृत्यु के समय परिणाम घोषित होंगे। उन अंकों के आधार पर मेरा गतियों में गमन - आगमन होता है परमात्मा परीक्षा ले रहा है वह तो यूनिवर्सिटी का प्रमुख कुल सचिव है उसके हस्ताक्षर के बिना किसी का एडमीशन मोक्ष की क्लास में नहीं होगा। सर्वप्रथम बी.एम (ब्रह्मचारी) की परीक्षा में बैठिये वहाँ पास होने पर ऐलक, क्षुल्लक की परीक्षा में इण्टरव्यूह देकर उसका कोर्स करिये पश्चात् मुनि बनिए तब कही मोक्षमार्ग के कमाण्डर बन सकते हैं। उसके बाद ही मोक्ष महल में जा सकोगे आश्चर्य यह है कुछ लोग इस परीक्षा की योग्यता नहीं रखते और अपने आपको एक अच्छा अफसर सिद्ध करना चाहते हैं उनका यह दंभ परमात्मा की और उनके अफसर मुनियों की परीक्षा करने में लग जाता है बाद में कर्मों के दण्ड जब मिलते हैं, रिजल्ट सामने आता है तब माथे पर हाथ रखकर रोते हैं हमें योग्यता पाने का प्रयास करना है और परमात्मा की परीक्षा नहीं उसके हस्ताक्षर मेरी जिन्दगी की किताब पर हो जायें इसकी प्रतीक्षा करना है।

हमारे कर्म की कॉपी जब परमात्मा के दूत जांचते हैं तो नम्बर उतने ही मिलते हैं जितना हमने कॉपी पर लिखा है। हम अपनी कॉपी पर लिखने के लिए पूर्णतः स्वतंत्र है चाहे तो कोरी कॉपी भी रख सकते हैं लेकिन फिर शुन्य मिलेगा और निगोद पर्याय निर्मित होगी जितने हमारी उम्र के दिन हैं उतने पेजों की हमारे जीवन की कॉपी है प्रतिदिन हमें अपने पेज पर नया-नया लिखना पड़ता है और जो पूर्व में लिखा था उसका परिणाम हमें प्रतिदिन प्राप्त होता है किसी-किसी दिन ज्यादा मिल जाता है किसी - किसी दिन कुछ नहीं मिलता मतलब साफ है किसी - किसी दिन हम दान देते हैं किसी - किसी दिन कुछ भी नहीं देते हैं।

परमात्मा की भक्ति हमें करोड़ों कामों को छोड़कर करनी चाहिए क्योंकि परमात्मा के द्वारा ही उसके आशीष से ही हमारे करोड़ों काम सफल होते हैं। एक दुकान से चार मकान बन सकते हैं लेकिन चार मकानों से एक दुकान नहीं लेकिन परमात्मा खुश हो जाए तो चार दुकान बन जाती है। सोलह मकान ये तभी संभव है जब हम भक्ति करें। भगवान् की भक्ति से मौत नहीं भगवान् की भक्ति से मोक्ष निर्मित होता है। साधु के पास तप है, सामायिक है निर्जरा है ज्ञान है लेकिन श्रावक के पास एक भक्ति ही है। अतः हम सभी प्रभु भक्ति करते हुए उसकी प्रतीक्षा करें अपनी झोली फैलाए रहें कभी न कभी हमें सफलता का बीज अवश्य प्राप्त होगा।

ज्ञान को लोहा नहीं सोना बनाओ

शास्त्रों को पढ़कर हम बहुत सारी जानकारियाँ एकत्रित कर लें और अन्य कई पुस्तकों को पढ़कर अपने आपको विद्वान समझ लें, या अपने आपको ज्ञानी समझ लें चाहे कितनी शास्त्रों की बातों को सुन लें। लेकिन यदि हमारे पास सत्य की या सम्यक्त्व की पारसमणी नहीं है तो सारा ज्ञान लोहा ही बना रहेगा। पारसमणि के अभाव में सोना कभी न बन सकेगा। इसलिए ज्यादा लोहे को एकत्रित करने की जरूरत नहीं पारसमणि को पाने की खोज जरूरी है। पारसमणि है तो हमारा सारा पढ़ना याद करना स्वर्णिम है। सम्यक्त्व है तो हमारा ज्ञान मुक्ति मंजिल पाने को ऊर्ध्वारोहण के तुल्य है। अतः हमारी पूरी शक्ति का प्रयोग दिव्य पारसमणि रूपी सम्यक्त्व को पाने के लिए हो जाना चाहिए तभी हम लोहे जैसी जानकारी को सोना जैसा बना सकते हैं।

हर प्राणी निगोद की जेल से रिमाण्ड पर, परेड पर दो हजार सागर के लिए निकला है जिसमें 48 भव मनुष्य प्रजाति के होते हैं। सोलह नपुंसक के व्यर्थ जाते हैं लेकिन 32 भवों में अच्छे कुल वास्तविक धर्म पर श्रद्धा होना ये बहुत ही कठिन है। सम्यक्त्व पाने का सबसे सरल तरीका अर्हत प्रभु की वास्तविक भक्ति है। आचार्य श्री माघनन्दी महाराज ने भी कहा है कि जिनेन्द्र भगवान की सच्ची भक्ति ही सम्यग्दर्शन का मुख्य कारण है जो संसार निवारण करने वाला है।

हम केवल शास्त्रों को पढ़ते रहें और भगवान की भक्ति न करें तो सम्यकत्व होने वाला नहीं और सम्यक्त्व के अभाव में शास्त्रों को पढ़ने पर एकत्रित हुआ ज्ञान भी सम्यग्ज्ञान नहीं होगा इसलिए भगवान की भक्ति, अर्हत् भगवान का स्वरूप, तीर्थंकर के गुण-द्रव्य-पर्याय का चिंतन उसका वास्तविक रूप ही सम्यक्त्व का मूल हेतु है। भगवान की आराधना भावभीनी होना चाहिए यदि आराधना भावभीनी नहीं तो पूजन द्रव्यात्मक है। जब पूजन भावों से युक्त हो जाएगी तो सम्यक्त्व अंदर से प्रकट हो जाएगा। परमात्मा की आराधना किये बिना सम्यक्त्व पाना असंभव है। इन्द्रभूति गौतम को पूर्व में ज्ञान बहुत था लेकिन लोहे जैसा था भगवान महावीर का दर्शन पाते ही सारा सोना बन गया। मेंढ़क ने भगवान महावीर की पूजा के लिए कमल की पाँखुड़ी लेकर कदम बढ़ाया तो सम्यक्त्व हो गया नंदीश्वर द्वीप में प्रतिमा को देखकर कई देव सम्यकत्व प्राप्त कर लेते हैं पूजन में जितना भगवान से साक्षात्कार हो सकता है उतना शायद किसी से नहीं हो सकता। अतः हम सभी को चाहिए कि भगवान की पूजन सही तरीके से करना सीखें और करें जिससे वह सम्यकत्व रूपी मणि हमें मिल सके और हमारा ज्ञान सोना बनकर चमक सके तभी हम सभी का जीवन मंगलमय हो सकता है।

तन्मयता, भक्ति का अंतिम मुकाम है

परमात्मा की भक्ति का रस ऐसा होता है जो किसी भी पेड़ के फल में नहीं लगता। भक्ति का आनन्द शब्दातीत है। क्यूंकि जब भक्ति में विभोर कोई भक्त होता है तो वह अपने आपको भी भूल जाता है कि मैं कहाँ खड़ा हूँ क्या कर रहा हूँ जिस तरह परमात्मा को कुछ ख्याल नहीं है उसी तरह परम भक्त को भी कोई ख्याल नहीं रहता। भक्ति में न शब्दों की महत्तता है न विचारों की महत्तता है न संगीत की न वस्तु की, भक्ति में सिर्फ तन्मयता की महत्तता है तन्मयता की ही कीमत है। तन्मयता के वृक्ष में मुक्ति मंजिल के सारे फूल उपलब्ध हो जाते हैं और तन्मयता के बिना परमात्मा की भक्ति में कोई आनन्द ही नहीं है। एक रोज व्यापार जैसा कार्य है। तन्मयता के बाद भक्ति में कुछ नहीं यही भक्ति का अन्तिम निचोड़ है – तन्मयता।

हर प्राणी को प्रभु की भक्ति के लिए थोड़ा सा समय जरूर निकालना चाहिए यदि हमने 24 मिनिट भी तन्मयता पूर्वक भक्ति की है तो 24 घंटे तक परमात्मा उसका ध्यान देता रहेगा हम परमात्मा के प्रति झुकना सीख लें वह हमारी रक्षा करने के लिए तैयार है। भक्ति करते समय भक्त का मन प्रफुल्लित होना चाहिए, हृदय में एक परमात्मा से मिलन का गुणगान के अवसर का उल्लास होना चाहिए, परमात्मा को देखकर उसके स्वरूप उसकी ज्ञानधारा का विचार करते हुए उनकी शक्ति का बहुमान होना चाहिए, परमात्मा के गुणों को पाने का भाव होना चाहिए ये विचार ही तन्मयता को पैदा करते हैं और तन्मयता रत्नत्रय को पैदा कर देती है और रत्नत्रय मुक्ति मंजिल तक ले जाने के लिए विमान का कार्य करता है।

परमात्मा की भक्ति के बिना कोई भी जीव सत्यता को नसीब करना चाहे तो असंभव है। दुनियाँ का सत्य तो परमात्मा है परमात्मा के सिवाय कोई सत्य नहीं जहाँ – जहाँ भी सत्य है वहाँ – वहाँ परमात्मा पूर्व से ही अवस्थित होगा परमात्मा से ही सत्य निकला है। और सत्य को परमात्मा की भक्ति के द्वारा ही पाया जाता है। अतः कहा जाना चाहिए कि तन्मयता से युक्त परमात्मा की भक्ति इंसान को चरम सीमा तक ले जाती है।

लीला वास्तविक नहीं होती वह तो अभिनय है।

Dramma seems realistic but in..... fact is an acting.

इन्सान की खोपड़ी वस्तु से नही ज्ञान से भरेगी

दुनियाँ में हर आदमी को ईश्वर प्रदत्त एक ऐसा पात्र मिला है जो शायद देव और नारकी अथवा किन्हीं भी जानवरों को नहीं मिला है और हर आदमी अपनी पूरी शक्ति इसी में लगा रहा है कि येन-केन प्रकारेण पात्र भरना चाहिए। लेकिन मजे की बात यह है कि 80 वर्ष की उम्र गुजर जाती है मात्र पात्र को भरने में लेकिन पात्र एक इंच भी नहीं भर पाता है, इसका मतलब बिल्कुल साफ है कि या तो हम पात्र को न समझ पाये या पात्र किससे भरा जाना चाहिये था उस वस्तु से न भरकर अन्य वस्तु से हम उस पात्र को भरते रहे। वह पात्र और कुछ नहीं वह मानव की विचित्र खोपड़ी है। कोई आदमी यहाँ पर आकर अपने पात्र को धन से भर रहे हैं, कोई स्त्री पुत्र पुत्रियों से भर रहे हैं, कोई मित्रों से भर रहे हैं, तो कोई मकान-दुकानादि अन्य वस्तुओं से भर रहे हैं लेकिन ऐसे लोग कभी भी अपना पात्र भरने में सक्षम नहीं हो पाते हैं और अपने पात्र की योग्यता कमजोर कर लेते हैं। आश्चर्य की बात यह है संसार की वस्तुओं से पात्र भरने वाले अंत समय में भरते-भरते मरते हैं परन्तु मरते-मरते वो भर नहीं पाते और अंत में हारकर यही कह जाते हैं कि हमने पात्र को समझ न पाया और भर नहीं पाया इसमें मेरी ही सबसे बड़ी भूल थी मैं ही गलत रास्ते पर था। यदि मैंने किसी भरे पात्र वाले की बात समझ ली होती तो यह जरा सी खोपड़ी को भरना बहुत सरल व आसान था। इंसान की खोपड़ी वस्तुओं से नहीं सत्यज्ञान से पूर्ण भर सकती है। ज्ञान एक ऐसी वस्तु है जो हर पात्र को भर सकता है लेकिन अज्ञानता होती है तब आदमी अन्य वस्तुओं से अपने मस्तिष्क को भरकर आनंदित होना चाहता है परन्तु उसे यह भूल बाद में पता चलती है और तब वह सिर फोड़कर पछताने के अलावा कर ही क्या सकता है।

मानव की खोपड़ी में वैज्ञानिकों के अनुसार लगभग 23 अरब कोशिकाओं को अनुमानित गिना गया है ये कोशिकाएँ पूर्णतः से यदि सक्रिय हो जायें तो उस व्यक्ति को महापुरुष कहा जाने लगे क्योंकि जैसे ही सारी कोशिकाएँ सक्रिय होतीं हैं वैसे ही केवलज्ञान प्रकट हो जाता है। लेकिन यह बात बहुत ही ध्यान देने योग्य है कि कोशिकाएँ तभी जागृत होतीं हैं जब कोई व्यक्ति अपने मन को ध्यान व ज्ञान के आधार से वस्तु के वास्तविक तत्त्व को जानकर अनुभूत करता है। यहाँ देखा जाता है किसी का ज्ञान बढ़ता हुआ है किसी का घटता हुआ है किसी में कम है किसी में बहुत है ये सभी स्थितियाँ कोशिकाओं के सक्रिय और निष्क्रिय होने की वजह से हैं। यदि हम अपने दिमाग से क्रोधादि

कषाय और इन्द्रियों के भोगादि विषयों को दूर कर दें तो मस्तिष्क की कोशिकाएँ सक्रिय होने लगतीं हैं और यदि हम विषय भोगों में लिप्त हो जायें तो कोशिकाएँ निष्क्रिय होने लगतीं हैं। आज साधू जितनी भी साधना-तपस्या कर रहे हैं वो सब कोशिकाओं को सक्रिय करके ज्ञान से खोपड़ी भरने के लिए है समझने की बात यह है कि कोशिकाएँ सभी के पास मौजूद हैं केवल सक्रिय करना है लगभग 95 प्रतिशत आदमी 10 प्रतिशत कोशिकाएँ पूरी ज़िन्दगी में भी सक्रिय नहीं कर पाते कुछ संत हैं जो इस विषय में विशेष जानकार हैं वे योग ध्यान-ज्ञान से सम्पूर्ण कर लेते हैं। हम सभी को ध्यान इसी पर देना है कि हमारे पास वह पात्र भी है और वह वस्तु भी है जिससे पात्र भरा जा सकता है अब केवल उचित रीति से उत्तम विधि से कार्य करना है जिससे खोपड़ी जैसा पात्र भर सके कहीं भी खाली न रह जाये तभी यह जीवन धन्य हो सकता है।

स्व-रसता के बिना सरसता नहीं हो सकती है।

Lucidity can't be without self interest.

यदि बूढ़े धर्म कर लें तो धर्म भी बूढ़ा हो जायेगा।

If the elders only bear the responsibility to follow religion,
our religion itself will become old (for old persons only)

हमें खतरों से लड़कर ही खरा मिलेगा।

We can get purity only by fighting the dangers of life.

धर्म जीवन है, विज्ञान जीवन की गति है।

Religion is life and science is the pace of life.

देने वाला ही पाने का हकदार है

आज संसार में चारों ओर देखने पर यह स्पष्ट नजर आता है कि किसी के पास धन सम्पदा अपार है, किसी के पास कुछ है, लेकिन कई लोग ऐसे हैं जिनके पास धन सम्पदा है ही नहीं। दुःखों की मार से जो बेहद परेशान हैं परमात्मा को भी लोग दोष देते होंगे कि ईश्वर ने किसी को छत भी नहीं दी और किसी को छप्पर फाड़के दिया। किसी को बीमारी देकर सड़ने को भेजा और किसी को निरोग शरीर दिया, किसी को बहुत शक्ति दी लेकिन किसी को कमजोरी ही कमजोरी दी ईश्वर बहुत ही अन्यायी है लेकिन इसके पूर्व प्रकृति का सिद्धान्त जान लेना चाहिए। प्रकृति का नियम है कि जो वस्तु को पाकर दूसरों को दे सके वही पाने का हकदार होता है। गरीबों को दिये बिना कोई परमात्मा का धन पाने की आकांक्षा रखता है। ईश्वर उसे नपुंसक और पापी समझता है अतः पाने का हकदार वही होता है जो पूर्व में दान धर्म को अपने जीवन में अपना कर आया है।

आज जिसके पास जितना धन है सम्पदा है उससे यह पूर्णत स्पष्ट है कि अतीत में हमने क्या दिया था क्योंकि मिलना देने का परिणाम है। यदि मिला नहीं है तो पूर्व में हमने दिया नहीं किसी ने कहा भी है'' और यह भी कहा है चाहे एक पैसा दो चाहे दस लाख लेकिन देते समय अभिमान ख्याति लाभ की भावना न होकर स्वपर कल्याण की भावना होनी चाहिए यदि हम आकांक्षाओं को रखते हुए दान करते हैं तो दान का समुचित फल हमें प्राप्त नहीं होता है।

देने वाला देवता कहलाता है और लेने वाला दैत्य। देवता इसलिये है कि देने वाला सबको प्रिय लगता है जैसे देव सबको प्रिय लगते हैं देने से देवगति को प्राप्त होते हैं इसलिये देने वाला देव है। देने से गुण प्राप्त होते हैं और गुणी देव होते हैं लेने वाला राक्षस होता है और लेता वही है जिसने दिया नहीं था आज भिखारी सा बना हुआ है लेने वाले का हाथ नीचे है और सिर झुका हुआ है जो कुछ भी दिया जाता है देने के बदले में हमें दुगना मिलता है यदि हम अपना श्रेय व सम्मान दूसरों को दे दें तो हमारा सम्मान दूसरों की नजर में दुगना हो जाता है देने का भाव करना परमात्मा का सम्मान करना है जब पर को दिया जाये तो परमात्मा प्रसन्न होता है और देने वाला पवित्र होता है यदि पर को परमआत्मा समझ ले तो परमात्मा उसे पूअर (गरीब) कर देता है। अतः यदि हम ज्यादा पाने का हक रखना चाहते हैं तो पहले ज्यादा नहीं तो थोड़ा देना सीखें तभी हम सत्य ज्ञान पाकर अपना जीवन सफल कर सकते हैं।

खदान में हीरे होते हैं, खान में नहीं

हर आदमी की हसरत है कि हीरे हमारे घर में हों। हर आदमी की नजर हीरों की ओर है। यदि कोहिनूर का हीरा एक व्यस्ततम चौराहे पर रखवा दें तो देखने वालों का तांता लग जाएगा और सभी लोग उस हीरे को हथियाने का विचार करने लगेंगे। हमारा हृदय एक बहुत बड़ी खदान है जिसमें भरे हुए हीरों की गिनती कर पाना मुश्किल ही नहीं, असम्भव है। जिनने भी वे वास्तविक हीरों को पाया है वे खुद ही उन्हें गिनकर नहीं बता सके। जिस प्रकार पत्थर के हीरे भी खदानों को काफी गहरा खोदने पर मिलते हैं वैसे ही ये गुणमयी हीरे भी गहरे चिंतन - मनन और अनुभव से मिलते हैं। हृदय की खदान को परमात्मा की अनुमति के बिना रंचमात्र भी नहीं खोदा जा सकता। सभी हीरों का मालिक एक परमात्मा ही है उसकी बिना मर्जी के एक भी खदान का एक भी हीरा बाहर दिखाई नहीं दे सकता है। यदि हृदय खदान है तो हमारे यहाँ हीरों की बरसात है। यदि हृदय खान है तो हमारे यहाँ कोयले की कालिमा होगी हीरे नहीं।

हमारा हृदय तो खदान ही है। जब हम पैदा होते हैं तो निर्मलता हृदय में होती है, बिल्कुल साफ होता है। राग-द्वेष विकार नहीं होते लेकिन जैसे ही इस रंगीन दुनियाँ की हवा हृदय को लगती है तो आत्मा इस चकाचौंध में पागल हो जाती है परिणामस्वरूप यह हृदय जो खदान था परिणत होकर खान बन जाता है फिर इसमें से कोयला ही कोयला निकलता रहता है, कार्बन ही कार्बन आत्मा पर चढ़ता रहता है जिसे हम धर्म की भाषा में कर्मकालिमा बोलते हैं और यदि हम धीरे-2 राग-द्वेष -कषाय के परिणामों को त्यागते जायें तो यह खान ही खदान बन जाती है फिर इसी हृदय से ऐसे दिव्य रत्न निकलते हैं जो किसी भी पत्थर की खदानों से कभी नहीं निकलते हैं। हमारा हृदय खान भी है खदान भी है।

अतः हम अपने हृदय को मित्रता के द्वारा, प्रेम के द्वारा, विनम्रता के द्वारा, इंसानियत के द्वारा खदान बनाएँ क्योंकि परमात्मा की मर्जी हृदय को खदान बनाने में हैं और शैतान की इच्छा हृदय को खान बनाने में है। इसलिए हम परमात्मा को अर्पित होकर हीरों की तलाश करें कोयलों की तलाश न करें।

विज्ञान मन्दिर तो दे सकता है मगर हृदय नहीं।

Science can give temple, not heart.

धर्म कषायों को नष्ट करने को है, पुष्ट करने को नहीं

परमात्मा ने आदमी को जहाँ सबसे अच्छा दिल और दिमाग दिया है वहीं कषायों की गंदगी का गटर भी साथ रखा है। हृदय में दोनों चीजों को भरा जा सकता मल या निर्मल। हृदय तो एक कमरे की तरह है आज आदमी परमात्मा के द्वार पर भी अपनी कषायों की मलिनता को त्यागना नहीं चाहता, धर्म भी करना चाहता है तो अहंकार से लिप्त होकर। पियर्स - मोती साबुन से नहाता है और कीचड़ में डूबकर, खीर खाता है उसमें राख मिलाकर। धर्म तो साबुन की तरह है जो कषायों की गंदगी साफ करता है लेकिन आज धन के मद में आकर धर्म के मंच पर कषायें पुष्ट करके अपने आपको धर्मात्मा समझते हैं ऐसे लोग व्यंतर आदि देवों में पैदा होते हैं हम धर्म का साबुन भी लगा रहे हैं। और नाली का कीचड़ भी लगाते जा रहे हैं। जब तक हृदय में कषायों का समावेश रहेगा तब तक धर्म नाम मात्र को नहीं हो सकता। ऐसे लोगों ने ही धर्म को पाखण्ड बनाकर रख दिया है यदि धर्म से भी कषायें बढ़तीं हैं तो किसी से भी मिट नहीं सकती है धर्म तो कषायें नष्ट करने के लिए होता है पुष्ट करने को नहीं।

परमात्मा हमेशा उसी दिल में प्रवेश करता है जिसका हृदय स्वच्छ निर्मल हो परमात्मा से ही दिल की सफाई होती है लेकिन जो परमात्मा से ही बे-वफाई करे उसके लिए ऐसा दण्ड मिलता है कि दण्ड के समय उसे परमात्मा याद आ जाता है। यदि परमात्मा का स्थान हृदय को हम वासनाओं के लिए या कषायों के लिए अर्पित कर दें तो परमात्मा का नाराज होना स्वाभाविक है फिर हमारी गलती का परिणाम अवश्य मिलेगा।

जो धर्म की आड़ में अपनी कषायों को पुष्ट करते हैं परमात्मा ऐसे दुष्ट लोगों को दुर्गति के जाल में कसता है आदमी अपराध करके कानून की निगाह से बच सकता है लेकिन परमात्मा की निगाह से बच पाना मुश्किल ही नहीं पूर्णतः नामुमकिन है। अतः हम सभी को धर्म चेतन की निर्मलता के लिए करना चाहिए तभी हमारा जीवन पवित्र हो सकता है।

अंतरंग हृदय को छूने वाला ही स्वतंत्रता सैनानी हैं।

Freedom fighter is only the person who touches his internal heart

बत्ती मिली तो अगरबत्ती जलाना सार्थक है

दुनियाँ में अंधकार से पूरित हर आदमी का जीवन कई दुःखों से भरा हुआ है हमें परमात्मा ने दिया तो देकर भेजा है लेकिन उसमें न तेल है, न बाती है, तेल और बाती हमें दुनियाँ में आकर ईज़ाद करना है ज्ञान तेल है तो तप बाती है एक वो आदमी हैं जो अज्ञान का तेल भर लेते हैं और तपन् की बत्ती पैदा कर लेते हैं और अपना दिया जलाते हैं, ऐसा दीप चिराग नहीं कहलाता क्योंकि अज्ञान का तेल मिट्टी का तेल है और उसमें चिमनी जली हुई है ये चिमनी निरंतर कार्बन फैंकती रहती है जिससे हमारा घर भी काला हो जाता है ओर वो खुद ही काली हो जाती है चिमनी के संयोग में जो भी सामान आता है सभी काला हो जाता है यदि हम ज्ञान का घी भरकर तप की बत्ती लगाते हैं तो ऐसा चिराग परमात्मा की आरती करने के काम आता है। घी के चिराग से आँखों की रोशनी भी तीव्र होती है हमारे अंदर ज्ञान का घी हो और आचरण की बाती हो तभी परमात्मा के सामने अगरबत्ती लगाना सार्थक है अगर आचरण की बाती नहीं है तो अगरबत्ती भी कोई काम की नहीं है।

ज्ञान के बिना आचरण व्यर्थ है, श्रद्धा के बिना पूजा व्यर्थ है, राग के बिना संगीत व्यर्थ है, धर्म के बिना मानव जीवन व्यर्थ है, भाव के बिना पूजा व्यर्थ है उसी प्रकार अनुभव के बिना संयम व्यर्थ है। अगरबत्ती लगाने से परमात्मा प्रसन्न नहीं हो जाता, फल फूल चढ़ाने से परमात्मा आशीष नहीं बरसाता परमात्मा पदार्थ का भूखा नहीं है वह तो आचरण की पवित्रता को चाहता है। कई लोग परमात्मा को खुश बहुत कुछ अर्पण करके भी नहीं कर पाते और कई लोग कुछ न चढ़ाकर केवल स्वयं को ही अर्पण कर देते हैं और परमात्मा उन पर खुश हो जाता है। हम ज्ञान के दीप में तप का तेल भर लें तो यह चिराग हमें भी रास्ता दिखाता है और दूसरों को भी रास्ता दिखाता है। अगरबत्ती आस्था और श्रद्धा के द्वारा ही हम पत्थर की प्रतिमा में परमात्मा की मूर्ति को स्थापित करते हैं यदि श्रद्धा और आस्था नहीं होती तो प्रभु के मंदिर भी इस दुनियाँ में नहीं होते, श्रद्धा से ही तीर्थो की कीमत है श्रद्धा ही भक्ति को सार्थक बनाती है अतः श्रद्धा की बत्ती से ही पूजन की अगरबत्ती लगाना सार्थक होगी तभी जीवन में परमात्मा के समान दीप प्रज्जवलित हो सकता है।

साधु संसार को ही परिवार बना लेता है
परिवार नहीं छोड़ता।

A Saint does not desert his family but makes the whole world his family.

जीवन को बंजर नहीं उपजाऊ बनाओ

संसार में प्रत्येक प्राणी अपना-अपना जीवन लेकर आता है फिर चाहे छोटा जीवन हो चाहे बढ़ा जीवन हो, कम दिनों का हो, चाहे ज्यादा दिनों का हो, जीवन तो जीवन ही है यह बात सत्य है वर्तमान में जो भी इस धरती पर पैदा होगा वह बंजर भूमि की तरह मिथ्यात्व परिणामों के साथ ही जन्मेगा। हम सभी का जीवन बंजर भूमि की तरह अनुपजाऊ है जिसमें न सम्यग्दर्शन है, न ज्ञान है, न चारित्र है, धर्म न कोई फूल है, न उसमें बीज ही अंकुरित हुआ है ऐसा जीवन जन्म से ही हम सभी का है ऐसी अवस्था में हम सभी अपने जीवन में कर्तव्यों की भावना पैदा करके उस जमीन रूपी जीवन को उपजाऊ बनाएँ और सत्य का स्वरूप जानकर उसे अपने जीवन में आरोपित कर लें जब धर्म का वृक्ष जीवन में फलीभूत होने लगेगा तो कई आचरणों के फूल लगेंगे और सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र के सुंदर फल लगेंगे।

अनादिकाल से हम बंजरभूमि के जीवन में ही लगे रहे कभी थोड़ी सी उपजाऊ भूमि बना ली तो बीज डालना भूल गये कई जन्मों में हम अपने जीवन को धार्मिक बना ही नहीं पाये वे संस्कार एकत्रित हो जाने पर हम सम्यक्दर्शन से विमुख हो गये। कई बार हमारी जमीन को जोतने वाला किसान नहीं मिला जिस कारण हमारी जमीं पर व्यर्थ के पेड़ों ने अपना अड्डा बना लिया, कई बार हमें सद्बुद्धि की उपलब्धि नहीं हो सकी लेकिन आज यह दुर्लभ मनुष्य भव को पाकर हम यदि बंजर जीवन को धार्मिक जीवन ना बना पाये तो हम जीवन की सबसे बड़ी भूल कर बैठेगें जिसे परमात्मा कभी भी माफ नहीं करेगा।

सत्य का बीज फलित करने के लिए हमें उनके चरणों में जाकर अपने आपको अर्पित करना पड़ेगा जिन्हें सत्य का फल फलीभूत हो चुका है अपने जीवन में से सभी कंकड़-पत्थरों को हटाकर उसमें कोमल मिट्टी भरना पड़ेगी अपने जीवन को जोतना (बदलना) पड़ेगा फिर उसमें धर्म का पानी देना पड़ेगा और बीज डालकर उसकी रक्षा करनी पड़ेगी समय-समय पर उसकी देखभाल करनी पड़ेगी तब कहीं निश्चित समय पर हमारे जीवन में सुख शांति के सुन्दर फल प्राप्त हो सकेंगे। अत: हम सभी सत्य-असत्य को जानकर जीवन को कर्तव्यमय बनाकर गलत से सही रास्ते पर आ जायें तभी बंजर जीवन रत्नत्रय पाने के योग्य बनकर उपजाऊ फलीभूत हो सकेगा।

कलाहीन जीवन वरदान नहीं अभिशाप है।

Artless life is not a boon but a curse.

ज़िन्दगी जीने के लिए है, मरने के लिए नहीं

''ज़िन्दगी जिन्दा दिली का नाम है।
मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं''

हर इंसान जिंदादिली की तरह सर उठाकर जीने की तमन्ना हमेशा से ही अपने दिल में संजोये है। मुर्दापन किसी भी आदमी को पसंद नहीं है। उम्र को गुजारना ज़िन्दगी की नजाकत नहीं, बुझदिलों की तरह जीना ज़िन्दगी का नज़ारा नहीं, खाक में मिलने के लिये जीना ज़िन्दगी नहीं, ज़िन्दगी महकते फूल की बहार है, ज़िन्दगी महके गुलशन की सौम्यता है। जब हम अपनी ज़िन्दगी को इन्द्रियों के कार्यो, विषय- भोगों अथवा सांसारिक कार्यों में लगाते हैं तो हमारी ज़िन्दगी मौत की ओर गमन करने लगती है फिर संसार का चक्र जनम-मरण की अवस्थायें बढ़ने लगतीं हैं। सुप्त अवस्था के व्यक्ति मरे हुए जैसे है। सुप्त व्यक्ति के जीवन में मौत निर्मित हो जाती है जागा हुआ व्यक्ति परमात्मा की जागीर को पाकरके आनंदित रहता है। कोई व्यक्ति कई दिन तक सोता रहे तो वह खुद अपना जीवन व्यर्थ समझने लगेगा। ठीक वैसे ही हम परमात्मा की तरह जीने के लिए इंसान बने हैं, मरने के लिए नहीं।

जीवन पानी की बूँद की तरह है कौन सा क्षण आ जाये जिसमें बूँद का अस्तित्व समाप्त हो जाये इस बात का कोई पता नहीं है। आदमी का भविष्य अदृश्य है ऐसे समय में चंद दिनों के समय को हमें धार्मिक बनकर कई अनुभवों को अनुभूत करके उन्हें आत्मसात् करके जीना चाहिए। पुरानी धारा पर चलना नयापन नहीं है नयेपन के बिना जीवन में किसी भी तरह का उल्लास नहीं है। हमारा 95 प्रतिशत जीवन कल के आधार पर ही चल रहा है कल भी वही किया था उठना-नहाना, दुकान जाना, भोजन करना और सोना आज भी वही प्रक्रिया है कोई नयापन नहीं है जब हम आत्मानुभव करें तो नई अनुभूतियों से परिचित होंगे तभी ज़िन्दगी जिन्दादिली से जी सकेंगे।

जीने के लिए अपने आपको जानना जरूरी है मरने के लिए दूसरों को जानना जरूरी है। आज जितने भी महान संत हैं उन्होंने स्वयं को ही जाना है स्वयं को जानने में पॉजिटिव परमाणुओं को हम आत्ससात् कर लेते हैं संतों के समागम से हमें ऐसी अदृश्य शक्ति प्राप्त होती है कि परमात्मा के अनुभव और प्रकृति का सिद्धान्त हमारी अनुभूतियों में झलकने लगता है। अतः हम सभी अपने स्वभाव को जानें और उसी में लीन होकर जीने की तमन्ना करें तभी ज़िन्दगी ईज़ाद हो सकेगी और हम अपना जीवन जिन्दा दिली से जी सकेंगे।

मज़हबीं दास्तां पाक दिल में नसीब

जिस सज़्दा से इंसान का दिल पाक न हो, जिस अवादत में इंसान के मन साफ ना हों ऐसे लोगों की पूजा से परमात्मा कभी खुश नहीं होता है। साफ कपड़े पहन लेने से किसी का दिल पाक नहीं हो जाता यदि ऐसा होता तो सभी अमीर लोगों का दिल पाक होता लेकिन ऐसा नहीं है। जितना भी दिल नापाक होगा वह ज्यादातर अमीरों का होगा गरीबों के यहाँ तो परमात्मा का निवास रहता है। संसार की मूल जड़ संसार की वस्तुओं में आसक्त है। जब कोई इंसान अपने अस्तित्व को भूलकर आसक्त हो जाता है तो वह मरना मंजूर कर लेता है लेकिन छोड़ना मंजूर नहीं करता है। घर में जितने भी लोग मरते हैं, वे सब लोभी हैं, आसक्ति से भरे हुए हैं, व्यक्ति जब बेईमानी से धन इकटठा करता है जोरा-जोरी, फिर रखने के लिए लाता है तिजोरी। ईमानदारी से पेट आराम से भर सकता है लेकिन तिजोरी नहीं भरती। एक गरीब का पेट भी भरना सरल है और पेटी भी भरना सरल है लेकिन एक भूखे अमीर का पेट तो भर सकता है, लेकिन उसकी पेटी ब्रह्मा भी नहीं भर सकते। मन के गड्ढे को भरना बहुत कठिन ही नहीं असंभव है। सिकन्दर, तैमूर लंग, सद्दाम हुसैन, चंगेज खान ये भी मन को न भर पाये मन को यदि भरा जा सकता है तो संतोष और समता से भरा जा सकता है। लोभ ही पाक दिल को नापाक कर देता है, परमात्मा को भी पाक दिल की जरूरत है। पाक दिल में ही मज़हबी दास्तां पैदा होती है।

धन, वैभव, मकान, महल ये सभी लोभ करके आसक्ति करके प्राप्त नहीं किये जाते हैं, इनको पाना पुण्य का उदय है। पूर्व में कर्म अच्छा किया है तो जरूर मिलेगा अन्यथा कुछ भी न मिलेगा। भूखे पेट को भरना सरल है लेकिन भूखे मन को भरना कठिन ही नहीं असंभव है। आज आदमी को 900 रूपये मिले हैं तो 900 रूपये भोगने का आंनद नहीं है 900 रूपये का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। चिंता यह है कि 100 कमाकर हजार कैसें करें? इसी चिंता आसक्ति में अपनी पूरी ज़िंदगी गुजार देता है। संतोष के अभाव में व्यक्ति चारों ओर बे-हताशा भागता है। जबकि जानता है कि हम जिसके लिए इतनी दौड़धूप, परिश्रम कर रहे हैं यह सभी मेरे साथ नहीं जाने वाले हैं। फिर भी आसक्ति जीव को नचाती रहतीं है। आज आदमी की ज़िंदगी का 80 प्रतिशत भाग मात्र सोचने और चिंताओं में व उनके पीछे भागने में ही निकल जाता। अपने जीवन के बारे में उसे सोचने की फुर्सत ही नहीं है। जीवन के बारे में सोच नहीं पाएगा तो वह अपनी ज़िंदगी को फूल जैसी महकती हुई कैसे बनाएगा

आज आदमी से पवित्रता की बात कहो, शुद्धता की बात कहो तो वह अपने शरीर को शुद्ध कर लेता है, वह अपने घर को शुद्ध कर लेता है व अपने कपड़े शुद्ध कर लेता है, इसी को पवित्रता समझने लगता है। लेकिन कहते हैं कि शरीर में मलमूत्र, खून, पीव, हड्डी, माँस, मज्जा भरा हुआ है। ऊपर से एक त्वचा चढ़ा दी गई है ऐसे शरीर को धोने से पवित्रता नहीं हो जाती। यदि गंगा, जमुना आदि नदियों के पानी में नहाने से बैकुण्ठ हो जाता है तो उसमें रहने वाली मछलियाँ सर्प कछुआ मगर आदि सभी परम् पवित्र माने जाते और वे सभी वैकुण्ठ जाते। इसलिए तन की सफाई पवित्रता नहीं अंतरंग क्रोध लोभादि की सफाई करना हमारी पवित्रता है। अच्छी ज़िंदगी का निर्माण करने से पहिले हमें चाहिए कि पूर्व की गंदगी को हटा दिया जावे। यदि पूर्व में खेतों को जोता न जाये और उसमें से कंकड़ घासादि को हटाया न जाये तो बीज डालने पर वह समुचित तरीके से फलीभूत नहीं होता है। यदि खीर आप खा रहे हैं और उसमें कोई कंकड़ डाल दे तो खीर का सारा आनंद मिट्टी में मिल जाता है। पर वस्तु को पाने का विचार करना परमात्मा की नजर में अपराध है।

लक्ष्मी जी की फोटो में लक्ष्मी जी हाथों में पैसा गिराती हुई होती हैं, वह धन यह संकेत दे रहा है कि यदि मुझे उठाओगे तो पहली शर्त है कि झुकना पड़ेगा, तुम्हारी स्वतंत्रता समाप्त हो जायेगी, दूसरी शर्त आपको नीचे नरकों में गिरना पड़ेगा, लोभ के कारण ही प्राणी लाभ की चिंता करता है और लाभ होता है तो लोभ बढ़ जाता है। लाभ लोभ की जननी है। लेकिन लोभ के कारण ही हमारे अंदर क्रोध उपजता है। यदि लोभ न हो तो क्रोध हो ही नहीं सकता, यदि लोभ न हो तो मान हो ही नहीं सकता, इसलिए सभी कषायों की सभी गुनाहों की जड़ है तो वह है लोभ। अतः यह लोभ का त्याग कर पाक दिल करके ही मज़हबीं दास्तां को नसीब करना चाहिए।

विज्ञान प्रदर्शन तो दे सकता है मगर दर्शन नहीं।

Science can give show off but not philosophy.

रज को गज शब्दों के आडम्बरी ही बनाते हैं।

Preposters make mounts of mami - hills.

देने में आनन्द है लेने में नहीं

संसार में सबसे ज्यादा आनन्द में कोई है तो वह है ईश्वर। मानव को देखते हैं तो दुःख ही दुःख दिखाई देता है। ईश्वर आनंद में इसलिए है वो हमेशा सबको देता ही रहता है दुखी को सुख देने वाला है तो ईश्वर, गरीब को धन देने वाला है तो ईश्वर, व्यापारी को लाभ कराने वाला है तो ईश्वर, दुष्टों को सद्‌बुद्धि देने वाला है तो ईश्वर, भूखे को भोजन देने वाला है तो ईश्वर, मरीज को स्वस्थता देने वाला है तो ईश्वर, जानवर से इंसान बनाने वाला है तो ईश्वर, इंसान को हनुमान बनाने वाला है तो ईश्वर, और भक्त को भगवान बनाने वाला है तो ईश्वर। ईश्वर ने ही सारे ब्रह्माण्ड की रचना की है। ईश्वर के बिना दुनियाँ में एक पत्ता भी नहीं हिलता है। ईश्वर हमेशा देता ही रहता और सबको ही देता है शायद इसीलिये सबसे ज्यादा आनन्द में है। हम प्रेम बाँटते हैं तो कुछ आनन्द होता है लेने में आनन्द नहीं हैं क्योंकि लेने वाला देने वाले के पास भागता है देने वाला लेने वाले के पास नहीं। लोग परमात्मा के पास उसके दर पे माथा टेकने आते हैं ईश्वर किसी के दर नहीं जाता है। हम देना सीखेंगें तो आनन्द के स्रोत्र से हमारा खजाना अवश्य भरेगा।

हमारी वस्तु वही है जो दिये जाने पर कम न हो, बढ़ती ही चली जाये देने पर घट जाये वो वस्तु हमारी हो ही नहीं सकती। वैसे देने पर कभी भी कुछ घटता ही नहीं हैं यदि हम ज्ञान देते हैं तो हमारा ही ज्ञान बढ़ जाता है, यदि हम प्रेम देते हैं तो हमारे मित्र बढ़ जाते हैं, यदि स्त्री प्रेम न बाँटे तो हर स्त्री को अकाल में ही मरना पड़ेगा और पुरुष को प्रेम मिल जाता है तो वह अपना जीवन धन्य समझता है। व्यवहार में यदि मीठे बोल भी दे दिये जाते हैं तो हम स्वयं को आनन्दित समझने लगते हैं। एक छोटे से बच्चे को जरा सा प्रेम दिया जाता है तो वह बालक तत्काल गोद में आकर खेलने लगता है, बादलों को आनन्द पानी बरसाकर ही आता है, फूलों को आनन्द गुलशन को महकाकर ही आता है, पक्षियों को आनन्द उड़ उड़कर चहचहाकर ही आता है ठीक वैसे ही आदमी को आनन्द आहारदान देकर आता है जब किसी दुखी का इलाज करते हैं या कराते हैं और ठीक होने पर जब वह सम्मान करता है तो एक विशेष आनन्द की अनुभूति अंतस् में होती है। जब शिक्षक शिष्यों को विद्या देता है पश्चात् शिष्य प्रथम श्रेणी में पास होकर अच्छा अधिकारी बन जाता है तब शिक्षक के आनन्द की अनुभूति चरम सीमा को छूती है। यदि हम देना सीखें तो निश्चित ही सुख शांति को पा सकेंगे।

ज़िन्दगी मज़हब के लिये है, मज़ाक के लिए नहीं

मजाक में जीवन गुजारना आसान है लेकिन मज़हब जैसी ज़िन्दगी मुश्किल है। दुनियाँ में लोग आते है जीने के लिए और जीते हैं। मरी हुई ज़िन्दगी में न रौनक है, जिसमें न खुशियाँ हैं, जिसमें न उल्लास ही नजर आता है, न उत्साह नजर आता है पशुओं की तरह भार जैसी ज़िन्दगी मज़हबी ज़िन्दगी नहीं है, मज़हबी ज़िन्दगी में हमेशा उत्सव है खुशी है, प्रसन्नता है, जागृति है, फूलों जैसा खिला जीवन है और सूरज जैसी प्रकाशित है। यदि यह बातें जीवन में नहीं हैं तो यह ज़िन्दगी मज़ाक भरी ज़िन्दगी है। ज़िन्दगी के साथ मज़ाक करना सरल है क्योंकि मज़ाक करना मूर्खता और अज्ञानता का प्रतीक है और संसार अज्ञानियों से भरा पड़ा है और अज्ञानता संसार में भरी पड़ी है। ज्ञान है जो किसी अवतार से अवतरित होता है यदि जमीं पर अवतार न हुए होते तो ज्ञान का प्रादुर्भाव कभी भी न हुआ होता। ज़िन्दगी महज मज़ाक में जीने के लिए नहीं मज़हब की देहरी पर महकने के लिए है ज़िन्दगी हमारे लिए अनमोल तोहफा है।

दिन बिताना ही ज़िन्दगी नहीं, सूरज को उगता और डूबता हुआ देखना ज़िन्दगी नहीं, रोज-रोज खाना-पीना-कमाना बच्चों का पालन-पोषण करना ही ज़िन्दगी नहीं ये तो शारीरिक तल के कार्य है। खाना पीना शरीर को सुचालित करने के लिए है। बच्चों को पालना उनकी देखरेख में समय बिताना ये दूसरों के तल की बातें है सही में ये कर्तव्य नहीं हमारी गलती पर मिली हुई सजा है, हमारे अपराध का प्रतिफल है। हमारी ज़िन्दगी जब पर वस्तु की चाह की तरफ झुक जाती है तब हमारी हर क्रिया में वही वस्तु नजर आती है फिर हमारी सारी ज़िन्दगी मजाक का पुलंदा बन जाती है।

ज़िन्दगी इंसान के स्तर से उठने कि लिये है इंसान तक सीमित रहने के लिए नहीं। इंसान मज़हब के तल पर उतरकर वह काम कर सकता है जिसे फरिश्ते भी नहीं कर सकते, यदि इंसान संत बनकर तपश्चरण करे तो फरिश्ते भी उसके ऊपर फूल वर्षाने आते हैं और उसकी पूजा करके उत्सव मनाकर अपनी धार्मिकता को प्रकटाते हैं। लेकिन जो ज़िन्दगी के साथ महज मज़ाक करते हैं उनकी सेवा में फरिश्ते की बात तो बहुत दूर जानवर भी हर्ष नहीं मनाते। अतः हम सभी ऐसी ज़िन्दगी बनाएँ जिसमें हमें भी आनंद हो और दूसरों को भी आनन्द हो। हमारे रोम-रोम से खुशी उद्घटित हो और दूसरों को भी आनन्द हो। रंजो-गम-मायूसता और मातमी ज़िन्दगी न हो। तभी जीवन फूलों सा खिलकर दुनियाँ के बाग को महका सकता है।

सार जाने बिना परवरदिगार नहीं मिल सकता

यह बात जगत प्रसिद्ध है कि सत्य में भगवान है और भगवान है सत्य का प्रकटीकरण। सत्य भी दो तरह का है एक वह जो आँखों से सत्य लगे, कानों से सत्य लगे लेकिन फिर भी वह असत्य ही नजर आये, एक वह है जो अदृश्य हो और अनुभविक हो अनुभव के आधार से ही जाना जा सके ऐसा सत्य ही परम सत्य को अनुभूत करा सकता है। इससे यह सिद्ध होता है कि सत्य कोई मन्दिर - गुरुद्वारे में नहीं बल्कि अपने ही हृदय में विराजित है। मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे में हम सिर्फ इसीलिये जाते हैं जिससे हम सत्य को उद्‌घटित कर सकें। परमात्मा जैसा अनुभव करके सत्य को अनुभूत कर सकें। परमात्मा से बड़ा सत्य खोज पाना असंभव है। अतः हमें अपने जीवन में अपने ही जीवन का सारभूत तत्त्व जानना चाहिए यदि सार हम नहीं पा सके तो परवरदिगार को खोज पाना मुश्किल ही नहीं पूर्णतः अंसभव है।

हम सभी वस्तुओं से बहुत समय से परिचित हैं लेकिन वस्तु के स्वभाव से अथवा उसके सारभूत तत्त्व से परिचित नहीं हुए इस कारण हमारा आज तक परमात्मा से मिलन नहीं हो सका, हमसे परमात्मा न जाने कब से मिलने को तैयार है लेकिन हमने कभी भी उससे मिलने के लिए एक कदम भी नहीं बढ़ाया हमारा एक कदम भी बढ़ता है तो परमात्मा के 100 कदम हमारी ओर नजदीकी कम करने के लिए बढ़ जाते हैं। वस्तु का सार पाने के लिए हमें अपने भीतर से ही इच्छाशक्ति और तर्क शक्ति को उद्‌घाटित करना पड़ेगा। परमात्मा तो हमें केवल आशीर्वाद प्रदान कर देता है जिससे हम सार प्राप्त करने में समर्थ हो जाते हैं।

मनुष्य जीवन का सार है कि सत्य ज्ञान को उद्‌घटित करके सम्पूर्ण ज्ञान को प्रकट कर देना। यह कार्य केवल आदमी ही कर सकता है वह भी कोई विशेष पुरुष फिर ऐसे ही विशेष पुरुष महापुरुष बन जाते हैं। जैसे- महावीर, राम, हनुमान आदि। यदि मानव अपना अस्तित्व भूल जाये तो यही दर-दर का भिखारी बन जाता है मानव महाशक्तियों का अप्रकट रूप पुंज है मानव से सभी लोग हारे हैं चाहे वो देव हो या बड़े से बड़ा जानवर यदि हमने मानव जन्म जो अनमोल हीरा है, पाया है तो हमें जीवन का सार वह वास्तविक ज्ञान को पाकर, सबसे अच्छा आदर्श आचरण को धारण कर बुरे कर्मो को नष्टकर महाज्ञानी बनकर भगवत्‌ता को पाना चाहिए। तभी हमारा जीवन परम मंगलमय बनकर परमात्मा के खजाने को पाकर निहाल हो सकता है।

सुसंस्कार ही भविष्य में सज्जनता लाता है

हर प्राणी की उम्र किसी न किसी संस्कार में अवश्य गुजरती है, संस्कारों के आधार पर हमारा जीवन निर्मित होता है, अच्छे संस्कार हमारे जीवन में सज्जनता - ज्ञान - मित्रता - वात्सल्य प्रेम तथा निष्कषाय के परिणाम उन्नत होते हैं और गलत संस्कार अज्ञान, दुश्मनी, घृणा, और क्रूरता के परिणाम पैदा करते हैं। भोग में भव बीते तो भविष्य दुर्भाग्यमय पैदा करता है संस्कार का संगति से बहुत कुछ संबंध है इसीलिए सभी लोग संतो की संगति को सर्वोतम मानते हैं कुछ दुष्ट परिणाम वाले लोग भी होते हैं जिन्हें संतो की संगति काँटों जैसी प्रतीत होती है उनके जीवन में सुख शांति लेशमात्र भी नहीं होती है तथा सज्जनता रंच मात्र भी जीवन में निर्मित नहीं होती।

यदि हम गलत काम करते नहीं है लेकिन कोई करता है तो उसके साथ प्रशंसात्मक रूप से शामिल हो जाते हैं तो भी हमारे अंदर दण्डनीय संस्कार निर्मित हो जाता है कभी - कभी कोई एक व्यक्ति हिंसा करता है और उसका फल कई लोग पाते हैं। कई बार कई लोग हिंसा करते हैं और फल कोई एक मुख्य व्यक्ति पाता है। हिंसा और अहिंसा के परिणाम ही हमारे जीवन का आधार बन जाते हैं।

सबसे अच्छे विचार ज्ञान से ही हो सकते हैं ज्ञान के संस्कार ही हमारे जीवन के सूर्य को विकसित कर सकते हैं ज्ञान ही व्यक्ति को जमीन से आकाश की ओर उठाता है ज्ञान नहीं होता तो किसी के भी दिल में रोशनमयी चिराग नहीं जल पाता। अतः हम सभी कुछ ज्ञान के संस्कार पाने के लिए प्रयत्न करें तभी हमारा भविष्य और जीवन सफल हो सकेगा।

अहम को चौराहे पर जलाना महानता है।

Greatness is to openly destroy ego.

साधु का मिलन समाज की एकता का प्रतीक है।

Meeting of the saint is the sign of unity of sociely.

हँसती आँखे प्रसन्न मन का प्रतीक है।

Smiling eyes are the sign of happy mind.

बे–तर्ज में जिये तो कर्ज में मरोगे

कर्म के प्रतिफल में मिली उम्र के दिनों को बिताना जिन्दगी नहीं यह तो किस्मत है, पूर्व कृत का परिणाम है, धन कमाना, बच्चों को पालना ज़िंदगी नहीं। कोई जिन्दगी किसी की गर्ज में आकर नहीं जीता जो गर्ज में जीता हो वह गर्त में हैं यदि हमने खुद ही यहाँ स्वयं से अपराध किये हैं फिर हमारी ज़िन्दगी बोझ बन गई है तो यह कर्जमय ज़िंदगी है जैसे जब आप पत्नी बच्चों के साथ होते हैं तब यही ज़िन्दगी पत्नी और बच्चों को पालने पोषने में गुजरती है हमें कमाना पड़ता है और बच्चे पत्नी आराम से घर पर खाते हैं ये हम कर्जदार हैं और ज़िन्दगी कर्जमय है। और जब हम सत्यता का अनुभव करके अपनी ज़िंदगी को मस्त आनन्दमय बना लेते हैं तो यही ज़िन्दगी तर्जमय हो जाती है गर ज़िन्दगी में आनन्द उल्लास की तर्ज नहीं भर पाये तो ज़िन्दगी बे-तर्ज हो जाती है फिर उसे नियम से कर्ज में मरना पड़ता है।

जो लोग रात-दिन धन कमाने में खाने पीने में एवं विषय भोगों में लगे हुए हैं जिन्हें न अपना ख्याल है न अपने परमात्मा का ख्याल है ऐसे लोगों की दशा बड़ी ही दयनीय होती है। संतों का हृदय करुणाशील होता है उन्हें दयाशील होकर ऐसे लोगों की तरफ देखना पड़ता है ऐसे लोगों का कोई भविष्य नहीं होता और जिसने भविष्य नहीं बनाया है उसके भविष्य का भाग्य काले पानी में डूबा हुआ अंधकारमय है। बे-तर्ज की ज़िन्दगी फर्ज भूल जाती है। और मर्ज खराब कर देती है चार लाइन इस तरह हैं :-

क्या पता इस ज़िन्दगी का किस तरह का मर्ज है
फर्ज है ये ज़िन्दगी बे-तर्ज है या कर्ज है
गर्ज है न कर्ज है न हर्ज है ये ज़िन्दगी
नूर का भी नूर है जब ज़िन्दगी खुद तर्ज है।

ज़िन्दगी जीने का सही मकसद समझ में आ जाएगा तो यह ज़िंदगी कर्ज से फर्ज में, बे-तर्ज से तर्ज में और गर्ज से मर्ज में बदल जायेगी ज़िन्दगी प्रसन्नता से भरकर तर्ज में गुजरने लगे तभी यह जीवन गुलों से भरा गुलशन हो सकता है।

गुरु द्वार है दीवार नहीं।

The preecher is a gate not a wall.

जाले में नहीं उजाले में रहो

हर आदमी को इस दुनियाँ में आकर अपना जीवन निर्माण करना पड़ता है। मन के अस्तित्व का यही उपयोग है मन कभी चेतन की बात को स्वीकार कर लेता है तो हमारे जीवन में उजाला निर्मित होता है। उजाले में होने के कारण हम सत्य और असत्य से वाकिफ रहते हैं। उजाले में जितना भी समय गुजरता है वह अपने अस्तित्व को पाने के लिये ही गुजरता है। उजाले में ही हम परमात्मा के अस्तित्व को समझ पाते हैं लेकिन मन कभी इन्द्रियों के विषयों में कषायों में उलझकर उसे नहीं करता। तब ये मन उजाले की जगह मकड़ी की तरह जाले निर्मित करने लगता है। ऐसी स्थिति में चेतन की अज्ञानता जाहिर हो जाती है। जब जाले बनाने में आदमी मस्त होता है तो सांसारिक भोग विषयों में वो अपनी जान भी गँवा देता है। जाला बनाते – बनाते वह इतना फँस जाता है कि बहुत कुछ चाह करने पर भी वह उस जाले से बाहर नहीं आ पाता है। मकड़ी जिस तरह अपने मुख से तंतुओं को निकालकर जाल बनाती है वह जाल स्वयं रहने के लिए नहीं बनाती बल्कि अन्य जन्तुओं को फँसाने के लिये बनाती है जाले में और जाल हैं और उजाले में और उजाला है। जाले बना बनाकर हम अंतिम पड़ाव नहीं पा सकते उजाले में रहकर हम अन्तिम पड़ाव पा सकते हैं। जाल में रहकर अँधकार बढ़ता ही जाता है जाल में रहना ही बहुत बड़ा जँजाल है। इसीलिये हमें जाले में नहीं उजाले में रहना चाहिए।

जाल चाहे मकड़ी का हो चाहे संसार के दुःखों का हो अपने ही अन्दर से वह निर्मित होता, जो अपने अन्दर से उद्घटित होता हो उसे अपने ही अन्दर के विचारों से काटा जा सकता है। यदि मकड़ी से कोई पूछे कि तुम यह जाल क्यों बना रही हो तो उसका उत्तर होगा अन्य जन्तुओं को फँसाने के लिए और दूसरों को फँसाने के लिए यदि स्त्री से पूछो कि तुम शृंगार किसके लिये करती हो स्वयं अपने लिये या दूसरों के लिए तो उत्तर होगा दूसरों के लिए स्त्री और मकड़ी के विचारों में पूर्णतः समानता है। स्त्री स्वयं भी जाले में रहती है और दूसरों को भी जाले में फँसाती है। पुरुष स्वयं उजाले में रहना चाहता है और दूसरों को भी उजाले में रखना चाहता है। जब कोई स्त्री स्वयं जाले को काटकर पुरुषत्व पैदा करती है तो वह खुद उजाले में आ जाती है जैसे सीता जी – अंजना जी एवं आर्यिका माता जी आदि।

संसार का जाल बहुत बड़ा जाल है जिसकी शुरूआत का पता नहीं और अंत लापता है। संसार का जाल आकर्षण पर टिका हुआ है जब पुरुष

स्त्री के आकर्षण पर मोहित हो जाता है तब वह जाल में फँसता है आकर्षण अनाकर्षण हो जाये तो वही पुरुष उजाले में पहुँच जाता है। जाले में घोर अँधेरा है उजालों में आनन्द ही आनन्द है, अँधेरों में कई ठोकरें मिलती हैं, उजालों में ठाठ ही ठाठ हैं। जाले में मरे तो पहुँचेंगे श्मशान, उजाले में मरे तो मिलेंगे भगवान। जाले को सभी घर से हटाकर बाहर फेंकते हैं उजाले को बाहर से सभी घर में बुलाते हैं उजाले कीमती हैं कीमत से प्राप्त होते हैं। जाले कचरा हैं अतः हम सभी जाले के जँजाल से हटकर उजाले की रौशनी में अपना जीवन व्यतीत करें और जीवन में उजाला ही उजाला भरें तभी जीवन रौशन हो सकता है।

हम परतंत्रता को नहीं स्वतंत्रता को गले लगायें।
(साक्षात्कार करें)

Embrace liberty, not slavery.

धर्म जीवन का प्रयोग है विज्ञान जीवन की प्रयोगशाला।

Religion is an experiment of life and science is its lab.

जीवन में परिवर्तन उच्चारण से नहीं आचरण से होता है।

Transformation in life comes not by pronouncing virtues but by ladopting them.

भोजन अमृत भी है विष भी है।

Food is nnot only neetor but also piosim too.

स्वाद भोजन में नहीं भूख में है।

Taste is in hunger, but not in food.

धर्म के चार्जर से ही पूर्ण ज्ञान होगा

संसार में ऐसा कौन सा व्यक्ति होगा जो सम्पूर्ण ज्ञान को उपलब्ध नहीं होना चाहेगा? ऐसा कौन होगा जो सुख दुख दोनों में से सुख को छोडकर दुख को पाने कि इच्छा करेगा? कोई नहीं। हर व्यक्ति ज्ञान और सुख को ही चाहता है किसी भी व्यक्ति के विचार दुख को चाहने के नहीं हैं। हमारा मस्तिष्क कोशिकाओं से भरा हुआ है। अमेरिकन वैज्ञानिक ने मस्तिष्क की कोशिकाओं की गिनती की तो पुरुष के मस्तिष्क में 23 अरब और स्त्री के मस्तिष्क में 19 अरब कोशिकाएँ बताई ये कोशिकाएँ चार्ज भी होतीं रहती हैं। और फ्यूज भी होती रहती, डिस्चार्ज भी होती हैं। जो व्यक्ति अपना समय विषय भोगों में ज्यादा गुजारता है उसकी कोशिकाएँ फ्यूज हो जाती हैं, उसका ज्ञान बढ़ती उम्र में घटता हुआ होता है। जो इंसान अपना समय धार्मिक कायो में गुजारता है, अपना समय चिंतन- मनन- मंथन- अनुभव- सामायिक- आराधना में निकालता है उसकी कोशिकाएँ निरंतर चार्ज होती रहती हैं ऐसे व्यक्ति का ज्ञान उम्र बढ़ने पर बढ़ता चला जाता है जैसे साधुओं का ज्ञान, भगवान महावीर का ज्ञान। अतः धर्म के चार्जर से ही हम सम्पूर्ण ज्ञान को उपलब्ध हो सकते हैं।

जो व्यक्ति ज्यादा कोशिकाएँ खोलने में सक्षम हो जाते हैं वे लोग जल्दी ज्ञान पा लेते हैं। कोशिकाओं को चार्ज किए बिना कोई भी ज्ञानी न हो सकता है न होगा। एक मुनि ही सबसे ज्यादा धार्मिक हो सकता है इसलिए उसे ही केवलज्ञान होगा। यदि हम 50 प्रतिशत से ऊपर 60 प्रतिशत तक कोशिकाएँ खोलने में सक्षम हो जाएँ तो अवधिज्ञान प्राप्त हो सकता है। 80 प्रतिशत कोशिकाएँ चार्ज कर लें तो मनः पर्यय ज्ञान (ऐसा ज्ञान जिसमें दूसरे की मन की बात जान लें) हम प्राप्त कर सकते हैं और सम्पूर्ण चार्ज कर ले तो पूर्णज्ञान पा सकते हैं। भगवान महावीर ने श्रावक व साधुओं को चार्ज होने की कला अपने प्रवचनों में दिखाई है उनकी मुद्रा ही चार्जर का काम करती है।

हमारे शरीर में एक दायां भाग है एक बायां भाग है जिसका दायां भाग सक्रिय होता उसका बायां मस्तिष्क जागृत होता है जिसका बायां भाग सक्रिय होता है उसका दायां मस्तिष्क जागृत होता है। दोनों मस्तिष्क के बीच में एक अंतरंग आँख होती है जिसे सूक्ष्म ज्ञान की आँख कहते हैं। यह आँख खुलते ही हमारे दोनो मस्तिष्क जागृत और सक्रिय होने लगते हैं, ध्यान के द्वारा कोशिकाएं तीव्रता से खुलती है ध्यान वहीं है जो तीसरी आँख पर जाकर केन्द्रित हो जाये। तीसरी आँख से दिमाग की कोशिकाएँ खुलती हैं और ज्ञान से ध्यान में एकाग्रता आती है और एकाग्रता से ही हमारा ज्ञान सम्पूर्ण ज्ञान को उपलब्ध हो जाता है। अतः हम सभी ऐसे सत्य धर्म के चार्जर को प्राप्त करें तभी हमारा जीवन सफलता को प्राप्त कर उज्ज्वल हो सकता है।

विनम्रता से ज्ञान की कोशिकाएँ ऊर्जित होती हैं

झुकना भरने का आयाम है, ज्ञान मोक्ष का द्वार नहीं विनय मोक्ष का द्वार है। पढ़ने से ज्ञान नहीं याद करने से ज्ञान नही, रटने से ज्ञान नहीं, विनय से ज्ञान प्राप्त होता है। पुरुष के मस्तिष्क में स्त्री के मस्तिष्क से कुछ ज्यादा कोशिकाएँ होतीं हैं, स्त्री के मस्तिष्क में पुरुष के मस्तिष्क की सम्पूर्ण कोशिकाओं के छठवें भाग कोशिकाएँ कम होतीं हैं। हर व्यक्ति यहाँ अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए हमेशा उत्सुक है लेकिन आज के व्यक्ति को यह नहीं पता कि ये उत्सुकता सभी के अन्दर क्यों होती है कब तक वह ज्ञान से अपने आपको भरना चाहता है ज्ञान भरकर क्या मिलेगा ज्ञान से क्या पैदा होता है, ज्ञान कैसे प्राप्त होता है? किसको प्राप्त होता है, और किससे प्राप्त होता है? तो उत्तर साफ है ''विद्या ददाति विनयं'' एवं ''अविद्या ददाति अहंकार'' विद्या नशाति मानं कि विद्या (ज्ञान) विनम्रता से प्राप्त होती हैं। कोई आज विद्या से भरा हुआ है तो निश्चित विनम्र हुआ होगा। यदि कोई मुर्ख अनपढ़ है तो निश्चित है कि ये अहंकारी रहा होगा। अतः ज्ञान पाने का मतलब है कि ज्ञान के तन्तुओं को चार्ज कर लेना और ज्ञान के तंतु चार्ज विनम्रता से ही होंगे अन्य से नहीं।

ज्ञान और धर्म भिन्न नहीं हैं। जब ज्ञान विनय के बिना नहीं मिलता तो धर्म भी विनय के बिना नहीं मिल सकता है। पानी बरसता है लेकिन ऊँचे- ऊँचे पहाड़ जिन पर पानी पहिले बरसता है वे सभी सूखे रह जाते हैं और झुककर जिसने खाई बना डाली वहाँ पानी का तालाब बन जाता है, आँधी तूफानों में बड़े - बड़े अकड़ने वाले बाँसों के पेड़ उखड़कर धरती पर धाराशाही हो जाते हैं लेकिन घास जो झुकने वाली होती है वह सभी आँधी तूफानों को बड़े आराम से झेल लेती है। विनम्रता में सब कुछ सह सकने के गुण हैं।

स्त्री और पुरुष में मानव मान से भरा हुआ है तो स्त्री माया से भरी हुई है। पुरुष को स्त्री को झुकाने में अच्छा सा लगता है और स्त्री को पुरुष को नचाने में अच्छा लगता है। स्त्री विनम्र सी दिखती है लेकिन है नहीं अन्यथा बहुत ज्ञानी हो जाती दोनों एक दूसरे को धोखा देते हुए जीते रहते हैं। यदि पुरुष मान को स्वाभिमान बना डाले और स्त्री माया को समर्पण बना डाले तो विनम्रता के लक्षण उभर आएँगे और यह विनम्रता ज्ञान के सेल्सों को चार्ज करती जाएगी और एक दिन वह होगा कि जब सारी कोशिकाएँ चार्जेबल हो जाएँगीं और हमें सर्वज्ञता हासिल हो जायेगी फिर हम ऊर्जा का पिण्ड बन जाएँगे। हम स्कूल आदि जाते हैं शास्त्र आदि पढ़ते हैं तो ज्ञान के सेल्स खोलने को ही पढ़ते हैं। अतः हम सभी विनम्र होते हुए अपने ज्ञान को बढ़ाते जाएँ तभी हमारे इस अमूल्य जीवन की सार्थकता हो सकती है।

मौत को मौत के घाट उतारो

जो भी प्राणी इस दुनियाँ में जन्म लेता वह अवश्य ही मरता है। दुनियाँ में रहते हुए कोई भी अमर नहीं हो सकता है लेकिन उन लोगों को या महापुरुषों को आज भी सारी दुनियाँ पूजती है जिन्होंने मरणशील दुनियाँ में रहकर अमरता प्राप्त कर ली। बड़ी मौत सभी को दिखाई देती है क्योंकि स्थूल है लेकिन प्रतिदिन प्रतिक्षण आयु घटती जा रही प्रत्येक जीव का कदम प्रतिक्षण मरघट की ओर बढ़ता जा रहा है लेकिन प्रतिक्षण की मौत को हम लोग आज तक न समझ सके। यदि वह पता लग जाये तो मानव मौत को मौत के घाट उतारने के लिए उतावला हो जाये तथा अपनी ज़िंदगी को नया आयाम देने को तैयार हो जाये दुनियाँ में ऐसा कोई नहीं जो प्रतिक्षण न मरता हो। मृत्यु को समझने से दो तथ्य घटित होते हैं एक तो यह कि जीवन जीने की कला अंदर में पैदा होकर बाहर में उद्भूत होती है और दूसरी यह कि वह व्यक्ति मरने के बाद भी अमर कहलाता है। अमर वही है जो सोती हुई दुनियाँ से पूर्णतः जागकर गया। जागकर जीने वाले की मृत्यु नहीं हो सकती मृत्यु उसकी ही होती है जो अंतरंग आँखों को बंद करके मरा है। मरना बुरा नहीं है आँख मूँद कर मरना बुरा है आँख मूँद कर मरना कुत्तों जैसी मौत है और आँख खोलकर मरना इंसानों की मौत है। इंसान के चौले में मरने से किसी की मौत इंसानियत की मौत नहीं हो जाती और जानवरों की खाक में मरने से कोई जानवर की मौत नहीं हो जाती। खाक से जानवर - इंसान के शरीर की पहिचान होती है लेकिन मौत की पहिचान अंतरंग समझ और नासमझ से होती है। इसलिए मौत को गहराई से समझ लिया जाये तो मौत, मौत के ही घाट उतर जाये।

ज़िंदगी को मौत कहो या मौत को ज़िंदगी कोई फर्क नहीं पड़ता, दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, रहस्य एक ही है सिक्का एक ही है। एक शैर के माध्यम से कहा - ''देख हिस्टरी इस बात का कामिल यकीं आया, जिसे मरना नहीं आया उसे जीना नहीं आया।'' चाहे मरने की कला सीखो चाहे जीने की कला सीखो किसी भी सीढ़ी से चढ़ो किसी भी तरीके से उतरो मिलेगी जीवन की कला ही।

चाहे राम के जीवन को देखें, चाहे कृष्ण के जीवन को देखें, चाहे हनुमान या महावीर के जीवन को देखें इन सभी ने मृत्यु को गहनतम् तरीके से जाना समझा और भेदज्ञान के बल से उन्होंने मृत्यु को जीतकर अजर - अमर पद प्राप्त कर लिया। समझदार व्यक्ति मौत से समझौता करके नहीं चलते मौत को ललकारते हुए चलते हैं, मौत का कुछ ऐसा ही स्वभाव है कि वह उसी पर

अपना अधिकार जमाती है उसी पर अपना प्यार करती है जो उसे समझ नहीं पाते। मौत को जानना बहुत सरल भी है और बहुत कठिन भी है। यदि हम अपने अंतरंग के विचारों को समझकर उसी के अनुरूप आचरण करें तो मौत समझ में आ जाये यदि हम बाहर - बाहर के विचारों को समझते हुए चलें तो समझ में न आये। ऐसे समझें कि पैर में घाव है यदि हम उसकी सफाई भीतर से न करें केवल पट्टी साफ करके बदलते रहें तो वह घाव ऐसा हो सकता है कि जीवन लीला समाप्त हो जाये और ज़िंदगी भर पीड़ा दे यदि उसी घाव को अंदर साफ किया जाये तो वह बाहर व अंदर से ठीक होकर स्वस्थ्य हो जाये।

विद्वान (ज्ञान) दे सकता है मगर भगवान नहीं।

Science can give knowledge, not the God.

क्रोध दिमाग का धुआँ है तो ध्यान है अग्नि।

If anger is the smoke of mind then concentration is the fire.

भक्ति दु:ख का हेतु नहीं सुख का सेतु है।

Worship is not for woes, it is bridge of happiness.

विवेक, विश्वास, आचरण मानवता की पूँजी है।

Logic , belief, conduct are wealth of humanity.

आदत सबसे बड़ी परतंत्रता है।

Habit is the biggest dependence.

कर्म परमात्मा से पूछकर करो

दुनियाँ में ईश्वर के बिना पत्ता भी नहीं हिलता यूँ कहो कि ईश्वर के बिना मर्जी के कोई भी काम नहीं होता है। हर इंसान के दिल में ईश्वरीय अंश हमेशा रहता है। जब कभी आदमी कोई गलत कार्य करता है तो एकांत में सोते समय वह परमात्मा अंदर से अवश्य बोलता है कि यह कार्य गलत है या इसे नहीं करना चाहिए। जब अपने मन में गलत कार्य करने के लिए मन की आवाज आती है तब समझना चाहिए यह आवाज परमात्मा के अंश की है और जब कभी गलत काम करते समय या गलत काम करने के बाद गलती अहसास की आवाज नहीं आती तो फिर परमात्मा के द्वारा ऐसे लोगों को दण्डित किया जाता, प्रताड़ित किया जाता है। यदि कोई अपने अपराध को दण्ड मिलने से पूर्व स्वीकार कर लेता है तो उसका दण्ड कम कर दिया जाता है। सजा माफ भी कर दी जाती है। किसी भी आदमी का अच्छा या बुरा कृत्य परमात्मा की नजरों से छिपा नहीं है। वह करोड़ों की नजरों से सभी लोगों को देख रहा है। हम जब भी दुनियाँ में कोई कार्य करें तो परमात्मा की बिना आज्ञा के न करें। यदि किया तो दण्डित हमें ही होना पड़ेगा परमात्मा को जो कार्य पसंद नहीं उसको न करें यह समझदारी से भरा प्रकाशमय विचार है।

आदमी अच्छे या बुरे जो भी कृत्य करता है उनका लेखा-जोखा परमात्मा के यहाँ होता रहता है फिर बाद में कृत्य के अनुसार उसका फल उसको परमात्मा के द्वारा दिया जाता है। रावण के अपने पास 18000 रानियाँ निजीपत्नी होने पर भी जब रावण ने दूसरे की पत्नी पर नजर डाली और उसका अपहरण किया तो बहुत शक्तिशाली रावण को भी परमात्मा के द्वारा जहन्नुम में पटक दिया इस दुष्कृत्य को करने में ज्यादा दिन न लगे लेकिन रावण को जो सजा और पीड़ा मिली है वह अकथनीय है। इसलिए जीवन में कोई भी कर्म करने से पहिले एकांत में बैठकर रात्रि में सोने से पहिले परमात्मा से पूछ लेना चाहिए यदि हृदय ऐसे कार्य को नहीं करना चाहता तो आप भी उसे स्वीकार न करें। बिल्कुल उसी तरह चलें जैसे पुत्र की शादी हेतु माता पिता लड़की देखने जाते हैं फिर जब लड़के से पूछते हैं तो वह कहता है जैसी माता पिता की मर्जी वही हमारी मर्जी। ऐसा ही आप भी यही कहते रहिए कार्य करने में जैसी परमात्मा की मर्जी वैसी हमारी मर्जी, हम परमात्मा के खिलाफ एक कदम भी न चलेंगे।

दुनियाँ में जितने भी रोग से पीड़ित लोग नजर आ रहे हैं।, जितने भी मानसिक दुखी नजर आ रहे हैं जितने भी भिखारी,

दरिद्री, धनहीन, ये सब दुष्कृत्य के करने पर दण्डित हैं। इन्होंने परमात्मा की बात को स्वीकार न करके अपनी मनमानी की थी आज उसका परिणाम सामने है। परमात्मा ने हम सभी को दुनियाँ में भेजा है। दुनियाँ की सुन्दरता देखने के लिए न कि उसे भोगने के लिए। देखने की जगह अतिक्रमण करते हुए जो भोग लेगा उसे अपराधी समझा जा सकता है। संसार में जितने भी अच्छे लोग नजर आते हैं धनी व्यक्ति, सम्पन्न व्यक्ति, साधु संत ये सभी सत्कर्म के परिचायक हैं। परमात्मा सत्कर्म से खुश रहता है दुष्कर्म से क्रुद्ध होता है। हम यदि परमात्मा को खुश करना चाहते हैं तो हमें चाहिए कि हम सत्कर्म करें। यदि हजार सत्कर्म करने पर एक दुष्कर्म भी कर दिया जाये तो परमात्मा माफ नहीं करता सजा तो देता ही है।

यदि हमें दुनियाँ में अपना जीवन शांति - सुख से बिताना है तो कभी भी हमें कर्तव्यों से विमुख होकर अपराधिक प्रवृत्ति नहीं बनाना है क्योंकि कर्म कुछ और नहीं संसार के रस का परिणाम हैं जबकि परमात्मा का प्रत्येक पुरुष के लिए यही संदेश है कि संसार में रहो लेकिन संसार में रस लेते हुए न रहो। सांसारिक रस लेने पर कर्म निर्मित होता है और कर्म से सुख दुख रूप अवस्थाएँ निर्मित होती हैं और संसार में भ्रमण करना पड़ता है एक रस न हो तो कोई भी झंझट नहीं है और यदि कर्म करना तुम्हें अच्छा लगे, कर्म में तुम्हें रस हो तो हर कर्म परमात्मा की आज्ञा को पालन करते हुए करो तभी जीवन में सुख शांति की लहर आ सकती है।

हम दुनियाँ में मरने के लिये नहीं जीने के लिए आये है।

We have come in the world to live not to die..

मनुष्य को चाहिए कि वह इंसान की तरह जन्में, देवता की तरह जीये और परमात्मा की तरह मरे।

man should take birth like a human being should live like angels and die like god.

समर्पण में स्वर्ग है अहम् में नरक।

Heaven is in serrender, hell is in pride.

त़र्ज समझकर फर्ज़ अदा करो तभी मर्ज़ सुधरेगा

दुनियाँ में हर आदमी अपनी जीवन शैली बनाने के लिए परमात्मा और आकाश के समान स्वतंत्र है आदमी ही क्या फिर चाहे वह गधा, कुत्ता या शेर या कोई पक्षी भी क्यों न हो सभी अपनी ज़िन्दगी के अपने आप में इन्द्र हैं जो भी जिस तरह अपनी ज़िन्दगी में जीता है उसे वह अपना फर्ज ही समझता है यह बात सही है कि फर्ज का फाउण्डेशन जीवन की तर्ज है। फर्ज से ही जीवन में विवेक की सीमा स्पष्ट नजर आ जाती है। तर्ज का मतलब शाब्दिक ज्ञान का क्षयोपशम नहीं बल्कि हृदयंगत किया गया वास्तविक अनुभव है। अनुभव ही चारित्र में प्रकट होकर अवतरित होता है इससे यह सिद्ध है कि जो भी अवतरित होता है वो अनुभव का प्रतीक है। तर्ज जितनी उत्कृष्ट होगी फर्ज उतना उज्ज्वल और निर्मल होगा फर्ज की पवित्रता के आधार पर ही ज़िन्दगी का मर्ज सुधरेगा, मर्ज तभी तक खराब रहता है जब तक तर्ज समझ में नहीं आती। सभी लोग अपनी तर्ज सँभालने में निरंतर प्रयत्नशील हैं सारा अध्ययन-पठन-पाठन तर्ज को उत्कृष्ट बनाने के लिये है।

कई लोग जीवन की तर्ज समझे बिना ही फर्ज बदल लेते हैं वे कभी अपना मर्ज नहीं सुधार पाते ऐसे लोगों का फर्ज - ढोंग - पाखण्ड और क्रियाकाण्ड बन जाता है। ऐसे फर्ज से मर्ज इसलिए नहीं बदलता है कि ऐसे पाखण्डी व्यक्ति को परमात्मा अनुभूत नहीं होता, न ही उसे कभी वह दिखाई देता है। परमात्मा को देखे बिना जीवन धारा की तर्ज बदलना नामुमकिन ही नहीं पूर्णत: असंभव है। संसार का मर्ज बदलना बहुत सरल है यदि हम वास्तविकता से अनुभवी हों। सारे शास्त्र - पुराण - वेद - वाइबिल - कुरान केवल अनुभवों की गाथाओं को गाने वाले हैं चारित्र की व्याख्या करने वाले पुराण केवल अनुभवों को अभिव्यक्त करते हैं। शास्त्रों में महापुरुषों के अनुभव हैं ज़िन्दगी अपने स्वयं के अनुभव पर है इसलिए हमारा शास्त्र हमारी ज़िन्दगी है।

तथ्य में तत्त्व को देखने की जब तक सूक्ष्म दृष्टिकोण का नजरिया जीवन में नहीं होगा तब तक प्रकृति का सत्य कैसे दिखाई देगा सत्य इतना अव्यक्त है जिसे गहन अनुभवी दृष्टि से ही पाया जा सकता है यदि ये प्रकृति हम परमात्मा द्वारा बनाई मानते हैं तो इसे वही जान सकता है जिसे परमात्मा ने सच्ची आँख दी है ज़िन्दगी की तर्ज कर्ज से हटाकर फर्जमय बनाने के लिए हमें परमात्मा को खुश करना पड़ेगा उसे खुश करने के लिए उसकी आराधना करना, सभी प्राणियों पर हार्दिक दया करना, सभी का दर्द अपने जैसा जानना किसी को पीड़ा नहीं देना इनसे ही खुदा खुश हो सकेगा तभी पुराना कर्ज हमारा हटकर जीवन फर्ज बनेगा तभी हमारा जीवन तर्जमय होना संभव हो सकेगा।

अपना पता हो, वही पते की बात करता है

मंज़िल का पता लगाना उतना सरल नहीं है जितना सरल मंजर का लगाना है शिवालय को खोजना उतना सरल नहीं है जितना शवालय को खोजना सरल है किताबों को पढ़कर लक्ष्य का पता बताने से किसी को पथ का पता नहीं चल जाता पथ को शब्दों से नहीं संस्कार से दर्शाया जाता है चाहे भगवान महावीर हो, चाहे भगवान राम हो, या हनुमान हो सभी ने लक्ष्य का पता मंज़िल का पता शब्दों की अभिव्यक्ति से नहीं आचरण अभिव्यक्ति से बताया आचरण की अभिव्यक्ति व्यक्तित्व का प्रकटीकरण है जिसने पढ़ने का अनुभव पूर्व में किया हो वही दूसरों को पढ़ा सकता है जिसने पूर्व में साईकिल चलाना नहीं सीखी हो वह दूसरों को साईकिल चलाने की कला नहीं सिखा सकता है। जिसने स्वयं तैरना नहीं सीखा हो वह दूसरों को तैरना नहीं सिखा सकता है ठीक वैसे ही जिसे स्वयं अपना पता नहीं वह वास्तविकता से ओत-प्रोत मंजिल का पता कैसे बता सकता है।

वैज्ञानिकों ने चाँद पर जाने की तैयारी की समुद्र में मकान बना लिए, आकाश में पक्षियों की तरह उड़ लिया, पानी में मछलियों की तरह तैर लिया लेकिन वैज्ञानिक लोग स्वयं से अभी तक अनभिज्ञ हैं सबको जानकर स्वयं को नहीं जान पाये। जो स्वयं अपने सूक्ष्म मन की बात को पकड़ सकता है वह दूसरों के मन की बात को भी कुछ समझ सकता है स्वयं की समझ में ही सबकी समझ है शास्त्रों का सार निकाला जाये, संतों के प्रवचनों का सार निकाला जाये तो एक ही निकलेगा कि स्वयं को जानने का प्रयास करो।

हमारी जेब में जो होता है हम उसी को सबको बाँट सकते हैं यदि हमारे पास नमकीन वस्तुएँ रखी है तो हम किसी का मुँह मीठा नहीं करा सकते हैं। परमात्मा के स्वरूप को बताने के लिए हमें सर्वप्रथम परमात्मा को आत्मसात् करना पड़ेगा। स्वयं के प्रति साक्षी बनेंगे तो परमात्मा स्वयं ही हृदय में प्रकट होगा। परमात्मा का निवास ही अपनी मंज़िल है उसका पता केवल स्वयं को जानकर ही हो सकता है स्वयं को जानने वाला स्वयंवर बनता है एवं स्वयंभू होने का पथ बता सकता है। अतः हम सभी प्रयत्न करके स्वयं को जानें तभी हमारे जीवन की सार्थकता नज़र आ सकती है यही जीवन की सफलता है।

वाणी को वीणा बनाएँ वाण नहीं।

Make your voice sweet like luste, not harsh like arrow.

चिराग रोशनी के लिए है अँधेरे के लिए नहीं

हम चिराग बनकर ईश्वर के दर से आये हैं, हर इंसान के पास ईश्वर प्रदत्त ज्योति है। हर आदमी यदि चाहे तो सारा विश्व रौशनमय कर सकता है। यह काम असंभव तो नहीं परंतु कष्टप्रद जरूर है। दुनियाँ में कई तरह के इंसान हैं एक ऐसे हैं जो मिट्टी के दिये (इस शरीर) की कदर नहीं जानते। कीमत के अभाव में वे समय का सदुपयोग नहीं कर पा रहे हैं। यदि इस मिट्टी के चिराग रूपी शरीर में चैतन्य भाव जागृत हो जाये तो यह जीवन रोशनी से भर जाये और चिराग जल जाये। इस मिट्टी के चिराग को जीवित करने के लिए हमें पूरा जीवन होश के साथ जीना पड़ेगा, हमारे शरीर का रोम-रोम सचेत रखना पड़ेगा। यह बात पूर्णतः सही है कि यदि चिराग हमारा जल जाये तो शरीर भी धन्य हो जाता है। वैसे मिट्टी के वे ही चिराग बाजारों में बिकते हैं जो रोशनी से भरने योग्य होते हैं या जो रोशन हैं। फूटे हुए चिरागों को कोई नहीं खरीदता। हम भी बहुत कीमती चिराग हैं, बदकिश्मती यह है कि चिराग की कीमत हम भूल चुके हैं, रोशनी के लक्ष्य का हमें पता ही नहीं है और ज़िंदगी अँधेरों में क्षण-क्षण समाप्त होती चली जा रही है। मजे की बात यह है कि फिर भी हमें अपने मिट्टी के चिराग में ज्योति जलाने की तमन्ना पैदा नहीं हो पा रही है, दुनियाँ के अँधेरे में हम रोशनी की बात भूल चुके हैं और गुम हो गये हैं लेकिन यह बात पूर्णतः सत्य है कि हमें ये चिराग अँधेरें को मिटाने के लिए नहीं अँधेरों में रोशनी से भरने के लिए मिला है जो रोशनी से नहीं भर रहे हैं वे परमात्मा की नजर में किसी न किसी क्षेत्र में अपराधी हैं।

हर इंसान के पास चिराग है जो परमात्मा द्वारा उपहार में मिला है इस चिराग में मिट्टी का तेल नहीं भरना है, इसमें शुद्ध घी भरना है। यदि चिराग मिट्टी के तेल से रोशन होगा तो तेल जलेगा और कार्बन फैलेगा जिससे प्रदूषण फैलेगा तथा अपना घर भी गंदा हो जायेगा ऐसा चिराग धर्म करते हुए सांसारिक इच्छाएँ रखने से होता है। यदि हम संतों के चरणों में बैठकर, परमात्मा की बात को मानकर अपने परिणामों में अपने विचारों में पवित्रता पैदा करके संत बन जायें तो चिराग में घी भर जाता है घी के साथ जलने वाली ज्योति से वातावरण महक उठता है तथा उस बाती की ज्योति से नैत्रों की ज्योति भी तीव्र होती है।

संसार में दो आग हैं, दोनों आग को हर इंसान यहाँ आकर ही पैदा करता है। एक संसार की विषय वासना, भोग विलास रूप भावनात्मक आग है जिसके जलने पर हम ही जल जाते हैं और उस आग को अपराध कहते हैं

तथा अपनी मानवता भूल जाते हैं, लेकिन दूसरी आग पवित्र ज्योतिर्मय है जिसमें अपराध को कोई स्थान नहीं है जहाँ सद्भाव है जीवन में सदाचार है मित्रता का व्यवहार है ऐसी भावना की परिधि जब हमारे चारों ओर निर्मित होती है तब हमारा चिराग रोशन होता है और ऐसा कि जिसकी ज्योति से कई लोग रोशन होते हैं। ज्यादातर लोग अपने चिराग को फोड़ने में उसके टुकड़े करने में मस्त हैं। उन्हें यह नहीं मालूम कि चिराग टूट जाएगा तो बाती बिना चिराग के कभी जल नहीं सकती है।

हम परमात्मा की आराधना करते हैं, साधु संतों की सेवा करते हैं, दान आदि धर्मिक कार्य करते हैं इन कार्यों में यदि हम भाव शून्य हैं परमात्मा की पूजा में भी हम परमात्मा के भूले हैं तो परमात्मा की ज्योति हमारे पास तक नहीं आयेगी और हम रोशनी से भर न सकेंगे, परमात्मा सभी चिरागों को जलाने में पूर्णतः समर्थ है लेकिन वे ही जल सकते हैं, जो परमात्मा की आग तक जा सकें। अतः हम सभी आराधना करें, स्वाध्याय करें, ध्यान करें, और अपने चिराग को परमात्मा से जरूर मिलायें। ध्यान देने योग्य बात यह है कि सारा खेल भावना का है हम भावना इतनी उज्ज्वल बनायें कि परमात्मा की भावना मेरी भावना में समाहित हो जाये, हम भक्ति में इतने तन्मय हो जायें इस तरह खो जायें जैसे कि परमात्मा अपने ध्यान में है। मुझमें और परमात्मा में जब भेद न रहेगा तब यह मेरा चिराग रोशनी से भर जाएगा और जीवन ज्योतिर्मय हो जायेगा।

परमात्मा साधनों से नहीं साधना से खुश होगा।

The God will glad by spiritrualit but not by sensual things.

धर्म युवा धारण करें तो धर्म युवा हो जायेगा।

If the youth follows religion our religion will become young.

हमें कर्ज लेकर नहीं कर्ज चुकाकर मरना चाहिए।

We should pay our debts before death to die as a borrower should be avoided.

आँख से नहीं दिखा तो दिल में भी नहीं मिलेगा

दुनियाँ में जब तक हम सम्पूर्ण ज्ञान को उपलब्ध नहीं हो जाते तब तक हम सभी पदार्थ को पहिले देखते हैं फिर जानते हैं। देखे बिना जानना असंभव होता है लेकिन जैसे ही परिपूर्ण ज्ञान की उपलब्धि होती है उसी समय देखना और जानना युगपत् हो जाता है। अंधा व्यक्ति पहले अचक्षु दर्शन से देखता है फिर जानता है। दृष्टि दो प्रकार की होती है एक दृष्टि वह है जो बाह्य पदार्थ को मात्र देखती है और उसे मस्तिष्क तक भेज देती है, दूसरी दृष्टि मान्यता की है स्वीकार करने की है स्वीकृत दृष्टि के आधार पर ही सारा जीवन चलता है और ढलता है। आँख से दिन में हम कई वस्तुएँ देखकर अनदेखी कर देते हैं वस्तुओं को बदल लेते हैं लेकिन स्वीकृत दृष्टि द्वारा जिस पर लक्ष्य लक्षित कर लिया जाता है सालों क्या भव-भव उसी दृष्टि के आधार पर व्यतीत होते चले जाते हैं जिसे हम मान्यता की दृष्टि से न देख पाये न तो उसको पाने का विचार बनेगा और न ही हम उसे कहीं देख पायेंगे यदि हमने परमात्मा को अर्न्तदृष्टि से स्वीकार नहीं किया तो मन्दिर में भी हम मूर्ति को देखकर उसमें परमात्मा को नहीं देख सकते हैं। बाहर की दो आँखें परमात्मा के प्रतिबिम्ब को देखने के लिए है और अंतस् की आँख से हम केवल परमात्मा को देख सकते हैं और सत्य का स्वरूप देख सकते हैं।

परमात्मा को देखना उतना ही कठिन है जितना अपने आपको, स्वरूप को समझना कठिन है। किसी भी वस्तु को पाने के पहिले उसका लक्ष्य बनाना जरूरी है वह लक्ष्य अर्न्तदृष्टि ही बनाती है, वह लक्ष्य अंतस् की आंख ही बनाती है। पश्चात् हम उसे ही पा जाते हैं। भगवान महावीर ने ईश्वरत्व गुण दिल में पा लिया था लेकिन यह तब हुआ था जब अंतस् की आंख ने उस अस्तित्व को देखकर स्वीकार कर लिया था हम परमात्मा को दिल में अभी तक अंतस् की आंख से परमात्मा को स्वीकार नहीं कर सके।

इंसान की आँख में और दिल में बहुत ही विलक्षण विशेषताएँ हैं वह आँख से सारी दुनियाँ को देख सकता है और दिल से सारी दुनियाँ पर दया कर सकता है। इंसान का दिल इतना विशाल है कि सारी दुनियाँ उसमें समा सकती है। यदि कोई इंसान अपने विशाल दिल को ही बिल बना लें तो परमात्मा भी उसके बिल की दीवारों को नहीं तोड़ सकता। यदि आँख के साथ दिल नहीं होता तो हम पा नहीं सकते थे यदि दिल होता और आँख नहीं होती तो हम देख नहीं सकते थे दोनों के सदुपयोग से हम पा भी सकते हैं और देख भी सकते हैं। अतः हम सभी अंतस् की आंख से भगवान के गुणों को देखें, द्रव्य को जानें और सतत प्रयास के द्वारा वे सभी गुणों को पाने के लिये निरंतर प्रयत्नशील बनें रहें तो निश्चित ही सब कुछ पाकर जीवन सफल बना सकेंगें।

दु:ख के नज़ारों में से ही सुख उद्‌घटित होगा

दुनियाँ में दो ही चीजें नज़र आती हैं एक नज़र और एक नज़ारा। देखा जाये तो सभी ओर ऐसे नजारे हैं जिनसे चिंता की लकीरें माथे पर बनना स्वाभाविक है। चिंता की लकीरें बनाना सरल है, मिटाना कठिन है। संसार में सुख भी है और दु:ख भी है। दु:ख भी दु:ख के नजारों से निकलकर आया है और सुख भी दु:ख के नजारों से निकला है। सुख के नजारों से सुख भी निकलता है और दु:ख भी निकल सकता है दु:ख में से सुख निकलना दिव्यदृष्टि का काम है और दु:ख से दु:ख और सुख से सुख निकलना परद्रव्य दृष्टि का काम है। हमारे पास जितना है यह हमारे पूर्व में किये का परिणाम है ज्यादा किया है तो वर्तमान में ज्यादा है और कम किया था तो वर्तमान में कम है। नजारा तो नजारा ही है किस्मत की लकीरों से प्राप्त होता है कम मिले और ज्यादा चाहें तो दुख होता है ज्यादा मिले और कम चाहे तो हम उसे परमात्मा की कृपा समझते हैं हम सभी की ये आदत है कि अच्छे काम के लिए भगवान् की कृपा और बुरे काम पर अपनी बद्‌किस्मती समझते हैं वे संत है या सज्जन जो दु:ख के नजारों में से सुख निकाल लेते हैं।

जब कभी एक दो दिन भोजन न मिले तो यही समझना चाहिए कि आज के दिन हमने किसी को दान नहीं दिया होगा यदि किसी से अपमान मिला है तब यही समझना चाहिए हमने भी इसका अपमान किया होगा। आज ये उस कर्म के विपाक को साफ करने जा रहा है। जब तक सूक्ष्म दृष्टि को पाकर कर्म का अटल सिद्धांत नहीं समझा जायेगा तब तक दु:ख में सुख खोजना मुश्किल ही नहीं असंभव है। दुनियाँ में कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को कुछ देता है ये तो व्यवहारिक लोकाचार की भाषा है। वास्तविकता तो ये है कि हर व्यक्ति अपने ही कर्मों का फल पाता है। दूसरे के कर्मों के फल को कोई पाता तो अपना कर्म निरर्थक हो जाता और सारा संसार निर्भय होकर अत्याचार करता।

हमें जो प्राप्त हुआ है हम उसकी कीमत भूल गये हैं लेकिन जो हमें नहीं मिला है उसके पीछे हमारी निगाह लगी हुई हैं उसके पीछे हम सतत् गतिशील हैं जो मिला है उसका सदपुयोग नहीं किया है और पाने की चाहत में हम दु:खी हो रहे हैं। यदि हमारे पास 1 लाख रुपये हैं तो हम असंतुष्ट दिखाई देते हैं 10 लाख की चाहत करते हैं फिर चाहे 1 लाख रुपयों का भले ही सदुपयोग न हो पाये। हमें जितनी शक्ति मिली है हम उसका यदि उपयोग करेंगे तो भविष्य में और अधिक शक्ति प्राप्त हो सकेगी हम मन का सदुपयोग करें तो फिर हमें मन मिलेगा हम फिर हिताहित का विचार कर सकेंगे यदि मन का सदुपयोग नहीं किया तो भविष्य में मन नहीं मिलेगा अत: हम हर जगह सुख को खोजकर आनंदित रह सकते हैं ऐसी कला अपने अंदर प्रकट करें तभी जीवन की सफलता है।

आजाद होने के लिये दिलशाद होना जरूरी

दुनियाँ दुखियों के लिए ही है, दुःख में ही संसार का निर्वाण होता है और फिर संसार में सुख - दुःख दोनों होते हैं। हमारी अंतरंग प्रसन्नता ही अंतस् के दुःखों को दूर कर सकती है और बाहर के वातावरण को गुलशन बना सकती है। प्रसन्न रहने से हमारा हृदय कमल खिल जाता है हृदय खिलते ही हमारे अंदर के रोग संक्रमित होकर नष्ट होने लगते हैं और खेदखिन्न होने पर हमारे अंदर रोगों की वर्गणाएँ एकत्रित होने लगती हैं प्रकृति हंसते हुए के साथ है, रोते हुए के नहीं। यदि हम प्रकृति पर नजर डालते हैं तो जब नदी के किनारे या संमदर के किनारे बैठते हैं तो अपने आप ही शांति महसूस होती है। कभी हरे-हरे वृक्षों के पास बैठते हैं तो मन प्रसन्न हो जाता है प्रकृति स्वयं प्रसन्न रहती है और सभी को प्रसन्न करना चाहती है लेकिन व्यक्ति प्रकृति के विरुद्ध चलकर अपनी प्रसन्नता को खो बैठता है आदमी यदि प्रकृति के अनुसार अनुकरण करे तो प्रकृति उस आदमी को अपने सिर पर उठा लेती है और भगवत्तता से विभूषित कर देती है। प्रसन्न होने के लिए प्रकृति से समझौता करना जरूरी है तभी हम स्वाधीनता को प्राप्त करके आजाद (स्वतंत्र) हो सकते हैं।

प्रसन्नता धर्मी का एक लक्षण है प्रसन्नता में ही आदमी धार्मिक हो सकता है। कई लोग गम में खुश होने के लिए धर्म करते हैं ये उनका दुःख से बदलाव तो हो सकता है लेकिन उन्हें वास्तविक प्रसन्नता हासिल नहीं हो सकती है। जब हम सामने वाले व्यक्ति से कुछ भी आकांक्षा नहीं रखते और स्वस्थता में निःस्वार्थ अपने परिणामों को विशेष निर्मल करने के लिए धार्मिकता उत्पन्न करते हैं तब हमारे अंतस् से प्रसन्नता की किरणें प्रस्फुटित होती है ऐसी प्रसन्नता हमारे जीवन को स्वतंत्रता की ओर ले जाती है। यदि धार्मिक क्रिया को करते हुए हमारे अंदर प्रसन्नता के अंकुर नहीं फूटते तो समझना चाहिए कि हम अभी वास्तविकता से बहुत ही दूर है और जिसे हम धर्म समझते वह केवल अच्छा काम है।

प्रसन्नता अंतरंग का खिलता हुआ बीज है बाहर के निमित्त केवल कारण है। फूल मे खुश्बू प्रसन्नता है, फूल केवल कारण है। परमात्मा की मूर्ति प्रसन्नता में केवल निमित्त है अपना अहोभाव और उत्साह ही प्रसन्नता का मूल कारण है और अहोभाव परमात्मा के गुणों को जानकर अपनी कमजोरी पर खेद होता है और हमें भी ऐसी शक्ति और ज्ञान पैदा हो ऐसी भावना से परमात्मा के गुणों का गान होता है गुणगान से भक्ति होती है यही प्रसन्नता के हेतु है प्रसन्न होकर ही हम स्वतंत्रता को प्राप्त हो सकते हैं तभी यह जीवन सफल हो सकता है।

प्रभु की भक्ति विरलों को ही नसीब होती है

हर आदमी चाहता है कि परमात्मा की नजर मेरी ओर हरदम बनी रहे। प्रभु का आशीर्वाद हमारे ऊपर हमेशा बरसता रहे। परमात्मा मेरे हृदय में हमेशा - हमेशा विराजमान रहें। लेकिन यदि चाहत के साथ करनी नहीं होगी तो चाहत एक दिन ग़म में बदल जायेगी। यदि चाहत के साथ हम परमात्मा की आराधना कर्तव्य समझकर करने लगे तो ऐसी कोई भी चाहत नहीं होगी जो अधूरी रह जाये। कुछ करने से ही सफलता हासिल होती है नपुंसकों को (जो आलसी हैं, अनुत्साही हैं, संसारिक इच्छाओं में मस्त है) कभी भी सफलता नसीब नहीं होती या यों कहें कि नपुसंक लोग ऐसी किस्मत नहीं बना पाते जो किस्मत सफलता की मंजिल तक ले जाती हो। भगवान की भक्ति एक वह सफलता की चाबी है जिससे प्रत्येक असफलता के ताले को बहुत ही सहजता से खोला जा सकता है यदि हम सफलता के प्रति पुरुषार्थ करें तो सफलता की भीख खुदा के सामने हाथों को पसारकर मांगने की जरूरत नहीं सफलता स्वयंमेय ही मिलेगी लेकिन ऐसी प्रभु की सरल भक्ति करने का सौभाग्य दुनियां में सबको नसीब नहीं होता जिन्हें प्राप्त होता है वे इस धरती पर परमात्मा के प्यारे-प्यारे लाड़ले इंसान हैं।

यदि हमारे पास एक दुकान है तो चार मकान एक दुकान से बन सकते हैं लेकिन चार मकान से एक दुकान नहीं बन सकती। लेकिन प्रभु भक्ति में इतनी शक्ति है कि एक प्रभु की भक्ति से ही दस दुकानें बन सकती हैं। प्रभु भक्ति का प्रसाद ही है कि भक्तों के दिल में आनन्द का समन्दर लहराता है जो प्रभु की भक्ति करते हुए भी अपना अहंकार ईर्ष्या कषाय राग व द्वेष को छोड़ना नहीं चाहते। ये लोग वास्तविक भक्ति न करके नाटकीय भक्ति करते हैं ऐसे लोगों को चाहिए कि भक्ति का फल तो प्रेम, मित्रता, सौहार्दता, प्रसन्नता है कषाय आदि नहीं। ऐसे लोग अभी तक भक्ति के रस को न समझ ही पाये हैं न चख ही पाये हैं। भक्ति ही भक्त को भगवान से मिला देती है और भगवान से मिलने वाला आनन्दित होना जरूरी है अतः भक्ति ही मानव जीवन को सफल बनाती है और कोई नहीं!

अंतर बलवती भावना बाह्य प्रतिकूल को
अनुकूल बना देती है।

Our powerful internal will makes compitible to
uncompatible exteriar.

अपने जुर्म की आलोचना से सजा कम

यदि हम सूरज को हाथ में लेकर आज की इस दुनियाँ में कोई ऐसा आदमी ढूंढे जिसने कोई जुर्म नहीं किया हो तो शायद मेरी एक नहीं हजारों लाखों जिन्दगी निकल जायेगी लेकिन एक आदमी भी नजर न आयेगा। गलती करना आदमी का स्वभाव नहीं है यह उसकी एक बुरी आदत है कहा जाता है कि आदमी का भूल करना स्वभाव पड़ गया है यह कथन आदत को स्वभाव कहने की अपेक्षा से है जैसे क्रोध एक बुरी आदत है इस आदत को ग्रहण करने के अनुसार ही उस व्यक्ति को क्रोधी स्वभाव वाला कहा जाता है। यद्यपि जुर्म करता है अपराधों में जीता है और अपराध की सजा भी वह पाता है। सजा पाकर कोई आदमी सचेत हो जाते हैं लेकिन कोई आदमी फिर वैसा ही अपराध करते रहते हैं। अपराध को दुबारा नहीं दोहराना ही इंसानियत है। यदि हमसे भूलवश या जानबूझ कर कोई अपराध हो गया है तो उस गलती के लिये हमें जिस आशक्ति से भूल हुई थी उससे ज्यादा ग्लानि से भरकर उस गलती की आलोचना की जाये, उसकी निन्दा की जाये, उस गलती का प्रायश्चित (दण्ड) लिया जाये ऐसा कहने से प्रकृति प्रदत्त सजा कम हो जाती है। यदि हम गलती की आलोचना आदि न करें तो सजा पूर्ण मिलेगी। यदि गलती पर हम गलती करते ही करते रहे तो सजा और ज्यादा बढ़ जाती है अदालत में भी यह नियम है। यदि अपराधी अपनी गलती की आलोचना निन्दा स्वयं कर उठे तो सजा कम हो जाती है यदि कोई कैदी जेल में सज्जनता का व्यवहार करे तो जेलर उसकी सजा कम करवा देता है। यदि कोई शिष्य गुरु के सामने गर्हा करता हुआ दुखी होता हुआ अपनी गलती को स्वीकार करता है तो उसका दण्ड कम हो जाता है यदि ईश्वर के चरणों में कोई अपनी गलती पर दुखी होता है तो ईश्वर का दण्ड कम हो जाता है ऐसा कहा जाता है अपनी गलती की आलोचना, निन्दा, गर्हा करके प्रायश्चित्त लेना अपनी सजा को कमजोर करना है।

इंसान यदि गलती को स्वयं समझ लें तो वह गलती गलने लगती है और वह समझ नहीं पाये तो गलती फूलने फलने लगती है गलती के दो ही पथ हैं ऊपर और नीचे। हम नासमझ हों तो गलती ऊर्ध्वगामी हो जाती है यदि हम समझदार हैं तो गलती अधोगामी हो जाती है। मुरझाने लगती है अथवा सूखने लगती है, गलत को गलत भी वहीं स्वीकार करता है जिसे सजा कम करनी है। अज्ञानता में लोग गलत को वास्तविक समझते हैं लेकिन ज्ञान होने पर यह बात बदल जाती है सत्य को गलत समझना उतनी बड़ी गलती है जितनी की गलत को सत्य समझना थी। गलती को कितना भी छिपाया जाये वह एक न एक दिन

प्रकट हो ही जाती है और सत्य को कितना भी दबाया जाये वह एक न एक दिन प्रकाशित हो ही जाता है। इसलिये सत्य की गलत से किसी भी प्रकार की तुलना नहीं। सत्य वह है जो हर आदमी सत्य समझे। गलत वह है जिसे हर आदमी गलत समझे। गलती सत्य के सामने बहुत कमजोर है गलती खुद ही कमजोर है इसलिये अपनी रक्षा, मायाचारी, लोभ, क्रोध व मान के द्वारा करती है जबकि सत्य खुले आकाश की तरह है जिसके सामने क्रोध, मानादि कुछ भी नहीं टिकता। सत्य शेरों की तरह खुले जंगल में अकेला निर्भीक रह सकता है लेकिन असत्य एक कमरे में भी रहेगा तो डरपोक की तरह रहेगा हमें हर समय अपनी गलतियों को दोहराना नही चाहिए उनको कम करते हुए एक दिन गलतियों से मुक्त होना चाहिए। यदि गलतियों को हम समझ ना पायेंगे तो गलतियाँ ओर ज्यादा हो जायेगी। और यदि गलतियों को हटाते जायेंगे तो एक दिन गलतियों से रहित होकर पूर्ण इंसान हो सकते हैं। अतः अपना जुल्म निन्दनीय समझकर उसे आलोचना निन्दा के द्वारा गलाईये तभी जुर्म की सजा मिलने के पूर्व ही कम हो जायेगी। यही बुद्धिमानी का रास्ता है। तभी हम अच्छे सज्जन पुरुष कहलाने के अधिकारी होंगे। यहीं से जीवन सफल होगा।

संत मुँह से नहीं आचरण से बोलते हैं।

Saints express them selves throught their does not through words.

स्वयं की गहरी खुदाई करने वाला ही गुणमयी
हीरे ढूंढ़ सकता है।

Only self criticizer virtueous can search diamonds.

धर्म बुढ़ापे की दवा नहीं युवापन का टॉनिक है।

Religion is not a medicine for oldage but a tonic for youth.

अनुभव सभी समस्याओं का समाधान है।

Experience is solution of all the problems.

परमाणु के गुलाम नहीं मालिक बनना सीखो

गुलामियत की ज़िंदगी से मरना भला। गुलाम वही हैं जिन्हें जीवंत दशा का बोध नहीं। दुनियाँ में इंसान दो दशाओं में जी सकता है एक दशा में परमाणु का गुलाम बनकर दूसरी दशा में स्वयं मालिक व परमाणु को गुलाम बनाकर। जब इंसान परमाणु पुद्‌गलों के पीछे दौड़ लगाता वह विषयों में आसक्त रहता है। पुद्‌गलों को भोगते समय उसमें तन्मय हो जाता है। खाने की वस्तुओं में अच्छे व्यंजन मिलने पर उसमें मस्त होता है, कोई धन पड़ा मिलने पर उसे उठाने के लिए झुकने लगता है तब यह आदमी परमाणुओं का गुलाम कहा जाता है, गुलामियत के संस्कार हमें पैतृक प्राप्त हैं। हम खुद इन्हें बहुत समय से निर्मित करते आये हैं, आज भी बहुत सारा जीवन गुलाम बनकर ही गुजरा है। यदि किसी की उम्र 60 वर्ष है तो उनसे पूछो कि आप कितने वर्ष तक स्वतंत्र रहे और कितने वर्ष तक गुलाम। तो पायेंगे कि पूरा जीवन गुलामियत का ही मिलेगा। गुलाम बनना सरल है, अपने स्वभाव का हथियार डाल देना कठिन है, लड़ना पड़ेगा और उसमें भी विजय हासिल करना पड़ेगी यदि हार हो गई तो फिर गुलाम ही रहना पड़ेगा। लेकिन वे संत ही परमात्मा के वास्तविक उपासक हैं जो परमाणुओं के गुलाम नहीं बनते परिणामों पर अधिकार रख के परमाणुओं को गुलाम बना लेते हैं, गुलामों के लिए धर्म नहीं है। धर्म तो वीरों का वचन है, गुलामों का नहीं।

दुनियाँ में आकर हर आदमी को अपनी आयु की ज़िंदगी गुजारना पड़ती है। ज़िंदगी को स्वतंत्र होकर जो गुजारते हैं, संत होकर जो गुजारते हैं वे इंसान इस धरती पर वीर पुरुष कहे जाते हैं। ऐसे पुरुषों के गीत गीता, कुरान, बाईबिल पुराण गाते हैं। महान ग्रन्थों में गुलामों के नहीं, वीरों के गीत गाये जाते हैं। यदि हम चाहें तो तीर्थराज शिखरजी पर पड़े हुए पार्श्वनाथ भगवान के परमाणु यहीं बैठकर अच्छे परिणामों के बल से खींच सकते हैं, ध्यान रहे पार्श्वनाथ भगवान के परमाणु हम तभी खींच सकते हैं जब भगवान पार्श्वनाथ जैसे भाव बना लेंगे। यदि वैसे ही निर्मल परिणाम न कर सके तो वहाँ के परमाणु हम प्राप्त नहीं कर सकते। चाहे हम शिखरजी में खुद जाकर वहाँ कि मिट्टी में कुत्ते की तरह लौटने लग जायें। शरीर में मिट्टी लगने से कोई सम्यग्दृष्टि नहीं हो जाता हां सम्यग्दृष्टि होने पर वे शुद्ध परमाणु जरूर अपने अंदर प्रवेश कर जाते हैं। अच्छे परमाणु पाने के लिए अच्छे परिणाम जरूरी हैं।

जब हम विषय वासनिक परिणामों में गुजरते हैं तो बहुत गंदे परमाणु शरीर में प्रवेश कर जाते हैं जब वो उदय में आते हैं तो बीमार पड़ जाते हैं।

लेकिन हम मैत्री भाव के, करुणा के, दया के परिणाम बनाते हैं तब अच्छी वर्गणाओं भरे परमाणु हम एकत्रित कर लेते हैं, जिससे शरीर में स्वस्थता, प्रसन्नता, निरोगता प्राप्त होती है। साथ में धन आदि ऐश्वर्य तो मिलता ही है। गुलामियत को स्वीकार करना या स्वतंत्रता की दहाड़ लगाना शरीराश्रित नहीं है यह आत्माश्रित है। आज कोई धन का गुलाम है, तो कोई पत्नी का, कोई पत्नि पति की, कोई किसी का है ये गुलामियत कभी भी हमें स्वतंत्र नहीं होने देगी।

चाहे भगवान राम को देखो, चाहे हनुमान को देखो, चाहे भगवान महावीर को देखो, सभी ने गुलामियत को स्वीकार नहीं किया। स्वतंत्रता को स्वीकारा आज वे स्वतंत्र हैं और सभी परतंत्रता में होने के कारण तथा स्वतंत्र होने की उत्कंठा से उनका नाम ध्यान स्मरण करते हैं। यह भी बात द्रव्य की अपेक्षा से सत्य है कि हम गुलाम व्यक्ति को स्मरण करने लगते हैं तो हम अपने आपको गुलाम महसूस करते हैं और जब हम कोई स्वतंत्र परमात्मा को स्मरण करते हैं तो हम अपने आपको स्वतंत्र और हल्का महसूस करते हैं। इसलिए हम सभी को परमात्मा का स्मरण और श्रद्धा प्रतिक्षण करना चाहिए। पुद्गलों की चाह हृदय से मिटा देनी चाहिए तभी हमारा प्रयाण स्वतंत्रता की ओर हो सकेगा।

धर्म परम्परा नहीं दुनियाँ के प्रति विद्रोह है।

Religion is not a tradition but a revolution against worldness.

संयम मंजिल पर पहुँचने की पतवार है।

Restraint is the boat (path) to reach the goal.

शांति अणुबमों में नहीं अणुव्रतों में है।

Peace does not in atom-bombs but in anuvratas